सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 02, अंक 277, नई दिल्ली । सोमवार, 16 दिसम्बर 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

अगर भाग्य पर भरोसा है तो जो तकदीर में लिखा है वही पाओगे, और अगर खुद पर भरोसा है तो जो चाहोगे वही पाओगे।

03 कल अतीत है,कल भविष्य है लेकिन आज एक उपहार है।

06 भारत के खिलाफ बड़ी साजिश

08 भारत की तिजोरी खाली कर रहा चीन

भारत में सड़क पर तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना नहीं, बल्कि लेन अनुशासनहीनता सबसे बड़ी समस्या है'

संजय बाटला

नई दिल्ली। ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय कुमार बाटला के बाद केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने भी यह बताया की लेन अनुशासनहीनता के कारण भारत में सबसे अधिक सड़क दुर्घटनाएं होती हैं।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने लेन अनुशासनहीनता के चिंताजनक मुद्दे की ओर ध्यान आकर्षित किया और इसे भारत में सड़क दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण बताया है। लोकसभा में प्रश्नकाल के दौरान बोलते हुए गडकरी ने एक व्यक्तिगत उदाहरण साझा करते हुए बताया कि मुंबई में ट्रैफिक उल्लंघन के लिए उनकी खुद की कार पर भी दो बार जुर्माना लगाया गया था। उन्होंने जोर देकर कहा कि ओवरस्पीडिंग अक्सर सुर्खियां बटोरती है। लेकिन लेन अनुशासन का पालन ना करना भारतीय सड़कों पर एक बहुत गंभीर मुद्दा है। अगर अनुशासित तरीके से ड्राइविंग की जाए तो तेज रफ्तार से गाड़ी चलाना भी खतरनाक नहीं है। जैसा कि कई विकसित देशों में देखा गया है तेज कारें सुरक्षित तरीके से चलती हैं पर लेन के इस्तेमाल जैसे बुनियादी ट्रैफिक मानदंडों की अनदेखी दुर्घटनाओं के जोखिम को बढ़ाती है। गडकरी ने बताया, ₹यह रफ्तार नहीं बल्कि अनुशासनहीन ड्राइविंग के कारण होने वाली अराजकता है जो हमारी सड़कों को खतरनाक बनाती

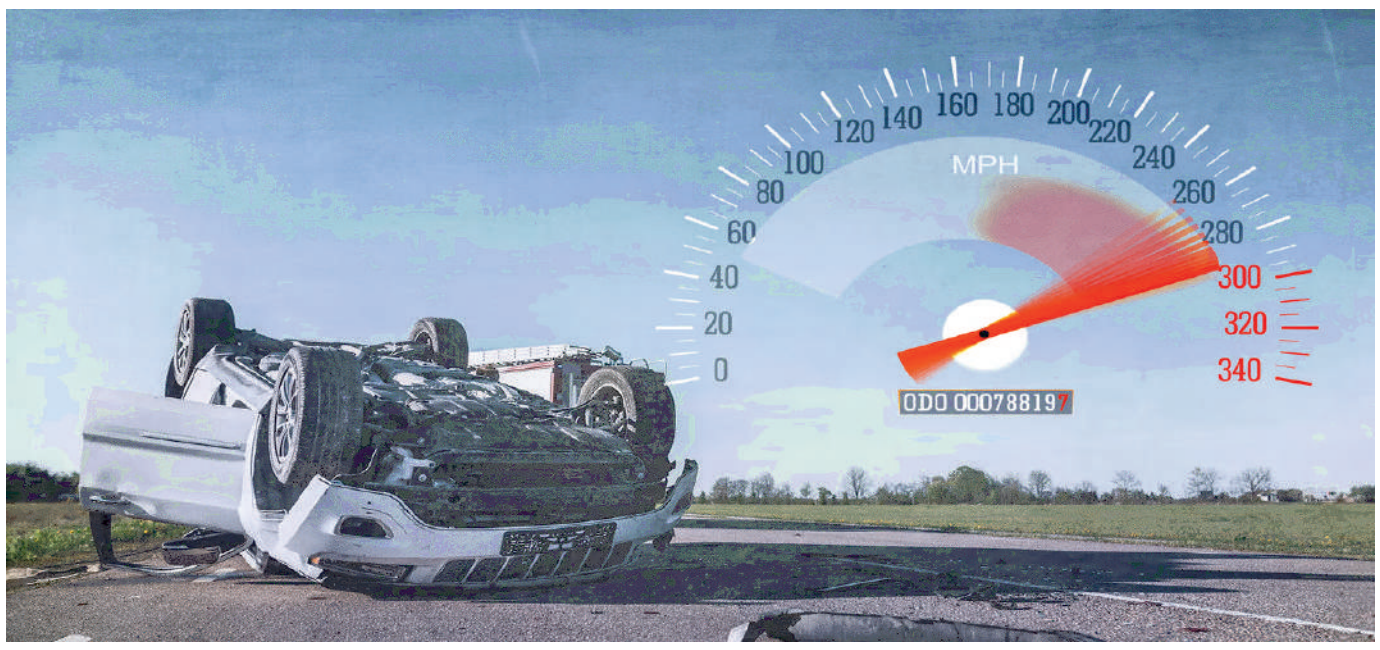

है।₹ भारतीय नागरिकों, खासकर युवा पीढ़ी को ट्रैफिक नियमों का पालन करने के महत्व के बारे में शिक्षित करने की आवश्यकता पर जोर देना सबसे अधिक आवश्यक है। उन्होंने सुझाव दिया कि कम उम्र से ही सड़क अनुशासन को बढ़ावा देने से देश की ड्राइविंग संस्कृति में काफी सुधार हो सकता है। उन्होंने कहा, ₹लंबे समय तक व्यवहार में बदलाव लाने के लिए बच्चों को भी ट्रैफिक नियमों के बारे में जागरूक किया जाना चाहिए। इस समस्या से निपटने के लिए सरकार ने उल्लंघनों की निगरानी और दंड लगाने के लिए सड़कों पर सीसीटीवी कैमरे लगाए हैं। गडकरी ने सांसदों से भी अपने निर्वाचन क्षेत्रों में सुरक्षित ड्राइविंग प्रथाओं की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए उदाहरण पेश करने और जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करने का आह्वान किया। गडकरी की टिप्पणियों में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने सड़क दुर्घटनाओं को कम करने में सांसदों की सामूहिक जिम्मेदारी पर रोशनी डाली। उन्होंने सदन के सदस्यों से लोगों को ट्रैफिक नियमों और लेन अनुशासन के जीवन-रक्षक महत्व के बारे में शिक्षित करने के लिए अपने समुदायों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ने का आग्रह किया।

लेन अनुशासनहीनताः भारत में दुर्घटनाओं का प्रमुख कारण लेन अनुशासनहीनता ही है। भारत के खतरनाक सड़क दुर्घटना आंकड़ों में प्राथमिक योगदानकर्ताओं में से एक है। रॉन्ग साइड ड्राइविंग और बिना इंडिकेटर के लेन बदलने जैसी प्रथाएं न सिर्फ नियम तोड़ने वालों को खतरे में डालती हैं बल्कि अन्य सड़क यूजर्स की सुरक्षा को भी खतरे में डालती हैं। यह व्यवहार अनावश्यक अराजकता, देरी और, दुखद रूप से, रोके जा सकने वाली मौतों का कारण बनते हैं।

ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत) और टेम्पल्स आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर एलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत) मिलकर दिल्ली में लेन ड्राइविंग के अनुशासन के प्रति जागरूकता अभियान शुरू करेगा।

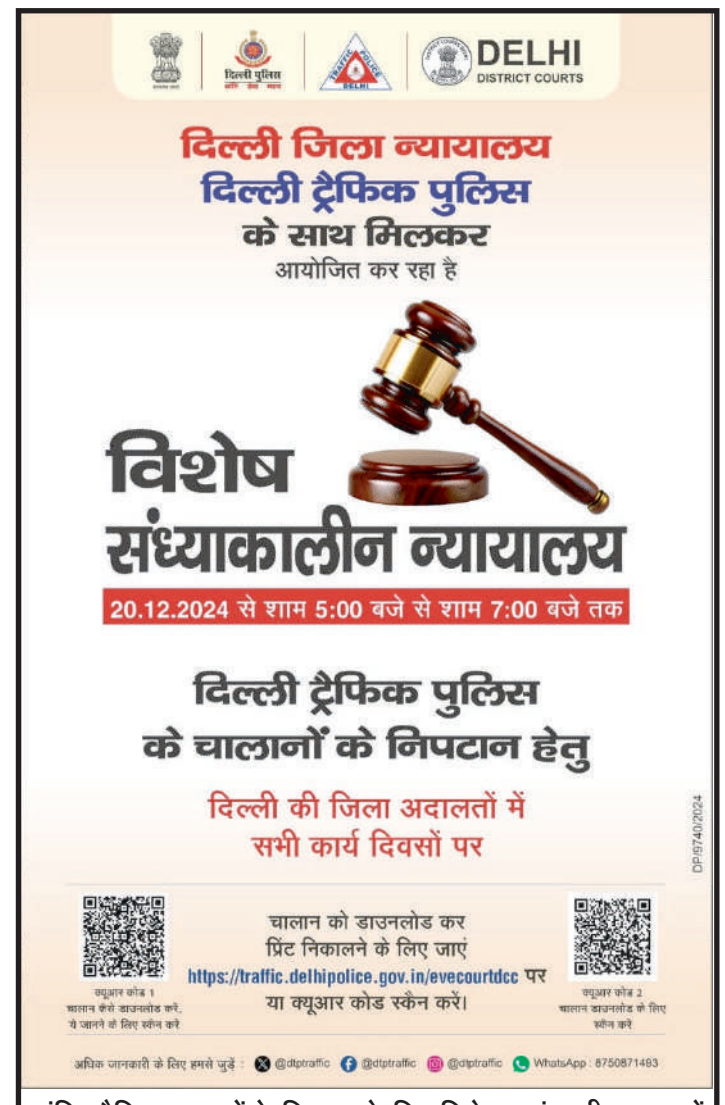

लंबित ट्रैफिक चालानों के निपटान के लिए विशेष सायंकालीन अदालतें 20 दिसंबर, 2024 से दिल्ली के जिला न्यायालयों में आयोजित की जाएंगी। ये अदालतें न्यायालय के सभी कार्य दिवसों पर शाम 5 बजे से 7 बजे तक लगेंगी। चालान प्रिंट डाउनलोड करने के लिए लिंक 16 दिसंबर, 2024 से उपलब्ध होगा।अपने लंबित चालानों के निपटान के लिए इस अवसर का लाभ अवश्य उठाएं।

दिल्ली-सहारनपुर हाईवे पर चलने वालों के लिए गुड न्यूज, बागपत ईपीई तक सफर होगा टोल फ्री

दिल्ली-सहारनपुर हाईवे पर सफर करने वालों के लिए खुशखबरी है। दिल्ली से बागपत ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे (ईपीई) तक का सफर अब टोल फ्री होगा। इसको लेकर सैद्धांतिक सहमति बन चुकी है। बागपत ईपीई से करीब 150 मीटर आगे एक टोल है जिसे पार करने के बाद ही टोल वसूली शुरू होगी। इसे दिल्ली से बागपत जाने वाले यात्रियों का टोल खर्चा बचेगा।

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली। दिल्ली-सहारनपुर हाईवे पर सफर करने वाले लोगों को जल्द ही गुड न्यूज मिल सकती है। दिल्ली-सहारनपुर हाईवे पर बागपत ईस्टर्न पेरिफेरल एक्सप्रेसवे (ईपीई) तक सफर टोल फ्री होगा। इसे लेकर सैद्धांतिक सहमति बन चुकी है।

बागपत ईपीई से करीब 150 मीटर आगे है एक टोल

इसके लिए अभी नोटिफिकेशन कर औपचारिक घोषणा होनी बाकी है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एनएचएआइ) ने एक वरिष्ठ अधिकारी ने बताया कि दिल्ली-बागपत के बीच आवागमन पर लोगों को जेब ढीली नहीं करनी होगी। बागपत ईपीई से करीब 150 मीटर आगे एक टोल है, उसे पार करने पर ही टोल वसूली शुरू होगी।

दिल्ली-सहारनपुर हाईवे पर अब किया ये काम तो कटेगा मोटा चालान, NHAI लगा रहा वीआईडीएस

वाहनों का शोर रोकने के लिए दिल्ली-सहारनपुर हाईवे पर लगेंगे साउंड बैरियर, लोगों की नींद प्रभावित होने का था खतरा

दिल्ली से बागपत ईपीई तक 32 KM का हिस्सा बनकर तैयार

भारतमाला परियोजना के तहत इस हाईवे का निर्माण किया गया है। इसका दिल्ली में एनएच-नौ अक्षरधाम मंदिर से लेकर बागपत ईपीई तक करीब 32 किलोमीटर का हिस्सा बनकर तैयार है। इसमें करीब 2450 करोड़ रुपये की लागत आई है।

पहले दिल्ली से लोनी बॉर्डर तक होना था टोल फ्री

इसी हिस्से के उद्घाटन की तैयारियां भी चल रही हैं। इसी बीच तय किया गया है कि इस हिस्से पर टोल नहीं रहेगा। पहले दिल्ली से लोनी बॉर्डर तक टोल फ्री करने का प्रविधान किया जा रहा था। लोनी से आगे टोल लगना था, इसके लिए टोल प्लाजा भी बना दिया गया था।

दिल्ली से बागपत तक सफर में नहीं होगा टोल खर्च

अब निर्णय में फेरबदल करने की तैयारी हो रही है। इससे लोगों को सहूलियत होगी कि दिल्ली से बागपत तक इस सड़क पर सुहाने सफर के लिए टोल के खर्च से बच जाएंगे। जो सहारनपुर या देहरादून जाएगा या वहां से आएगा, उसे टोल देना होगा।

निहार सकेंगे सिग्नेचर ब्रिज

राष्ट्रीय राजधानी की सीमा में इस हाईवे के 14.75 किलोमीटर के खंड में 6.5 किलोमीटर का हिस्सा एलिवेटेड है। लोग जब इस हाईवे से निकलेंगे तो सिग्नेचर ब्रिज को निहार सकेंगे।

हाईवे के 200 मीटर हिस्से में लगाए जा रहे शीशे

इसके लिए खजूरी चौक के ऊपर बने हाईवे के करीब 200 मीटर हिस्से से साउंड बैरियर हटाकर शीशे लगाए जा रहे हैं। योजना यह भी है कि जब इसका उद्घाटन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से कराया जाएगा तो वह यहां खड़े होकर आसपास के नजारे को देखेंगे। मूल परियोजना में यहां पर शीशे लगाने का प्रविधान नहीं किया गया था।

प्रमुख सचिव के विचारों से सहमत नहीं विभागीय अफसर. सिक्योरिटी से करना पड़ेगा समझौता. अहम बैठक में लगेगी अंतिम मुहर

यूपी में DL-RC के लिए लागू हो सकता है पुराना नियम; स्मार्ट की जगह मिलेंगे PVC कार्ड, जानिए क्या है तैयारी - UP DL RC RULES

परिवहन विशेष न्यूज

लखनऊ : परिवहन विभाग अब डीएल और आरसी के प्रावधानों में बदलाव करने की तैयारी में है. ये बदलाव नया नहीं, बल्कि पुराने पैटर्न पर आधारित होगा. स्मार्ट कार्ड डीएल की जगह अब लैमिनेटेड कार्ड जारी करने की बात चल रही है. आरसी भी स्मार्ट के बजाय लैमिनेटेड कार्ड वाली ही दिए जाने का विचार किया जा रहा है. हालांकि अभी तक स्मार्ट नहीं हो पाई है. विभागीय अफसर प्रमुख सचिव के विचारों से सहमत नहीं है. लिहाजा अभी इस पर अंतिम फैसला होना बाकी है.

उत्तर प्रदेश में ड्राइविंग लाइसेंस के फर्जीवाड़े से परेशान परिवहन विभाग ने साल 2013 में सिक्योरिटी से लैस स्मार्ट कार्ड ड्राइविंग लाइसेंस की व्यवस्था लागू की. जालसाजी रोकने के लिए इस कार्ड को चिप से लैस किया गया. विभाग का यह कदम सही साबित भी हुआ. 2013 के बाद से अब तक एक भी फर्जी स्मार्ट कार्ड डीएल नहीं बन पाया.

पुराने ढर्रे पर लौटने की तैयारी में परिवहन विभाग : इसी को ध्यान में रखकर वाहन स्वामियों को स्मार्ट कार्ड आरसी उपलब्ध कराने का भी प्लान बना. हालांकि ये अब तक आगे नहीं बढ़ा. इसके बाद सिक्योरिटी के मद्देनजर ही विभाग ने सभी वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन नंबर प्लेट भी लगवाई, लेकिन अब स्मार्ट कार्ड डीएल के साथ ही आरसी के मामले में विभाग पुराने ढर्रे पर वापस लौटने पर विचार कर रहा है. स्मार्ट कार्ड डीएल की जगह अब लैमिनेटेड कार्ड जारी करने की बात चल रही है. आरसी भी स्मार्ट के बजाय लैमिनेटेड कार्ड वाली ही दिए जाने का विचार है.

18 दिसंबर को होनी है बैठक.

दूसरे राज्यों में है स्मार्ट कार्ड आरसी की व्यवस्था : एक तरफ परिवहन विभाग फर्जीवाड़े से बचने के लिए दस्तावेजों की सुरक्षा पुख्ता कर रहा है, वहीं दूसरी तरफ सुरक्षा से ही खिलवाड़ करने की भी तैयारी हो रही है. ज्यादातर राज्यों में स्मार्ट कार्ड आरसी ही जारी होती है लेकिन उत्तर प्रदेश में अब स्मार्ट कार्ड आरसी का प्लान ही कैंसिल करने की तैयारी है. परिवहन विभाग के विश्वस्त सूत्र बताते हैं कि प्रमुख सचिव चाहते हैं कि स्मार्ट कार्ड डीएल के बजाय बिना चिप वाले क्यूआर कोड से लैस लैमिनेटेड डीएल हों. स्मार्ट कार्ड आरसी के बजाय पीवीसी कार्ड देने का प्लान बनाया जा रहा है. हालांकि उनके इस विचार से विभागीय अफसर ही सहमत नहीं हैं. उनका मानना है कि इससे विभाग की किरकिरी होगी. इस पर जल्द फैसला हो सकता है.

स्मार्ट कार्ड आरसी की तैयारी पर लग सकता है ब्रेक : देश के सबसे बड़े राज्य यूपी में वाहन स्वामियों को जो आरसी दी जा रही है, उसके कोई मायने नहीं हैं. यूपी को छोड़कर अन्य राज्यों में काफी समय से वाहन स्वामियों को स्मार्ट कार्ड आरसी उपलब्ध कराई जा रही है. परिवहन विभाग सिर्फ इसकी भूमिका ही बना रहा है. अभी तक स्मार्ट कार्ड आरसी दिए जाने पर बात हो भी रही थी लेकिन अब यह चर्चा है कि स्मार्ट कार्ड आरसी दी ही न जाए. बल्कि इसके स्थान पर वाहन स्वामियों को पीवीसी (पॉलीविनाइल क्लोराइड) कार्ड आरसी उपलब्ध कराया जाए.

परिवहन विभाग के अफसर सहमत नहीं.

शासन ने अफसरों से मांगा प्रस्ताव : यह आरसी क्यूआर कोड से लैस हो. शासन की तरफ से परिवहन विभाग के अधिकारियों को इस तरह का प्रस्ताव भेजने को कहा गया है. हालांकि विभागीय अधिकारी एकमत नहीं हो पा रहे हैं. उन्हें लगता है कि क्यूआर कोड से फर्जीवाड़ा बढ़ेगा. कोई भी कोड स्कैन कर आरसी की कई कई कॉपी बाहर से ही जारी कर लेगा. चालान होने पर एक आरसी जमा भी हो जाएगी तो दूसरी आरसी अपने साथ लेकर चलने लगेगा. स्मार्ट कार्ड आरसी चिप से लैस होगी जो पूरी तरह सिक्योर होगी. चिप महंगी होती है इसलिए बाहर बन पाना संभव नहीं है, क्योंकि अभी तक स्मार्ट कार्ड डीएल में फर्जीवाड़े की कहीं से भी शिकायत सामने नहीं आई है.

सरकार की मंशा पर खड़े हो सकते हैं सवाल : सूत्र बताते हैं कि शासन की मंशा स्मार्ट कार्ड आरसी

दिए जाने के बजाय पीवीसी कार्ड आरसी उपलब्ध कराने की है. वर्तमान में जो स्मार्ट कार्ड ड्राइविंग लाइसेंस बन रहे हैं उसकी जगह बिना चिप के लैमिनेटेड कार्ड ड्राइविंग लाइसेंस की बात की जा रही है. हालांकि विभागीय अधिकारियों की तरफ से प्रमुख सचिव को अवगत करा दिया गया है कि अगर स्मार्ट कार्ड डीएल के मामले में यह बदलाव किया गया तो इसमें काफी समय लग जाएगा. डीएल की पेंडेंसी बढ़ जाएगी, साथ ही पहले से लागू स्मार्ट कार्ड लाइसेंस की जगह लैमिनेटेड ड्राइविंग लाइसेंस कार्ड जारी किए जाएंगे तो इससे सरकार की मंशा पर भी सवाल खड़े होंगे.

पुराने नियम से सिक्योरिटी से करना पड़ेगा समझौता.

जब स्मार्ट डीएल-आरसी की जरूरत नहीं तो एचएसआरपी क्यों : परिवहन विभाग के सूत्रों की मानें तो प्रमुख सचिव का मानना है कि स्मार्ट कार्ड डीएल और आरसी के बजाय बिना चिप के लैमिनेटेड कार्ड डीएल और आरसी जारी हों, इन्हें क्यूआर कोड से लैस किया जाए. ऐसे में अब सवाल यह उठता है कि जब सिक्योरिटी से कोई ताल्लुक ही नहीं तो फिर सरकार ने वाहनों से पुरानी नंबर प्लेट हटाकर हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट की व्यवस्था अनिवार्य रूप से क्यों लागू की? इससे तो वाहन स्वामियों पर बोझ ही पड़ा.

एक अप्रैल 2019 से पहले के पुराने वाहनों में वाहन स्वामियों को पैसा खर्च कर हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन नंबर प्लेट लगवाना पड़ रहा है. नए वाहनों में हाई सिक्योरिटी रजिस्ट्रेशन प्लेट डीलर प्वाइंट से ही लगकर आती है. सरकार ने माना कि ये सुरक्षा से संबंधित मामला है. अब ऐसे में सवाल यही है कि जब सरकार सिक्योरिटी की बात कर रही है तो शासन में बैठे अफसर सिक्योरिटी से लैस दस्तावेजों को ही वापस फर्जीवाड़े के ट्रैक पर क्यों लाना चाहते हैं?

ट्रांसपोर्ट कमिश्नर बोले- परिवहन मंत्री के साथ होगी बैठक : उत्तर प्रदेश के ट्रांसपोर्ट कमिश्नर चंद्र भूषण सिंह का कहना है कि अभी किसी भी प्रक्रिया पर मुहर नहीं लगी है. स्मार्ट कार्ड ड्राइविंग लाइसेंस काफी सालों से जारी हो रहे हैं तो ऐसे में लैमिनेटेड कार्ड की व्यवस्था लागू करना सही होगा या नहीं, यह शासन ही बता सकता है. स्मार्ट कार्ड आरसी की जगह पीवीसी कार्ड जारी किया जाएगा, इस पर भी फैसला शासन को ही लेना है. 18 दिसंबर को परिवहन मंत्री के साथ इस संबंध में बैठक होनी है.

भगवान काल भैरव के इन फेमस मंदिरों में आप भी कर आएं दर्शन, कष्टों से मिलेगी मुक्ति

काल भैरव की पूजा न सिर्फ भारत बल्कि नेपाल, श्रीलंका और तिब्बत जैसे कई देशों में होती है। ऐसे में अगर आप भी भगवान काल भैरव की पूजा करना चाहते हैं, तो देश के सबसे फेमस और प्राचीन मंदिरों में दर्शन के लिए जा सकते हैं।

भगवान भोलेनाथ के अनेक रूप हैं, उन्हीं में से भगवान शिव का एक स्वरूप काल भैरव का है। इन्हें भगवान शिव का उग्र स्वरूप माना जाता है। बता दें कि भैरव का अर्थ भय को हरने वाला होता है। उनका यह स्वरूप काल का स्वामी और सदैव रौद्र रूप में होता है। शिव पुराण के अनुसार, ब्रह्मा, विष्णु और शिव में श्रेष्ठता को लेकर हुए विवाद के बाद काल भैरव की उत्पत्ति हुई थी। इसके साथ ही काल भैरव को दंड का पाणी भी कहा जाता है। क्योंकि वह पापियों को दंड देते हैं।

धार्मिक मान्यता है कि भगवान काल भैरव ने एक बार ब्रह्म देव के पांचवे सिर को काट दिया था। जिसकी वजह से उन पर ब्रह्म हत्या का दोष लग गया था। इस दोष से मुक्ति पाने के लिए काल भैरव ने त्रिलोक में भ्रमण किया और जब वह काशी पहुंचे तब जाकर वह पाप मुक्त हुए। काल भैरव की पूजा न सिर्फ भारत बल्कि नेपाल, श्रीलंका और तिब्बत जैसे कई देशों में होती है। ऐसे में अगर आप भी भगवान काल भैरव की पूजा करना चाहते हैं, उनकी कृपा और आशीर्वाद पाना चाहते हैं, तो देश के सबसे फेमस और प्राचीन मंदिरों में दर्शन के लिए जा सकते हैं।

काल भैरव मंदिर, उज्जैन

मध्यप्रदेश के उज्जैन में भगवान शिव का प्राचीन और फेमस ज्योतिर्लिंग है। इस ज्योतिर्लिंग का नाम महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग है। इस जगह पर भगवान शिव काल भैरव स्वरूप भी विराजते हैं। उज्जैन में स्थित काल भैरव मंदिर को राजा भद्रसेन ने शिप्रा नदी के किनारे बनवाया था। यह अष्ट भैरव में यह प्रमुख काल भैरव मंदिर है। काल भैरव 'काशी का कोतवाल' भी कहा जाता है। धार्मिक मान्यता है कि काल भैरव की अनुमति के बिना कोई भी काशी में प्रवेश नहीं कर सकता है। इसलिए काशी विश्वनाथ के दर्शन से पहले भक्त काल भैरव के मंदिर में दर्शन के लिए जाते हैं और काशी के कोतवाल से अनुमति लेते हैं।

आनंद भैरव मंदिर

आनंद भैरव मंदिर हरिद्वार में स्थित है। इस मंदिर को लेकर कई मान्यताएं हैं। धार्मिक मान्यता है कि आनंद भैरव मंदिर हरिद्वार के कोतवाल हैं। यहां श्रद्धालु अपनी परेशानियां बताते हैं और भगवान आनंद भैरव अपने भक्तों की सभी बाधाओं को दूर करते हैं। कहा जाता है कि यह मंदिर अनादि काल से हैं। इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग स्वयंभू का है। आनंद भैरव, भगवान शिव का सबसे आनंदमयी रूप है।

बाजनामठ भैरव मंदिर, जबलपुर

मध्यप्रदेश के जबलपुर में बाजना मठ मंदिर के पास महाकाल भैरव का मंदिर है। यहां पर होने वाले हवन की अग्नि में कई देवी-देवताओं की आकृति दिखती है। यह मंदिर तंत्र साधना के लिए भी जाना जाता है। बताया जाता है कि रानी दुर्गावती द्वारा गोंडवाना काल के दौरान मंदिर में प्रतिमा की स्थापना की गई थी। इस मंदिर के पुजारी के मुताबिक मंदिर परिसर में महाकाल भैरव के हवन के समय जिस भी देवता के नाम की यज्ञकुंड में आहुति दी जाती है, अग्नि में उस देवता की आकृति उबरती है। धार्मिक मान्यता है कि इस मंदिर 24 घंटे में महाकाल भैरव 52 बार रूप बदलते हैं।

राजा बटुक भैरव

बता दें कि लखनऊ के कैसरबाग में राजा बटुक भैरव मंदिर स्थित है। बताया जाता है कि इस मंदिर का इतिहास सैकड़ों साल पुराना है और इनको सुरों का राजा भी कहा जाता है। बताया जाता है कि यहां पर मांगने वाली मन्नत भी संगीत, साधना और कला से जुड़ी होती है। बटुक बाबा भगवान शिव के 5वें अवतार माने जाते हैं और यह मंदिर कला साधना का वर्षों पुराना केंद्र है।

जेड रोलर से कर रहे हैं स्किन मसाज, तो भूल से भी ना करें ये गलतियां

जेड रोलर को इस्तेमाल करने का मतलब यह नहीं है कि आप इसे किसी भी दिशा में और किसी भी तरह से रोल करेंगे। हमेशा ऊपर और बाहर की ओर रोल करें। इससे त्वचा को ऊपर लिफ्ट करने और सूजन को कम करने में मदद मिलती है।

हम सभी अपनी स्किन को हमेशा ही पैम्पर करना चाहते हैं और इसके लिए सेल्फ केयर करना सबसे अच्छा माना जाता है। जब सेल्फ स्किन केयर की बात हो तो कई टूल्स आपके बेहद काम आ सकते हैं। इन्हीं में से एक है जेड रोलर। जेड रोलर का इस्तेमाल करना आपके चेहरे को मिनी स्पा ट्रीटमेंट देने जैसा लगता है। यह आपकी स्किन को एक शांति का अहसास करवाता है और चेहरे की चमक को बरकरार रखता है। हालांकि, इसे सही तरह से करना बेहद जरूरी है। अगर आप सावधान नहीं हैं, तो यह ब्यूटी टूल फ़ायदे से ज़्यादा नुकसान कर सकता है।

मसलन, गंदी स्किन पर इस्तेमाल करने से लेकर बहुत ज़्यादा दबाव डालने तक, ऐसी कुछ आम गलतियां हैं, जिसे अक्सर लोग जेड रोलर का इस्तेमाल करते समय करते हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको जेड रोलर का इस्तेमाल करते समय की जाने वाली ऐसी ही कुछ गलतियों के बारे में बता रहे हैं, जिनसे आपको बचना चाहिए-

गंदी स्किन पर इस्तेमाल करना

अक्सर लोग बस जेड रोलर का इस्तेमाल करना शुरू कर देते हैं, लेकिन गंदी स्किन पर जेड रोलर का इस्तेमाल करना आपकी एक बड़ी गलती हो सकती है। आपको शायद अंदाजा भी ना हो, लेकिन ऐसा करने से गंदगी, तेल और मेकअप आपके पोर्स के अंदर तक जा सकता है और आपकी स्किन को नुकसान पहुंचा सकता है। इसलिए, रोलर का इस्तेमाल करने से पहले हमेशा अपना चेहरा साफ करें ताकि आपके पोर्स बंद होने या एक्ने होने की संभावना ना हो।

मॉइश्चराइजर या सीरम न लगाना

कभी भी सूखे चेहरे पर जेड रोलर का इस्तेमाल करना अच्छा नहीं माना जाता है। जेड रोलर तब सबसे अच्छा काम करते हैं जब आपने स्किन पर फेशियल ऑयल, मॉइश्चराइजर या सीरम अप्लाई किया हो। यह न केवल प्रोसेस को आसान बनाता है बल्कि प्रोडक्ट को आपकी स्किन की गहराई तक पहुंचाने में भी मदद करता है।

किसी भी दिशा में रोल करना

जेड रोलर को इस्तेमाल करने का मतलब यह नहीं है कि आप इसे किसी भी दिशा में और किसी भी तरह से रोल करेंगे। हमेशा ऊपर और बाहर की ओर रोल करें। इससे त्वचा को ऊपर लिफ्ट करने और सूजन को कम करने में मदद मिलती है। नीचे की ओर रोल करने से त्वचा खिंच सकती है और समय के साथ ढीली हो सकती है।

बहुत अधिक प्रेशर से रोल करना

जेड रोलर का इस्तेमाल करते समय की जाने वाली एक आम गलती है इसमें बहुत अधिक प्रेशर डालना। बहुत ज़्यादा दबाव डालने से आपकी त्वचा में जलन हो सकती है, खासकर अगर यह सेंसेटिव या एक्ने प्रोन है। उस चमक के लिए आपको बस हल्के, लगातार स्ट्रोक की ज़रूरत है।

ओरल हेल्थ का ख्याल रखती है इलायची, जानिए कैसे

अक्सर लोग खाने के बाद इलायची चबाना पसंद करते हैं, क्योंकि यह एक नेचुरल माउथ फ्रेशनर की तरह काम करती है। इसमें मौजूद एसेंशियल ऑयल में एंटी-माइक्रोबायल प्रोपर्टीज होती हैं, जो सांसों की बदबू के लिए जिम्मेदार बैक्टीरिया को मारती हैं।

अक्सर खाना खाने के बाद या फिर मुंह से बदबू आने पर हम इलायची का सेवन करना पसंद करते हैं। यह ना केवल मुंह से आने वाली बदबू को दूर करती है, बल्कि ओरल हेल्थ का भी ख्याल रखती है। फिर चाहे वह खराब सांसों से लड़ना हो, मसूड़ों के दर्द को शांत करना हो या आपके दांतों को कैविटी से बचाना हो, यह बेहद ही कारगर है।

इसकी एंटी-बैक्टीरियल और एंटी-इंफ्लेमेटरी प्रोपर्टीज मुंह के बैक्टीरिया को खत्म करने के साथ-साथ मसूड़ों की सूजन को कम करती है, जबकि इसका मीठा, मसालेदार स्वाद आपकी सांसों को बेहतरीन खुशबूदार बनाता है। साथ ही, इलायची चबाने से लार का उत्पादन भी बढ़ सकता है, जिससे आपका मुंह प्राकृतिक रूप से साफ रहता है। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको बता रहे हैं कि इलायची ओरल हेल्थ के लिए किस-किस तरह से फायदेमंद साबित हो सकती है-

मुंह से आने वाली बदबू करे दूर

अक्सर लोग खाने के बाद इलायची चबाना पसंद करते हैं, क्योंकि यह एक नेचुरल माउथ फ्रेशनर की तरह काम करती है। इसमें मौजूद एसेंशियल ऑयल में एंटी-माइक्रोबायल प्रोपर्टीज होती हैं, जो सांसों की बदबू के लिए जिम्मेदार बैक्टीरिया को मारती हैं। साथ ही, इसकी तेज़, मीठी खुशबू आपके मुंह को खुशबूदार बना देती है।

मुंह के बैक्टीरिया से लड़े

इलायची के नेचुरल कंपाउंड जैसे कि सिनेओल में एंटी-बैक्टीरियल प्रोपर्टीज होती हैं। वे आपके मुंह में हानिकारक बैक्टीरिया को टारगेट करके जो मसूड़ों में संक्रमण, कैविटी और अन्य दांत से जुड़ी समस्याओं को दूर करते हैं।

मसूड़ों के दर्द को करे शांत

अगर आपको मसूड़ों में सूजन महसूस हो रही है तो ऐसे में इलायची आपकी मदद कर सकती है। इसकी एंटी-इफ्लेमेटरी प्रोपर्टीज सूजन को कम करके राहत प्रदान कर सकती है। इसकी फली को धीरे से चबाने से मसूड़ों की मालिश भी होती है, जिससे ब्लड सर्कुलेशन बेहतर होता है।

रोके कैविटी

इलायची बैक्टीरिया के विकास को कम करके और आपके मुंह में पीएच को बैलेंस करके, इलायची कैविटी के जोखिम को कम कर सकती है। यह आपके लिए किसी मिनी टूथ प्रोटेक्टर से कम नहीं है।

हैवी जैकेट को बिना धोए बस 5 मिनट साफ करें, अजमाएं यह हैक

सर्दियों के समय भारी जैकेट धोना काफी मुश्किल होता है। यदि आपकी जैकेट गंदी हो जाती है और आप इसे धोना नहीं चाहते हैं, तो आप इसे आसानी से साफ करने के लिए इस सरल हैक का उपयोग कर सकते हैं।

सर्दियों में जैकेट पहनने की जरूरत लगभग हर दिन पड़ती है, लेकिन इन्हें बार-बार धोना बेहद मुश्किल होता है। वहीं, ऊनी कपड़ों को धोने से अक्सर उनके रंग फीके पड़ने की चिंता बनी रहती है और सूरज की रोशनी कम होने के कारण उन्हें सुखाने में दो से तीन दिन लग सकते हैं। इसलिए कई बार लोग जैकेट धोने से बचते हैं, जिससे यह और भी गंदगी होने लगती है। इन हैक्स के जरिए आप भी अपने विंटर वियर्स को आसानी से साफ कर सकते हैं।

विंटर जैकेट को बिना धोए कैसे साफ करें?

- आप अपनी जैकेट को खोलकर उसे समतल बिछाकर रख दें। कॉलर, बांहों और अन्य गंदे एरिया पर ध्यान केंद्रित करते हुए जैकेट पर टैल्कम पाउडर छिड़कें।

- पाउडर को गंदे स्थानों पर धीरे से रगड़ने के लिए एक पुराने टूथब्रश का इस्तेमाल करें। इससे गंदगी हटाने में मदद मिलेगी, जो पाउडर के साथ निकल जाएगी।

- इसके बाद, एक तौलिये या पुराने कपड़े को हल्का गीला करें और अच्छी तरह से निचोड़ लें। पूरे जैकेट को कपड़े से पोंछें, इस बात का ध्यान रखें कि जैकेट को भीगने से बचाने के लिए यह बहुत गीला न हो। इस प्रक्रिया के दौरान जैकेट पर लगी गंदगी पाउडर की मदद से कपड़े पर चिपक जाएगी, जिससे जैकेट साफ हो जाएगी।

- जैकेट पोंछने के बाद आप देखेंगे कि, जैकेट से आने वाली अप्रिय गंध भी दूर हो गई है। आपकी जैकेट साफ हो जाएगी और बिना धोने की आवश्यकता के दोबारा पहनने के लिए तैयार हो जाएगी।

आखिर सोना कब और किसे पहनना चाहिए? जाने गोल्ड कैसे धारण करें

दिव्यांशी भदौरिया

ज्योतिष में सोना को धारण करने के लिए कई नियम बताए गए है, जिन्हें पालन करना भी आवश्यक होता है। अगर सोना को सही विधि से और सही तरीके से धारण करने से कई लाभ प्राप्त होते हैं। आइए आपको बताते हैं कैसे सोने को धारण करना चाहिए।

ज्योतिष शास्त्र में सोने को धारण करने के लिए कुछ नियम बताए गए हैं। सोना सुनहरे रंग का धातु है। रत्न शास्त्र में बताया गया है कि, सोना धारण करने से गुरु ग्रह को मजबूत किया जा सकता है। जातकों को कुंडली में ग्रहों की स्थिति और राशि के अनुसार रत्न को धारण करना चाहिए। ज्योतिष में सोने को पहनने के लिए कुछ नियम बताए गए हैं, जिन्हें पालन करना काफी जरुरी है। सोने का सही विधि और सही तरीके से धारण करने से लाभ प्राप्त होता है। सोने के धारण से करने से धन-लाभ व संतान सुख की प्राप्ति होती है। आइए आपको बताते हैं सोने को कब और कैसे धारण करना आवश्य होता है।

कब सोना धारण करना चाहिए?

सोने का गुरु से संबंधित होने के कारण सोना को गुरुवार के दिन धारण करना शुभ माना जाता है। इसे पहनने से पहले शुद्ध करना जरुरी है।

सोना को कैसे करें धारण?

आप चाहे तो सोना को अंगूठी या चेन के रुप में धारण से कर सकते हैं। सोने को शुद्धि करने के लिए आप गंगाजल, दूध और शहद से शुद्ध करें। फिर इसे आप भगवान विष्णु के चरणों में अर्पित कर दें। विधि-विधान से पूजा करने के बाद अंगूठी और चेन को पहन सकते हैं। माना जाता है कि, रविवार, बुधवार, गुरुवार और शुक्रवार के दिन सोना धारण करना शुभ होता है।

सोना किसे पहनना चाहिए?

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, सोने का धारण मेष, कर्क, सिंह, धनु और मीन राशि के लोगों को धारण करना चाहिए। वहीं, मकर, मिथुन, कुंभ और वृषभ राशि के जातकों को सोना नहीं पहनना चाहिए। इसके साथ ही कुंडली में गुरु की स्थिति देखकर ही सोना का धारण करना चाहिए। जिन लोगों को पेट व मोटापे से संबंधित समस्याओं में सोना धारण करने से बचना चाहिए। जब आप सोना धारण करें तो पहले आपको अपने ग्रहों की स्थिति जरुर देखनी चाहिए। वहीं, ज्योतिष की सलाह जरुर लें।

वार्डरोब के लिए इस तरह तैयार करें हैंगिंग आर्गेनाइजर

मिताली जैन

यूं तो आपको मार्केट में कई तरह के आर्गेनाइजर मिल जाएंगे, लेकिन आपको उन सभी पर पैसे वेस्ट करने की जरूरत नहीं है। आप खुद घर पर ही इन हैंगिंग आर्गेनाइजर को बना सकती हैं और अपने वार्डरोब के स्पेस को मैनेज कर सकती हैं।

क्या आपका वार्डरोब छोटा है? क्या आपके वार्डरोब में आपकी जरूरत का सारा सामान नहीं आता? क्या आप नया वार्डरोब खरीदकर अतिरिक्त पैसे खर्च नहीं करना चाहते? अगर इन सभी सवालों का जवाब हां है तो अब वक्त आ गया है कि आप अपने मौजूदा वार्डरोब के ही स्पेस को मैक्सिमाइज करें। इसके लिए हैंगिंग आर्गेनाइजर की मदद ली जा सकती है और आप इसे बेहद आसानी से घर पर ही बना सकते हैं। ये ना केवल बजट फ्रेंडली है, बल्कि बनाने में भी आसान हैं और साथ ही साथ, ये आपके वार्डरोब को साफ-सुथरा और आर्गेनाइज्ड रखते हैं।

यूं तो आपको मार्केट में कई तरह के आर्गेनाइजर मिल जाएंगे, लेकिन आपको उन सभी पर पैसे वेस्ट करने की जरूरत नहीं है। आप खुद घर पर ही इन हैंगिंग आर्गेनाइजर को बना सकती हैं और अपने वार्डरोब के स्पेस को मैनेज कर सकती हैं। तो चलिए आज इस लेख में हम आपको हैंगिंग आर्गेनाइजर बनाने के आसान तरीके के बारे में बता रहे हैं-

इसे भी पढ़ें: Hair Care Tips: जड़ी-बूटियों से बना ये घोल लगाने से 6 महीने तक काले रहेंगे बाल, असर देख आप भी रह जाएंगे हैरान

पुराना स्कार्फ़ या फ़ैब्रिक से बनाएं आर्गेनाइजर

क्या आपके पास कोई पुराना स्कार्फ़ या फ़ैब्रिक है तो आप इसकी मदद से भी मल्टी-पॉकेट हैंगिंग आर्गेनाइजर बनाकर इस्तेमाल कर सकती हैं।

आवश्यक सामग्री-

एक मज़बूत स्कार्फ़ या कोई फ़ैब्रिक,
एक सिलाई किट या ग्लू गन
एक हैंगर

कैसे **बनाएं-**

पॉकेट बनाने के लिए फ़ैब्रिक को कई हिस्सों में मोड़ें।
किनारों को सिल लें या फिर ग्लू की मदद से चिपकाएं।
हर पॉकेट के लिए ऊपर का हिस्सा खुला छोड़ दें।
फ़ैब्रिक को हैंगर से जोड़ें।
बेल्ट, मोज़े या टाई जैसी छोटी एक्सेसरीज़ को स्टोर करने के लिए इसका इस्तेमाल बेहद ही आसानी से किया जा सकता है।

जींस की मदद से बनाएं आर्गेनाइजर

अगर आपकी जींस पुरानी व बेकार हो गई है तो उसे फेंकने की जगह आप हैंगिंग आर्गेनाइजर बनाकर इस्तेमाल करें।

आवश्यक सामग्री

एक पुरानी जींस
कैंची
सुई और धागा
एक हैंगर

कैसे बनाएं-

अपनी जींस के पीछे की जेब वाले हिस्से को काटें।
मज़बूत कपड़े के एक टुकड़े पर कई पॉकेट सिलें।
कपड़े को एक हैंगर से जोड़ें और इसे अपनी वॉर्डरोब में हैंग कर दें।

दिल्ली में कितने सुरक्षित हैं लोग? लूट और झपटमारी की घटनाओं को लेकर आई ताजा रिपोर्ट

राजधानी दिल्ली में लोग कितने सुरक्षित हैं। इसको लेकर एक ताजा रिपोर्ट सामने आई है। पुलिस की ओर से बताया गया कि दिल्ली में लूट और झपटमारी की घटनाओं में कमी आई है। बताया गया कि पहले कई जगहों पर नशेड़ियों का जमावड़ा लगा रहता था। अब पुलिस की कार्रवाई से नशेड़ियों का जमावड़ा लगना बंद हो गया है। आगे विस्तार से पढ़िए।

नई दिल्ली। मध्य जिला पुलिस की ओर से उठाए गए कई कारगर कदम से पिछले साल की तुलना में इस साल सड़कों पर होने वाले अपराध लूटपाट व झपटमारी समेत कई संगीन आपराधिक मामलों में कमी दर्ज की गई है।

नशेड़ियों का रहता था जमावड़ा

वहीं, जिला पुलिस की ओर से चलाए गए सबसे कारगर अभियान जेल-जमानत व घोषित अपराधी (बीसी) के सत्यापन को माना जा रहा है, जिससे जिले में संगीन आपराधिक वारदात में कमी आई। मध्य जिले में कई बड़े-बड़े व्यापारिक क्षेत्र होने के कारण यहां नशेड़ियों का जमावड़ा रहता था, जो राहगीरों से लूटपाट व झपटमारी कर उन्हें शिकार बनाते थे।

लूटपाट में 25 प्रतिशत की कमी आई

बताया गया कि हत्या, मानव व ड्रग्स तस्करी के अलावा तेजाब फेंकने जैसे संगीन मामलों में शामिल लंबे समय से फरार कई आरोपितों को जिला पुलिस ने दबोच कर जेल भेजने का काम किया। कई तरह के कारगर कदम उठाने के कारण मध्य जिले में इस साल पिछले साल की तुलना में झपटमारी की पीसीआर कॉल में 43.27 व लूटपाट में 25 प्रतिशत की कमी आई। वाहन चोरी भी हर जिले की बड़ी समस्या है।

शुरू किए गए कई तरह के अभियान

मध्य जिले में वाहन चोरी के मामले में भी काफी कमी आई है। मध्य जिले के डीसीपी एम हर्ष बर्धन का कहना है कि विशेष आयुक्त कानून-व्यवस्था रवींद्र सिंह यादव के निर्देश पर जिले में साल भर कई तरह के अभियान की शुरुआत की गई। रणनीति के तहत जनवरी में दो अलग-अलग अभियान की शुरुआत की गई, जिनमें जेल-जमानत, सत्यापन और बीसी की जांच शामिल है।

अभियान के दौरान 2023 और 2024 में जेल से जमानत व पैरोल आदि पर बाहर आने वाले हर शख्स पर संबंधित थानों के बीट आफिसर नियमित तौर पर नजर रखने का काम किया। उनकी आजीविका के

स्रोत, परिवहन के साधन, मोबाइल नंबर, सोशल मीडिया अकाउंट, सहयोगियों, उनके रहने के वर्तमान स्थान आदि के बारे में विशेष निगरानी रखी गई।

विशेष ब्रीफिंग की जाती रही

इसी तरह घोषित अपराधी (बीसी) पर भी पुलिस की पैनी नजर रही। इस क्रम में जिनकी गतिविधि संदिग्ध पाई गई, उनके विरुद्ध आवश्यक निरोधात्मक कार्रवाई की गई। मुकदमे की जांच करने वाले अधिकारियों की समय-समय पर विशेष ब्रीफिंग की जाती रही, जहां उन्हें गुणवत्तापरक साक्ष्य जुटाने के बारे में जागरूक किया जाता रहा।

अपराध करने के दौरान पहने गए कपड़ों की जब्ती, छीने गए सामानों की बरामदगी व पीड़ितों से आरोपितों का टीआईपी कराने के उचित प्रयास किए गए, ताकि अदालत में केस की मजबूत पैरवी कर आरोपितों को सख्त सजा दिलाई जा सके। मध्य जिले में आने वाली सभी सड़कों व गलियों में सीसीटीवी कैमरे लगाए गए।

ये पैरोल जंपर पकड़े गए

हत्या के मामले में छह साल से फरार आरोपित सम्मी को पकड़ा

हत्या के मामले में नौ साल से फरार रोहित कुमार दूबे को पकड़ा

हत्या के मामले में एक साल से फरार सुनील को पकड़ा

हत्या व लूटपाट के मामले में 15 साल से फरार संजय को पकड़ा

मानव तस्करी के मामले में 16 साल से फरार सोनू को पकड़ा

ड्रग्स तस्करी के मामले में 26 साल से फरार अशोक कुमार यादव को दिल्ली पुलिस ने दबोचा

एसिट अटैक के मामले में 15 साल से फरार जगदीश को पकड़ा

हत्या के मामले में दो माह से फरार प्रवीण कोहली को पकड़ा

पिछले साल की तुलना में इस साल झपटमारी की पीसीआर कॉल में 43.27 व लूटपाट में आई 25 प्रतिशत की कमी

हत्या, मानव व ड्रग्स तस्करी के अलावा तेजाब फेंकने जैसे संगीन मामलों में वर्षों से फरार दर्जनों आरोपितों को जिला पुलिस ने दबोचा

दिल्ली से कूड़ा बीनने वाले गायब, सीमा से लगे राज्यों में भागने की आशंका; अब तक पकड़े गए 6 बांग्लादेशी घुसपैठिये

बांग्लादेशी घुसपैठियों के खिलाफ दिल्ली पुलिस का अभियान जारी है। पुलिस को संदेह है कि कई संदिग्ध नोएडा ग्रेटर नोएडा गाजियाबाद गुरुग्राम आदि जगहों पर अपने रिश्तेदारों या परिचितों के यहां पहुंच गए हैं। पुलिस जल्द ही पड़ोसी राज्यों की पुलिस से भी संपर्क करेगी। इस साल अब तक दिल्ली में छह बांग्लादेशी घुसपैठिये पकड़े जा चुके हैं।

दिल्ली। बांग्लादेशी घुसपैठियों को लेकर कई इलाकों में दक्षिणी पूर्वी जिला पुलिस का अभियान जारी है। गलियों, सड़कों के साथ ही ढलावघरों के आसपास कचरा बीनकर गुजारा करने वाले अब नजर नहीं आ रहे।

पुलिस से बचने के लिए इनके नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद, गुरुग्राम आदि जगहों पर अपने रिश्तेदारों या परिचितों के यहां पहुंचने की आशंका जताई जा रही है।

पुलिस के पास ऐसे कई संदिग्धों को रिकॉर्ड भी हैं, पर पूछताछ या सत्यापन के लिए अब वे संपर्क में ही नहीं हैं। दक्षिणी पूर्वी जिला पुलिस इनके सत्यापन के लिए जल्द ही पड़ोसी राज्यों की पुलिस से भी संपर्क करेगी।

दिल्ली के इन इलाकों में हैं कई झुग्गियां

कालिंदी कुंज, शाहीनबाग, मदनपुर खादर, निजामुद्दीन इलाकों नालों के किनारों या खाली पड़ी जगहों पर तिरपाल डालकर कई झुग्गियां आबाद हैं। छिटपुट संख्या में दर्जनों जगहों पर बसी इस आबादी का सत्यापन करना पुलिस के लिए चुनौती है। हालांकि इनमें ज्यादातर यूपी-बिहार या बंगाल से संबंध रखते हैं, पर इनके बीच कई संदिग्ध ऐसे भी हैं, जिनके पास वैध पहचान पत्र तक नहीं है।

एलजी ने दिया था अभियान चलाने का निर्देश

बांग्लादेशियों की पहचान के लिए उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने पुलिस को वृहद अभियान चलाने का निर्देश दिया था। पुलिस लगातार सत्यापन कर रही है। अभियान शुरू होने के बाद से इन इलाकों से कूड़ा बीनने वाले अचानक गायब हो गए है, जिससे उनकी नागरिकता पर संदेह होने लगा है।

पकड़े गए दोनों बांग्लादेशी घुसपैठिये भी बीनते थे कूड़ा

पुलिस उपायुक्त रवि कुमार सिंह के मुताबिक पकड़े गए दोनों घुसपैठियों में से एक अब्दुल अहद ने बताया कि वह बांग्लादेश में मजदूर था। एक बांग्लादेशी एजेंट की मदद से भारत में दाखिल हुआ।

वह काम की तलाश में आया था। फिलहाल कचरा बीनने का काम कर रहा था। वहीं, दूसरे आरोपित मोहम्मद अजीजुल ने बताया कि दिल्ली में किसी एक जगह नहीं बल्कि अलग-अलग जगह कबाड़ बीनना था, जिसे पुलिस न पकड़ सके।

इस साल पकड़े जा चुके हैं छह बांग्लादेशी घुसपैठिये

जिला पुलिस ने इस साल छह बांग्लादेशी घुसपैठियों को पकड़ा है। यह कालिंदी कुंज, मदनपुर खादर, शाहीन बाग व यमुना खादर में अवैध रूप से रह रहे थे। इसके अलावा अवैध रूप से भारत में रह रहे दो अन्य विदेशियों को भी पकड़ा। पुलिस ने इस साल करीब 916 संदिग्ध व्यक्तियों की जांच की। उनके पहचान संबंधी दस्तावेजों को जांच के लिए भेजा गया है। अभी भी पुलिस का विशेष अभियान जारी है।

कौन हैं वो 14 विधायक? जिन्हें पार्टी ने चौथी बार मैदान में उतारा

आम आदमी पार्टी (आप) ने दिल्ली चुनाव के लिए उम्मीदवारों की आखिरी लिस्ट में चौथी बार अपने 14 विधायकों पर भरोसा जताया है। विधायकों की बड़ी संख्या में और टिकट कट जाने की अटकलों को विराम लगाते हुए आप ने रविवार को बची हुई सभी 38 सीटों पर प्रत्याशी घोषित कर दिए। अरविंद केजरीवाल अपनी पारंपरिक नई दिल्ली सीट से चुनाव लड़ेंगे तो सीएम आतिशी कालकाजी से चुनाव लड़ेंगी।

नई दिल्ली। आम आदमी पार्टी (आप) ने दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए चौथी बार अपने 14 विधायकों पर दांव लगाया है। इसमें पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल, पूर्व उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया सहित सोमनाथ भारती व अखिलेश पति त्रिपाठी आदि का नाम प्रमुख रूप से शामिल है।

AAP के लिए इस बार सबसे कठिन चुनाव

आम आदमी पार्टी को लेकर इस विधानसभा चुनाव की बात करें तो उसके लिए यह चुनाव अभी तक का सबसे कठिन चुनाव माना जा रहा है। यह चुनाव ऐसे समय में हो रहा है जब आपके प्रमुख वरिष्ठ नेता भ्रष्टाचार के आरोप में महीनों तक जेल में रह कर आए हैं। आबकारी घोटाला मामले से लेकर मनी लॉन्ड्रिंग के मामले तक में अरविंद केजरीवाल से लेकर मनीष सिसोदिया सत्येंद्र जैन और आप नेता संजय सिंह और उनके अन्य सहयोगी भी महीनों तक जेल में रहे हैं। यहां तक कि जेल से बाहर आने के बाद अरविंद केजरीवाल ने यह कहकर मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा दे दिया था कि अगर जनता उन्हें फिर से मुख्यमंत्री चुनकर भेजेगी तभी वह मुख्यमंत्री बनेंगे।

55 से कम सीटें आई तो BJP नहीं बनने देगी सरकार- केजरीवाल

ऐसी हालत में इस चुनाव में आप संयोजक केजरीवाल की प्रतिष्ठा भी दांव पर लगी हुई है। हालांकि आप हर मंच से यह बात कहती है कि उनकी नेताओं को झूठे मामले में जेल भेजा गया था, खुद अरविंद केजरीवाल और सिसोदिया भी जेल भेजे जाने को एक बड़ी साजिश करार देते हैं।

यहां केजरीवाल यह बात भी बार-बार दोहरा चुके हैं कि अगर 55 से कम सीटें आईं तो भारतीय जनता पार्टी उनकी सरकार नहीं बनने देगी। ऐसे में उनका लक्ष्य 55 से अधिक सीटों के साथ सत्ता में लौटना है।

आखिरी लिस्ट में पुरानों पर भरोसा

विधानसभा चुनाव को लेकर आम आदमी पार्टी ने टिकट बंटवारे में जिस तरह से अपने विधायकों के पहली और दूसरी सूची में काट दिए थे उससे यह अनुमान लगाया जा रहा था कि चौथी सूची और अंतिम सूची में भी आम आदमी पार्टी अपने विधायकों के बड़ी संख्या में टिकट कटेगी, मगर ऐसा इस सूची में नहीं दिखाई दिया। सबसे खास बात यह है कि आप ने अपने 14 विधायकों पर चौथी बार दांव लगाया है।

इन 14 विधायकों पर चौथी बार दांव

मादीपुर से चुनाव मैदान में उतरीं राखी बिड़ला

माडल टाउन सीट से अखिलेश पति त्रिपाठी

नई दिल्ली सीट से अरविंद केजरीवाल

जंगपुरा से चुनावी मैदान में उतरे मनीष सिसोदिया

सदर पहाड़गंज से सोम दत्त

तिलक नगर सीट से जरनैल सिंह

ग्रेटर कैलाश सीट से सौरभ भारद्वाज

शालीमार बाग से बंदना कुमारी

संगम विहार से दिनेश मोहनिया

बादली से अजेश यादव

शकूरपुर बस्ती से सत्येंद्र जैन

मानवीय नगर से सोमनाथ भारती

बुराड़ी से संजीव झा

करोलबाग से विशेष रवि।

आखिर क्यों मजबूत हो रहीं हैं सांस्कृतिक प्रदूषण की जड़ें ?

इंटरनेट, कंप्यूटर, लैपटॉप, सोशल नेटवर्किंग साइट्स और एंड्रॉयड मोबाइल के बढ़ते चलन ने देश में डिजिटल क्रांति को जन्म दिया है। देश की आम जनता आज डिजिटल क्रांति का जमकर लुत्फ उठा रही है। आज आम आदमी द्वारा इंटरनेट का उपयोग किया जा रहा है और जमकर रील्स पर रील्स बनाई जा रही हैं। वास्तव में आज रील्स का उपयोग मुख्य रूप से देश के युवाओं द्वारा रचनात्मक और विशेष रूप से मनोरंजक सामग्री के लिए किया जा रहा है, और वे समाज में प्रचलित व्यापक सांस्कृतिक मानदंडों और सामाजिक रुझानों, समाज में घटने वाली घटनाओं आदि को प्रतिबिंबित करते हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि आज के संचार क्रांति/डिजिटल क्रांति के इस युग में रील्स समाज के दर्पण के रूप में साबित हो रहीं हैं। आज जो समाज में घटित हो रहा है, रील्स के माध्यम से आम आदमी, इस समाज , इस देश के समक्ष आ रहा है। आज हमारे देश के युवा

फेसबुक और इंस्टाग्राम रील्स के डिजिटल कंटेंट के निर्माण कर रहे हैं, यह ठीक है कि आज वे इनका उपयोग करके विभिन्न सामाजिक कारणों के लिए खड़े हो रहे हैं, अपनी रचनात्मकता (क्रिएटिविटी) आमजन को दिखा रहे हैं और लोगों का भरपूर मनोरंजन भी कर रहे हैं। वास्तव में यह विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को अपनी आवाज़ उठाने के अवसर भी प्रदान कर रहा है, लेकिन आज फेसबुक, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब पर ऐसे ऐसे विडियोज, कंटेंट/सामग्री प्रस्तुत की जा रही है, जिससे हमारे देश की सनातन संस्कृति, हमारे संस्कारों, हमारे नैतिक मूल्यों, आदर्शों, विभिन्न सामाजिक प्रतिमानों पर व्यापक और विपरीत असर पड़ रहा है। डिजिटल क्रांति का आज दुरूपयोग किया जा रहा है और यह देखने में आया है कि आज बहुत से लोग नेम एंड फेम, पैसा कमाने के चक्कर में इन डिजिटल माध्यमों पर सांस्कृतिक प्रदूषण फैला रहे हैं। कहना ग़लत नहीं होगा कि

सांस्कृतिक प्रदूषण को सामाजिक सीमा उल्लंघनों की प्रतिक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है। यहां यह उल्लेखनीय है कि सांस्कृतिक प्रदूषण मानव समाज में सबसे अधिक विनाशकारी है, क्योंकि यह हमारी अच्छी जीवनशैली से खराब जीवनशैली में बदलाव के परिणामस्वरूप होता है। वास्तव में, सांस्कृतिक प्रदूषण एक ऐसी समस्या है जो हमारे समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे को प्रभावित करती है। आज हमारी युवा पीढ़ी पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति का लगातार अनुशरण कर रही है और भारतीय संस्कृति-संस्कारों को युवा पीढ़ी ने भुला सा दिया है। सच तो यह है कि आजकल युवा पीढ़ी के मन में भारतीय विद्वानों का उतना आदर नहीं है, जितना बाहरी विद्वानों का। यह विडम्बना ही है कि जब विवेकानंद को अमेरिका में मान्यता मिली, उसके बाद ही भारत के इस व्यक्ति के प्रति लोगों का आदर बढ़ा।

सच तो यह है कि आज भारतीय समाज का परिदृश्य पहले की तुलना में पूरी तरह बदल चुका है। भारत की युवा पीढ़ी पश्चिमी सभ्यता(रहन-सहन, खान-पान, सैलून, फैशन, आधुनिक मोबाइल-टीवी संस्कृति व पब संस्कृति)का अंधाधुंध अनुकरण करने में कोई चूक नहीं कर रही है। आज भारतीय युवा पीढ़ी विदेशी फैशन, आधुनिक सूटेड-बूटेड संस्कृति, विदेशी संगीत सुनना, विदेशी भोजन, विदेशी वाहन जैसे युवाओं के प्राइड का प्रतीक बन गए हैं। भारतीय सनातन संस्कृति का सादा जीवन, उच्च विचार आज की युवा पीढ़ी को जैसे रास नहीं आ रहा है। यह ठीक है कि समय के साथ चलना आज की आवश्यकता हो गया है लेकिन आखिर किस हद तक ? क्या हम हमारी सनातन संस्कृति, परंपराओं, हमारी नैतिकता, हमारे आदर्शों और संस्कारों को भुला दें ? वास्तव में,पश्चिमी सभ्यता-संस्कृति की अच्छाइयों का अनुकरण करने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन अनुकरण के नाम पर हम अपनी संस्कृति को आखिर कैसे और क्योंकर भुला सकते हैं ? आज पश्चिमी देशों की नकल करके हम लोग फूहड़ और लज्जाहीन होते चले जा रहे हैं। भारतीय सनातन संस्कृति में शालीनता को स्थान दिया गया है, संस्कारों को, नैतिकता को, अनुशासन को, सादा जीवन उच्च विचार को स्थान दिया गया है। आज पाश्चात्य संस्कृति को आत्मसात करके हम अपने रीति-रिवाजों और श्रेष्ठ परम्पराओं को लगातार नष्ट करते जा रहे हैं। शायद यही कारण है कि आज हमारे समाज में अपराध, अशिष्टता, अश्लीलता, पारिवारिक विघटन आदि उत्पन्न हो रहे हैं। हमारी युवा पीढ़ी को यह बात अपने जेहन में रखनी चाहिए कि हमारी भारतीय संस्कृति दुनिया की सबसे पुरानी और समृद्ध संस्कृतियों में से एक है और हमारे रीति-रिवाज, हमारी परंपराएं, हमारी कला, वास्तुकला, अनुष्ठान, हमारे देश की अनेकता में एकता, हमारे देश का सांस्कृतिक इतिहास बहुत ही पुराना है। आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से हमारे गांव शहरों में बदल रहे हैं,पाश्चात्य संस्कृति के परिणामस्वरूप जाति, संयुक्त परिवार, विवाह और अन्य सामाजिक संरचनाएं भी कहीं न कहीं प्रभावित हुईं हैं। पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति के कारण आज अंग्रेजी शिक्षा का प्रभाव बढ़ा है। हमारी पोशाक और खान-पान की आदतों में आज व्यापक परिवर्तन आए हैं। आज हमारे रीति-रिवाजों, परंपराओं, संस्कारों आदि में बहुत गिरावट आई है। धन और संपदा यानी कि आज के समय पदार्थवादी दृष्टिकोण जन्म ले चुका है।डैडी, मम्मी, हाय-हैलो, बाय-बाय, टाटा संस्कृति , केक काटना जैसी संस्कृति जन्म ले चुकी है, अंग्रेजी का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है, हमारी मातृभाषा को हम भुलाते चले जा रहे हैं। हम अंग्रेजी में खुद को आज बहुत सहज लेकिन अपनी मातृभाषा में खुद को असहज महसूस करने लगे हैं। समय के साथ, हमारी भारतीय संस्कृति में जन्मदिन या किसी खुशी के अवसर पर जो दीया(दीपक) जलाने की भारतीय परंपरा थी, आज शनैःशनैः न जाने कहां खो गई है ? आज हमारी युवा पीढ़ी पर पाश्चात्य नृत्य-संगीत हावी है और मोमबत्ती की रौशनी बुझाने की पश्चिमी परंपरा में हम स्वयं को कहीं अधिक आनंदित व खुशनसीब महसूस करते हैं। शराब पीना, जुआ खेलना, मांस खाना आज जैसे फैशन हो गया है। कहना ग़लत नहीं होगा कि हमारे सामाजिक परिवेश में, हमारे विभिन्न क्षेत्रों में, हमारे देश में आज सांस्कृतिक प्रदूषण की दर लगातार बढ़ रही है। पिछले कुछ दशकों के दौरान व्यक्तिगत रुचि, हमारी भाषा, हमारे व्यवहार, हमारे पहनावे और तौर-तरीके सभी बेहद खराब हो गए हैं। आज हम पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण करके अश्लीलता और असभ्यता की संस्कृति में डूबते चले जा रहे हैं और हम पर टीवी, मोबाइल,पब संस्कृति, पदार्थवादी दृष्टिकोण का गहरा प्रभाव है। पाश्चात्य सभ्यता-संस्कृति के फूहड़पन, अश्लीलता, खुलेपन ने कहीं न कहीं हमारी सनातन संस्कृति की नींव को कमजोर किया है और इसके विभिन्न संस्थानों को नुकसान पहुंचाया है। आज रील्स बनाकर अश्लीलता फैलाई जा रही है। सोशल मीडिया पर रील्स वायरल करने के चक्कर में ऐसी-ऐसी रील्स बनाई जा रही हैं कि उन्हें घर-परिवार के साथ बैठकर नहीं देखा जा सकता है। बालीवुड,हालीवुड में ऐसा फिल्मों में भी जमकर हो रहा है। युवा पीढ़ी में रील्स बनाने का उन्हें वायरल करने का जैसा बुखार सा चढ़ा है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर आज विशेषकर इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब पर अश्लीलता की सारी हदें पार की जा रही हैं। सड़कों, गली-गली, मोहल्ले-मोहल्ले,माल्स और बाजार जहां जी चाहे, वहीं अश्लीलता परोसी जा रही है। सच तो यह है कि आज मनुष्य अपने जीवन यापन के लिए अनेक अनैतिक एवं असामाजिक कार्यों की ओर लगातार अग्रसर होता चला जा रहा है। न कहीं नैतिकता बची है और न ही अनुशासन।

आज हमारा देश पाश्चात्यता एवं आधुनिकीकरण के ऐसे कुचक्र में फंस गया कि उसका परिणाम सांस्कृतिक प्रदूषण के रूप में लगातार दृष्टिगत हो रहा है। उसकी जड़े इतनी पनप गई कि मनुष्य उस बुराई से दूर नहीं जा पा रहा है। बहरहाल, वास्तव में यहां यह कहना ग़लत नहीं होगा कि जब भारत के लोगों को यह महसूस हुआ कि वे पश्चिमी सभ्यता के लोगों की तुलना में आर्थिक और औद्योगिक रूप से कहीं अधिक पिछड़े हुए हैं, तो भारतीयों ने पश्चिमी सभ्यता की अच्छाइयों के साथ-साथ उनकी अनेक बुराइयों को भी अपना लिया। पश्चिमी सभ्यता के लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रत्येक रीति-रिवाज को आंख मूंदकर अपनाया जाने लगा और भारतीय अपनी संस्कृति को भुला बैठे। बहरहाल, कहना ग़लत नहीं होगा कि आज हम अध्यात्म के मार्ग से लगातार विमुख होकर पदार्थ की ओर अग्रसर हो रहे हैं। अतः हमें यह चाहिए कि हम समय रहते हमारी युवा पीढ़ी में अपनी संस्कृति और अपने इतिहास के प्रति सम्मान की भावना विकसित करें, तभी इस देश को सांस्कृतिक प्रदूषण के दुष्प्रभावों से बचाया जा सकता है। वास्तव में हमारी युवा पीढ़ी इस समाज और इस देश की भावी कर्णधार है अतः उन्हें इस बात का पूर्ण अहसास दिलाना आवश्यक है कि संस्कृति किसी भी देश की असली निधि व धरोहर होती है। संस्कृति से व्यक्ति और व्यक्ति से समाज, और समाज से राष्ट्र की पहचान होती है। हमें विश्व इतिहास में अपनी संस्कृति की अमूल्य, अनुपम, विशिष्ट एवं अमिट छाप छोड़नी है। इसके लिए हमें सतत प्रयासों से अपने राष्ट्र की छवि को एक नया रूप देना होगा। अंत में यही कहूंगा कि हमारा देश सांस्कृतिक प्रदूषण के हानिकारक प्रभावों और परिणामों से वास्तव में तभी बच सकता है जब हमारी अगली पीढ़ी अपने अतीत और अपनी सनातन संस्कृति के प्रति सराहना की भावना विकसित करने के प्रति कृतसंकल्पित हों और शिक्षा और शिक्षक सांस्कृतिक प्रदूषण को रोकने में बहुत ही अहम्और मददगार साबित हो सकते हैं।

सुनील कुमार महला

ठंड से कांप रहे लोग, राजधानी की हवा फिर हुई 'जहरीली'; देखें आज कहां कितना रहा AQI

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली और एनसीआर में वायु गुणवत्ता गंभीर श्रेणी में पहुंच गई है जिससे सांस लेने में दिक्कत गले में खराश और आंखों में जलन जैसी समस्याएं हो रही हैं। ठंड भी बढ़ गई है जिससे लोग ठिठुर रहे हैं। गाजियाबाद में न्यूनतम तापमान 3 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 21 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार गाजियाबाद का एक्यूआई 132 दर्ज किया गया।

नई दिल्ली। राजधानी दिल्ली समेत पूरे एनसीआर में फिर से एक्यूआई गंभीर श्रेणी में पहुंच गया है। एनसीआर में प्रदूषण बढ़ने से लोगों को सांस लेने में दिक्कत हो रही है। वहीं, गले में खलाश और आंखों में जलन जैसी समस्याओं का लोगों को सामना करना पड़ रहा है। उधर, ठंड ने भी अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए हैं। तापमान में गिरावट होने से लोग ठंड से ठिठुरे रहे हैं।शीतलहर का सीतम लगातार बढ़ता ही जा रहा है।

आइए आपको आज यानी सोमवार (16 दिसंबर) का एक्यूआई भी बताते हैं कि सुबह कहां कितना AQI रहा है। नीचे टेबल में देखिए प्रमुख जगहों का एक्यूआई।

स्थान	AQI
आनंद विहार दिल्ली	567
श्रीनिवासपुरी दिल्ली	527
ITI शारदा दिल्ली	347
अलीपुर दिल्ली	432
सोनिया विहार दिल्ली	344
मुंडका दिल्ली	372
ITI शारदा दिल्ली	347
आर. के. पुरम दिल्ली	306
संजय नगर गाजियाबाद	197
गुरुग्राम सेक्टर-51	170

गाजियाबाद में ठंड से कांपे लोग

गाजियाबाद में सोमवार को न्यूनतम तापमान तीन डिग्री सेल्सियस रह गया। वहीं, अधिकतम तापमान बीते दिन की तरह की 21 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

132 दर्ज किया गया गाजियाबाद का एक्यूआई

वहीं, केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, गाजियाबाद का एक्यूआई 132 दर्ज किया गया। शुक्रवार को जिले का न्यूनतम तापमान सात डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया था। इसमें तीन डिग्री की गिरावट आने व हवा की गति छह किलोमीटर प्रतिघंटा होने से लोग सुबह से ही ठंड से ठिठुरने शुरू हो गए।

बताया गया कि सुबह में काम पर जाते नौकरीपेशा लोग व स्कूल जाते बच्चे गर्म कपड़ों में लिपटे दिखे। दो पहिया वाहन चालकों को अधिक सर्दी लगी। इससे वाहनों की गति में भी कमी आई।

आज यानी सोमवार (16 दिसंबर 2024) को 8.30 बजे आईएसटी (IST) पर न्यूनतम तापमान दर्ज किया गया।

सफदरजंग-
न्यूनतम तापमानः 04.5
24-घंटे परिवर्तनः -0.4
प्रस्थानः-4.1
पालम-
न्यूनतम तापमानः 05.8
24-घंटे परिवर्तनः -0.4
प्रस्थानः-3.2
आयानगर टर्मिनल-
न्यूनतम तापमानः 4.0
प्रस्थान -4.6
पूसा 3.5 ℃

यमुना एक्सप्रेसवे पर सफर करने वालों के लिए जरूरी खबर, हल्के वाहन 75 से ऊपर दौड़ाए तो लगेगा जुर्माना; नया नियम लागू

परिवहन विशेष न्यूज

यमुना एक्सप्रेसवे पर वाहनों की स्पीड को लेकर नया नियम लागू किया गया है। इसे ना मानने वालों पर जुर्माना लगाया जाएगा। युमना एक्सप्रेस वे पर हल्के वाहन 75 और भारी 60 की रफ्तार से ऊपर नहीं दौड़ सकेंगे। कोहरे से होने वाले हादसों को देखते हुए एहतियात के तौर पर यह फैसला लिया गया है। नियम तोड़ने पर हल्के वाहनों पर 2000 रुपये का जुर्माना लगेगा।

ग्रेटर नोएडा। यमुना एक्सप्रेसवे पर तेज रफ्तार में फर्राटा भरने वाले वाहन चालक जुर्माना से बचने के लिए सजग हो जाएं। अब एक्सप्रेसवे पर हल्के वाहन 75 किमी प्रतिघंटा व भारी वाहन 60 से ऊपर की गति से दौड़ाए तो जुर्माना ठोक दिया जाएगा। घने कोहरे से होने वाले हादसों की आशंका की रोकथाम के लिए रविवार से एक्सप्रेसवे पर पूर्व में निर्धारित समय सीमा में बदलाव किया है।

कोहरे के कारण लिया गया फैसला

इस बदलाव को लेकर यमुना विकास प्राधिकरण ने पत्र जारी कर दिया है। प्राधिकरण के अफसरों का मानना है कि सर्दियों में कोहरे के कारण सड़कों पर दृश्यता कम हो जाती है, इससे वाहन चलाना मुश्किल हो जाता है।

सड़कों पर फिसलन भी रहती है, जिससे दुर्घटना की आशंका बनी रहती है। ऐसी किसी अप्रिय घटना से वाहन चालकों को बचाने के लिए यमुना एक्सप्रेसवे पर गति सीमा कम करने का निर्णय लिया गया है।

जानिए क्या तय की गई यमुना एक्सप्रेसवे पर गति सीमा?

हल्के वाहनः 100 किमी/घंटा से घटाकर 75 किमी/घंटा

भारी वाहनः 80 किमी/घंटा से घटाकर 60 किमी/घंटा

उल्लंघन करने पर कार्रवाई

अब यमुना एक्सप्रेसवे पर निर्धारित सीमा से ज्यादा रफ्तार भरने वाले हल्के वाहनों पर 2,000 रुपये का जुर्माना लगेगा। तबकि भारी वाहनों पर 4,000 रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा।

नियम न मानने वालों पर शिकंजा कसेंगी टीमें

ग्रेटर नोएडा से आगरा तक 165 किलोमीटर लंबे यमुना एक्सप्रेसवे पर दुर्घटना होने पर घायलों को समय पर उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाने के लिए समय सारिणी और फोन नंबरों का आदान प्रदान किया जा चुका है। इसके साथ ही ओवर लोड वाहनों पर नकेल कसने के लिए जीरो प्वाइंट से जेवर टोल पर दोनों तरफ चार चार टीमें तैनात की गई हैं। यह टीमें किनारों पर खड़े वाहनों व ओवर लोड वाहनों पर शिकंजा कसेंगी।

पेट्रोलिंग गाड़ियों की संख्या भी बढ़ाई गई

एक्सप्रेसवे पर पेट्रोलिंग के लिए गाड़ियों की संख्या 11 से बढ़ाकर 15 कर दी गई है। वहीं वाहनों पर रिफ्लेक्टर टेप चिपकाने के लिए अभियान चल रहा है। इसके अलावा रविवार से एक्सप्रेसवे पर वाहनों की रफ्तार भी पहले के मुकाबले कम कर दी गई। एक्सप्रेसवे के वरिष्ठ प्रबंधक जेके शर्मा ने बताया कि नई गति सीमा निर्धारित कर दी गई है। इसे लेकर बोर्ड भी लगा दिया गया है।

फर्जी प्रमाणपत्र तैयार कर बेची जमीन, दिल्ली पुलिस से बर्खास्त निरीक्षक गिरफ्तार

परिवहन विशेष न्यूज

गाजियाबाद पुलिस ने जमीन के सौदे में फर्जी प्रमाणपत्र तैयार करने के मामले में दिल्ली पुलिस के बर्खास्त निरीक्षक को गिरफ्तार किया है। आरोपित के खिलाफ 10 साल पहले सीबीआई में भी केस दर्ज हैं। गिरफ्तारी के समय भी आरोपित ने यूपी पुलिस दारोगा की वर्दी पहनी हुई थी। आरोपित के खिलाफ धोखाधड़ी की रिपोर्ट दर्ज है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

मुरादनगर। फर्जी प्रमाणपत्र तैयार कर जमीन का सौदा करने के मामले में पुलिस में दिल्ली पुलिस के बर्खास्त निरीक्षक को गिरफ्तार किया है। आरोपित के खिलाफ दस वर्ष पूर्व सीबीआई में भी केस दर्ज दर्ज कराए गए थे, जिनके संबंध में भी जांच चल रही है।

गिरफ्तारी के समय भी पहनी थी वर्दी

आरोपित ने पुलिस पूछताछ कर रही है। आरोपित बर्खास्त होने के बाद अब यूपी पुलिस दारोगा की वर्दी पहनकर लोगों पर रौब गालिब करता था।

छह लोगों के खिलाफ दर्ज हुई थी धोखाधड़ी की रिपोर्ट

एसीपी मसूरी सिद्धार्थ गौतम ने बताया कि इस वर्ष अगस्त माह में मसूरी थाने में अंबर जेटली समेत छह लोगों के खिलाफ धोखाधड़ी को लेकर रिपोर्ट दर्ज कराई थी। मुख्य आरोपित अंबर जेटली था। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद मामले की जांच मुरादनगर थाना प्रभारी मुकेश सोलंकी को मिली।

जांच के दौरान पुलिस टीम ने मामले में लोगों से पूछताछ की तो पता चला रोहिणी, दिल्ली के प्रिंटर अपार्टमेंट में रहने वाले मनीष पुरी नामक व्यक्ति भी मामले में लिप्त है। जो कि दिल्ली में मोटर व्हीकल विभाग में संभागीय निरीक्षक के तौर पर कार्यरत रह चुका है।

दो साल पहले दिल्ली पुलिस से हुआ था बर्खास्त

शुक्रवार को पुलिस ने कार्रवाई करते हुए आरोपित मनीष पुरी को गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में आरोपित ने बताया कि धोखाधड़ी के मामले में उसके खिलाफ 12 वर्ष से जांच चल रही थी, जांच में हुई कार्रवाई के आधार पर उसे अगस्त 2022 में विभाग से बर्खास्त कर दिया गया।

आरोपित अपने साथी रोहित, भसीन व अन्य लोगों के साथ मिलकर जमीन के फर्जी कागज तैयार उन्हें बेचा करते थे। इस प्रकार के सौदों में हासिल हुए धन को आपस में बांट लिया जाता था।

आरोपित ने मुख्य आरोपित अंबर जेटली को दिल्ली के छावला थाना क्षेत्र के राधोपुर में इसी प्रकार जमीन दिलवाई थी। इतना ही नहीं आरोपित के खिलाफ फर्जीवाड़े से संबंधित दो मुकदमे चल रहे हैं। दोनों मुकदमे वर्ष 2012 व 2014 में दर्ज कराए गए थे।

लोगों पर वर्दी का रौब करता था गालिब

एसीपी ने बताया कि जिस पर आरोपित को दिल्ली से गिफ्तार किया गया वह अपनी वर्दी पहने हुए था, जबकि आरोपित को बर्खास्त हुए दो वर्ष से अधिक हो चुके हैं। आरोपित फर्जीवाड़े से संबंधित अपने काम निकालने के लिए लोगों से वर्दी पहनकर मिलता था, और उन पर वर्दी का रौब डालकर अपने काम निकलवाता था।

सीबीजी के 10 प्लांट नोएडा को 'गार्बेज फ्री सिटी' बनाने में देंगे अपना योगदान, अथॉरिटी का प्लान तैयार

परिवहन विशेष न्यूज

नोएडा को 'गार्बेज फ्री सिटी' बनाने में सीबीजी के 10 प्लांट अपना योगदान देंगे। नोएडा शहर को कचरा मुक्त बनाने की दिशा में वर्ष 2019 में प्रयास शुरू किया था जो अब रंग लाने लगा है। सेक्टर-54 स्थित लिगेसी वेस्ट डंप साइट पर एक लाख मीट्रिक टन कचरा वैज्ञानिक पद्धति से निस्तारित किया गया था। यह जगह आज कृत्रिम वेटलैंड के रूप में विकसित की जा चुकी है।

नोएडा। शहर से निकलने वाले कचरे का नोएडा प्राधिकरण सौ प्रतिशत निस्तारण करने जा रहा है। इसके लिए शहर में 40-40 मीट्रिक टन क्षमता छोटे-छोटे बायो फ्यूल (सीबीजी) के दस प्लांट लगाएं जाएंगे। यह प्लांट पब्लिक प्राइवेट पार्टनर (पीपीपी) माडल पर संचालित होंगे, जिसमें शहर से निकलने वाला कचरा व स्थान प्राधिकरण प्लांट को उपलब्ध कराएगा, लेकिन प्लांट व मशीनरी पर खर्च चयनित कंपनी को करना होगा।

प्राधिकरण के खाते में आएगा राजस्व

इन प्लांट में तैयार होने वली कंप्रेस्ड बायोग गैस (सीबीजी) को चयनित कंपनी बाजार में बेचेगी, जिससे होने वाली आय का कुछ प्रतिशत शेयर प्राधिकरण के खाते में भी डाला जाएगा। कंपनियों को प्लांट संचालन के लिए 25 से 30 वर्ष का समय दिया जा सकता है।

हालांकि इस कार्य योजना का प्रस्ताव तैयार कर जन स्वास्थ्य विभाग की ओर से प्राधिकरण के नियोजन विभाग को भेजा गया है, जिसमें स्थान चिह्नित किया जाना है। इसके बाद आगे की प्रक्रिया शुरू होगी।

बता दें कि नोएडा में अब तक नौ लाख मीट्रिक टन से अधिक लिगेसी वेस्ट का निस्तारण किया जा चुका है। शेष करीब चार लाख मीट्रिक टन लिगेसी वेस्ट को निस्तारित करने के लिए समय सीमा का निर्धारण किया जा रहा है, लेट लतीफ होने से दिसंबर के अंत तक कार्य पूरा कर लिया जाएगा।

इस व्यवस्था पर काम करने वाला नोएडा उत्तर प्रदेश ही नहीं, बल्कि एनसीआर का पहला शहर बन जाएगा। जहां पर कचरा एकत्र करने के लिए कोई भी डंपिंग ग्राउंड नहीं होगा।

वर्तमान में नोएडा प्राधिकरण की ओर से शहर से निकलने वाले गीला कचरा निस्तारण के लिए सेक्टर-145 स्थित मुबारिकपुर में अस्थाई डंपिंग ग्राउंड बनाया गया है। जहां पर वैज्ञानिक पद्धति से लिगेसी वेस्ट को रिफ्यूज ड्राइव फ्यूल (आरडीएफ) में तब्दील किया जा रहा है, जिसका इस्तेमाल सीमेंट फैक्ट्री, थर्मल पावर प्लांट, पेंट इंडस्ट्री में ग्रीन फ्यूल के रूप में हो रहा है।

कुछ चुनौतियां पर काम करना बाकी

लिगेसी वेस्ट को पूरी तरह खत्म कर 'गार्बेज फ्री सिटी' अवश्य बन जाएगा नोएडा, लेकिन शहरवासियों को गीला कचरा निस्तारण में बहुत अधिक मेहनत करने की आवश्यकता है। बल्क वेस्ट जेनरेटर अभी अपना काम ईमानदारी से नहीं कर रहे है।

इंदौर, सूरत, विजयवाडा, अम्बिकापुर में सोसायटी व घरों से कचरा बाहर ही नहीं आता है। हर घर व सोसायटी में कंपोस्ट प्लांट लगा है, जो गीला कचरा पूरी तरह से निस्तारित कर लेते है। बल्क वेस्ट जेनरेटर अपना संपूर्ण कचरा खुद ही निस्तारित करते है। नगर निगम व प्राधिकरण शेष मिट्टी ही उठाता है।

शहर से प्रतिदिन निकलने वाला कचरा

वर्ग	संख्या
गीला कचरा-	800 मीट्रिक टन
ठोस कचरा-	600 मीट्रिक टन
वीट वेस्ट-	358 मीट्रिक टन
उद्यानिक कचरा-	300 मीट्रिक टन
मेडिकल वेस्ट-	400 मीट्रिक टन
इलेक्ट्रानिक्स वेस्ट-	500 मीट्रिक टन
सीएंडडी वेस्ट-	300 मीट्रिक टन

अब तक निस्तारित कचरा

स्थान	संख्या
सेक्टर-54	एक लाख मीट्रिक टन
सेक्टर-145 मुबारिकपुर	आठ लाख मीट्रिक टन (अबतक)
सेक्टर-145 मुबारिकपुर	करीब चार लाख मीट्रिक टन (शेष)

आम जनता संविधान संशोधनों का इतिहास आरोप प्रत्यारोप पर नहीं बल्कि विज़न 2047 के संविधान का रोडमैप जानने में रुचिकर

लोकसभा में 13-14 दिसंबर 2024 संविधान चर्चा इतिहास की क्लास लगी?अब राज्यसभा में 16-17 दिसंबर को चर्चा पर दुनियाँ की नज़रें-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर दुनियाँ के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत क़े निचले सदन संसद लोकसभा में 13-14 दिसंबर 2024 को संविधान पर चर्चा को पूरी दुनियाँ ने देखा जो अब 16-17 दिसंबर 2024 को उपरी सदनराज्यसभा में भी होगी। लोकसभा की चर्चा पर मैंने दोनों दिन बारीकी से पैनी नज़र रखी व 14 दिसंबर 2024 को माननीय पीएम के जवाब के बाद सोशल इलेक्ट्रॉनिक व प्रिंट मीडिया प्लेटफार्मस पर लगातार डिबेट मुलाकातें वदर्शकों द्वारा कमेंट्स का जोरदार दौर चल पड़ा जिसमें मैंने देखा कि बहुतेक विश्लेषकों कमेंट्स कर्ताओं को चर्चा का मकसद समझ नहीं आया, क्योंकि इसमें हर राजनीतिक दल, संविधान संशोधन के इतिहास की बातक़र एक दूसरे दल की टांग खिंचाई एक दूसरे के संशोधनों को गैरवाज़बी व मतलबी संशोधन की संज्ञा देते रहे, तो किसी ने इसको इतिहास की क्लास की संज्ञा दी। मैंने विशेषण किया तो मुझे भी इस पर सार्थक चर्चा नज़र नहीं आई क्योंकि सभी दल एक दूसरे के द्वारा किए गए संशोधनों पर उंगली उठा रहे थे, इस पार्टी या व्यक्ति ने इतने, तो उस पार्टी या व्यक्ति ने उतने संशोधन किया। विशेष रूप से विपक्षी नेता के 25 मिनट के संबोधन में बहुत समय पीएम उपस्थित नहीं थे, तो वही 1 घंटा 50 मिनट के पीएम के संबोधन में कुछ समय विपक्षी नेता उपस्थित नहीं दिखे, परंतु इन सब से हटकर किसी ने भी ऐसा विचार व्यक्त नहीं किया कि आओ विज़न 2047 को रेखांकित कर हम संविधान में इस तरह का संशोधन आगे करें कि विज़न को शीघ्रअपनी डेट लाइन से पहले सार्थक सफ़ल बनाने के लिएसंविधान में संभावित संशोधन कर रणनीति बनाएं ताकि हम इस लक्ष्य को शीघ्र प्राप्त कर सकें। मुझे उम्मीद है कि 16-17 दिसंबर 2024 को उच्चसदन राज्यसभा में इसपर सार्थक चर्चा जरूर होगी।चूँकि लोकसभा में 13-14 दिसंबर 2024 को संविधान, पर चर्चा इतिहास की क्लास लगी अब राज्यसभा में 16-17 दिसंबर को चर्चा पर दुनियाँ की नज़रें लगी है, इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे,चर्चा-ए-संविधान, एट द रेटऑफ़ सांसद...जनता समझ नहीं पाई मकसद..।

साथियों बात अगर हम संविधान पर चर्चा में विपक्ष के नेता के संबोधन की करें तो,शनिवार को संसद में अपने भाषण की शुरुआत करते हुए उन्होंने सावरकर का ज़िक्र किया और कहा, सावरकार ने लिखा है कि भारत के संविधान के बारे में सबसे ख़राब चीज़ ये है कि इसमें कुछ भी भारतीय नहीं है।वेदों के बाद मनुस्मृति वो ग्रंथ है जो हमारे हिंदू राष्ट्र के लिए सबसे पूजनीय है और ये प्राचीन समय से हमारी संस्कृति, रीति-रिवाज, विचार और व्यवहार का आधार बना हुआ है, आज जो मनुस्मृति क़ानून है उन्होंने जो कहा वो सावरकर के शब्द हैं।उन्होंने कहा, सावरकर ने अपने लेखन में साफ कर दिया है कि हमारे संविधान में भारतीयता का कोई अंश नहीं है।उन्होंने कहा है कि भारत को इस किताब (संविधान) से नहीं बल्कि इस किताब (मनुस्मृति) से चलाया जाना चाहिए।उन्होंने कहा,आज इसी की लड़ाई है, मैं सत्ता पक्ष के लोगों से पूछना चाहता हूं कि क्या आप सावरकर के शब्दों का समर्थन करते हैं, क्योंकि जब आप संविधान के पक्ष में संसद में बोलते हैं तो आप सावरकर का मजाक उड़ा रहे होते हैं, उनको बदनाम कर रहे होते हैं। उन्होंने अपने संबोधन में इसके अलावा अग्निवीर, पेपर लीक, किसानों और उत्तर प्रदेश के बारे में भी कहा।उन्होंने कहा, आप महात्मा गांधी, पेरियार और दूसरे महान नेताओं की तारीफ़ करते हैं लेकिन हिचकिचाते हुए, सच तो ये है कि आप भारत को उसी तरह से चलाना चाहते हैं जैसे पहले चलाया जाता था।उन्होंने महाभारत के पात्र एकलव्य का जिक्र किया और कहा, जैसे एकलव्य ने तैयारी की थी, वैसे ही हिंदुस्तान के युवा सुबह उठकर अलग-अलग परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन जब आपने अग्निवीर लागू किया, तब आपने उन युवाओं की उंगली काटी, जब पेपर लीक होता है, तब आप युवाओं का अंगूठा काटते हैं।उन्होंने दिल्ली की सरहदों के पास किसानों के विरोध प्रदर्शन के बारे में कहा आज आपने किसानों पर आंसू गैस चलाया है, किसान न्यूनतम समर्थन मूल्य की मांग करते हैं, लेकिन आप अडानी-अंबानी को फायदा पहुंचाते हैं।वे करीब 25 मिनट बोले।उनके बयान पर युवा मामलों के मंत्री ने जवाब दिया। उन्होंने कहा-आप अंगूठा काटने की बात कर रहे हैं। आपकी सरकार में तो सिखों के गले काटे गए, आपको देश से माफी मांगनी चाहिए।

साथियों बात अगर हम माननीय पीएम द्वारा 14 दिसंबर 2024 को जवाबी संबोधन की करें तो, इस दौरान कई मुद्दों पर चर्चा की, उन्होंने कांग्रेस पर तो निशाना साधा ही,सरकार की उपलब्धियां भी गिनवाईं और अनुच्छेद 370 पर भी बात की, उन्होंने परिवार का नाम नहीं लिया,लेकिन कहा कि कांग्रेस के एक परिवार ने हर स्तरपर देश को चुनौती दी है,उन्होंने कहा,इसलिए 75 साल में 55 साल एक परिवार ने राज किया,इसलिए देश में क्या-क्या हुआ ये जानने का सबको अधिकार है।उन्होंने कहा,1947 से 1952 तक इस देश में चुनी हुई सरकार नहीं थी।चुनाव नहीं हुए थे, एक अंतरिम व्यवस्था के रूप में खाका खड़ा किया गया था।1952 के पहले राज्यसभा का भी गठन नहीं हुआ था,राज्यों में भी कोई चुनाव नहीं थे, जनता का कोई आदेश भी नहीं था उसके बावजूद 1951 में जब चुनी हुई सरकार नहीं थी, उन्होंने संविधान को बदला और अभिव्यक्ति की आज़ादी पर हमला किया गया ये संविधान निर्माताओं का अपमान था।उन्होंने अपने संबोधन में जवाहर लाल नेहरू और इंदिरा गांधी का नाम लिया और कहा कि क़रीब छह दशक में 75 बार संविधान बदला गया।जो बीज देश के पहले प्रधानमंत्री जी ने बोया था,उस बीज को खाद-पानी देने का काम एक और प्रधानमंत्री ने किया।1971 में सुप्रीम कोर्ट का एक फैसला आया थाउस फैसले को संविधान बदलकर पलट दिया गया और1971 में संविधान संशोधन किया गया था।उन्होंने हमारे देश की अदालत के पंख काट दिए थे।पीएम ने पूर्व पीएम का नाम लेते हुए कहा, इंदिरा जी के चुनाव को गैर नीति के कारण अदालत ने खारिज कर दिया और उनको एमपी पदछोड़ने की नौबत आईतो उन्होंने देशपर इमरजेंसी थोप दी,अपनी कुर्सी बचाने के लिए,इतना ही नहीं 1975 में 39वां संशोधन किया, उसमें राष्ट्रपति,उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव के ख़िलाफ़ कोई कोर्ट में नहीं जा सकता।उन्होंने शाह बानो मामले का ज़िक्र किया और कहा,यहां बैठे कई दलों के मुखिया को भी जेलों में ठूंस दिया गया था। राजीव गांधी जी ने संविधान को एक और गंभीर झटका दिया। सुप्रीम कोर्ट ने शाह बानो का जजमेंट दिया था। कोर्ट से एक वृद्ध महिला को उसका हक़ मिला था, राजीव गांधी ने शाह बानो की उस भावना को, सुप्रीम कोर्ट की उस भावना को, नकार दिया।उन्होंने वोट बैंक की राजनीति की ख़ातिर संविधान की भावना को बलि चढ़ा दिया।न्याय के लिए तड़प रही एक महिला की बजाय उन्होंने कट्टर पंथियोंका साथ दिया,संसद में क़ानून बनाकर सुप्रीम कोर्ट के फैसले को एक बार फिर पलट दिया गया उनकी सरकार देश में समान नागरिक संहिता लाने को कोशिश कर रही है।देश में समान नागरिक संहिता के विषय पर भी संविधान सभा में चर्चा हुई थी बहस के बाद निर्णय लिया गया कि जो भी सरकार चुनकर आएगी वो इस पर निर्णय लेगी और इसे लागू करेगी।धार्मिक आधार पर बने पर्सनल लॉ को ख़त्म करने की वकालत की गई उसके संविधान सभा की बहस में के.एम. मुंशी जी ने कहा था कि समान नागरिक संहिता को लाना राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए अनिवार्य है। सुप्रीम कोर्ट ने भी कई बार कहा है कि देश में यूनिफार्म सिविल कोड जल्द से जल्द लाना चाहिए।संविधान निर्माताओं की भावनाओं को ध्यान में रखते हुए हम पूरी ताकत से समान नागरिक संहिता को लाने में लगे हुए हैं।पीएम ने लोकसभा में 11 संकल्प रखे ये संकल्प है। हम इसी के हिसाब से आगे बढ़ रहे हैं (1) सभी नागरिक और सरकार अपने अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करें।(2) हर क्षेत्र और समाज को विकास का समान लाभ मिले, सबका साथ, सबका विकास' की भावना बनी रहे।(3) भ्रष्टाचार के प्रति जीरो टॉलरेंस की नीति अपनाई जाए और भ्रष्टाचारियों की सामाजिक स्वीकार्यता समाप्त हो।(4) देश के कानूनों और परंपराओं के पालन में गर्व का भाव जागृत हो।(5) गुलामी की मानसिकता से मुक्ति मिले और देश की सांस्कृतिक विरासत पर गर्व किया जाए। (6) राजनीति को परिवारवाद से मुक्त कर लोकतंत्र को सशक्त बनाया जाए।(7) संविधान का सम्मानहो और राजनीतिकस्वार्थ के लिए उसे हथियार न बनाया जाए।(8) जिन वर्गों को संविधान के तहत आरक्षण मिल रहा है, वह जारी रहे, लेकिन धर्म के आधार पर आरक्षण न दिया जाए (9) महिलाओं के नेतृत्व में विकास को प्राथमिकता दी जाए (10) राज्य के विकास के माध्यम से राष्ट्र के विकास को सुनिश्चित किया जाए (11) एक भारत, श्रेष्ठ भारत' के लक्ष्य को सर्वोपरि रखा जाए।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन क़र इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि चर्चा-ए-संविधान @सांसद.... जनता समझ नहीं पाई मकसद ?आम जनता संविधान संशोधनों का इतिहास आरोप प्रत्यारोप पर नहीं बल्कि विज़न 2047 के संविधान का रोडमैप जानने में रुचिकर है ?लोकसभा में 13-14 दिसंबर 2024 संविधान चर्चा इतिहास की क्लास लगी ?अब राज्यसभा में 16-17 दिसंबर को चर्चा पर दुनियाँ की नज़रें लगी।

– :सौजन्य :–
ईवी ड्राइव द फ्यूचर
EV
Drive the Future

17 से 22 जनवरी 2025 के बीच भारत मोबिलिटी एक्सपो में शामिल होंगी 34 वाहन कम्पनियां

परिवहन विशेष न्यूज

भारत मोबिलिटी एक्सपो के आगामी संस्करण में 34 वाहन कम्पनियां भाग लेंगी, जो 1986 में इस प्रमुख आयोजन के पहले संस्करण के बाद से अब तक की सबसे बड़ी संख्या है। सोसाइटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स सियाम, एक्मा और सीआईआई के साथ साझेदारी में भारत मंडपम में 17-22 जनवरी तक भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 में ऑटो एक्सपो के 17वें संस्करण, 'द मोटर शो' का आयोजन करेगा।

सियाम के महानिदेशक राजेश मेनन ने पीटीआई को बताया, ₹लगभग 34 वाहन निर्माता प्रदर्शनी में भाग लेंगे और कई पावरट्रेन से संबंधित तकनीकों का प्रदर्शन करेंगे।₹ उन्होंने कहा कि यह आयोजन के इतिहास में अब तक की सबसे अधिक भागीदारी है। उन्होंने कहा कि इस आयोजन में भाग लेने वाले वाहन निर्माताओं में टाटा मोटर्स, मारुति सुजुकी, महिंद्रा एंड महिंद्रा, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर, हुंडई मोटर इंडिया, किआ मोटर इंडिया, जेएसडब्ल्यू एमजी मोटर और स्कोडा ऑटो वोक्सवैगन इंडिया शामिल हैं। इस कार्यक्रम के दौरान बीएमडब्ल्यू, मर्सिडीज, पोर्श इंडिया और बीवाईडी जैसी लग्जरी कार निर्माता कंपनियां भी अपने उत्पाद प्रदर्शित करेंगी। दोपहिया वाहन खंड में टीवीएस मोटर कंपनी, बजाज ऑटो, हीरो मोटोकॉर्प, होंडा मोटरसाइकिल एंड स्कूटर इंडिया, सुजुकी मोटरसाइकिल और इंडिया यामाहा की भागीदारी होगी। इसी तरह वोल्वो आयशर कमर्शियल व्हीकल्स, अशोक लीलैंड, जेबीएम और कमिंस इंडिया भी इस कार्यक्रम में भाग लेंगे। मेनन ने कहा कि एथर एनर्जी, टीआई क्लीन मोबिलिटी, ईका मोबिलिटी, ओला इलेक्ट्रिक और विनफास्ट जैसी कुछ शुद्ध ईवी कंपनियां भी इस बार ऑटो एक्सपो में भाग लेंगी।

भारत मोबिलिटी ग्लोबल एक्सपो 2025 अगले साल 17 से 22 जनवरी के बीच भारत मंडपम, यशोभूमि (इंडिया इंटरनेशनल कन्वेंशन एंड एक्सपो सेंटर) द्वारका और इंडिया एक्सपो सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में एक साथ आयोजित किया जाएगा।

टोयोटा की पहली इलेक्ट्रिक कार अर्बन क्रूजर-ईवी

परिवहन विशेष न्यूज

टोयोटा की पहली इलेक्ट्रिक कार अर्बन क्रूजर ईवी नाम से आएगी। इलेक्ट्रिक एसयूवी को एक बार फुल चार्ज करने पर 550 किलोमीटर की रेंज मिलेगी। कंपनी ने आज (12 दिसंबर) इलेक्ट्रिक SUV के प्रोडक्शन वर्जन को ग्लोबल मार्केट में रिवील कर दिया है। इसका कॉन्सेप्ट वर्जन पिछले साल पेश किया गया था।

टोयोटा इस इलेक्ट्रिक एसयूवी को 2025 की तीसरी तिमाही में यूनाइटेड किंगडम में लॉन्च करेगी। इसके बाद यह 2025 के अंत तक भारत आ सकती है। इसकी कीमत 23 लाख रुपए (एक्स-शोरूम) हो सकती है। यह MG ZS EV, टाटा कर्व EV और अपकमिंग हुंडई क्रेटा EV को टक्कर देगी।

टोयोटा अर्बन क्रूजर को हार्टेक्ट-ई प्लैटफॉर्म पर बनाया गया है, जिसे कंपनी ने मारुति सुजुकी के साथ मिलकर बनाया है। यह नई कार ईवीएक्स का रिबैज्ड वर्जन है, जिसके प्रोडक्शन वर्जन को इटली के मिलान में हुए मोटर शो EICMA-2024 में ग्लोबल मार्केट के लिए ई-विटारा नाम से पेश किया गया था।

अर्बन क्रूजर ईवी के प्रोडक्शन मॉडल में अपने कॉन्सेप्ट मॉडल से कुछ बदलाव किए गए हैं। इसकी लंबाई को 15mm और चौड़ाई को 20mm कम किया गया है, लेकिन इसकी ऊंचाई को 20mm बढ़ाई गई है। व्हीलबेस की लंबाई 2,700mm ही है। खास बात यह है कि ये डायमेंशन अर्बन क्रूजर ईवी को ई विटारा से थोड़ा बड़ा बनाते हैं।

यूरोपियन मार्केट में टोयोटा अर्बन क्रूजर ईवी को ई-विटारा की तरह दो बैटरी पैक ऑप्शन के साथ पेश किया गया है। इसमें 49kWh और 61kWh का बैटरी पैक ऑप्शन शामिल है। कंपनी ने अभी तक कार की सर्टिफाइड रेंज का खुलासा नहीं किया है, लेकिन उम्मीद है इसकी फुल चार्ज में रेंज 550 किलोमीटर तक हो सकती है, जो ई विटारा से 150km ज्यादा है। कार में 2 व्हील ड्राइव और 4 व्हील ड्राइव का ऑप्शन भी दिया जाएगा।

कार का ओवर ऑल बॉडी स्ट्रक्चर ई-विटारा जैसा ही है, लेकिन इसकी फ्रंट प्रोफाइल मारुति ई-विटारा से बिल्कुल अलग है। इसमें एक चौड़ी क्रोम स्ट्रिप है, जो दोनों LED हेडलैम्प्स को जोड़ती है और पूरा सेटअप एक ब्लैक केसिंग में घिरा हुआ है। दोनों तरफ 12 छोटी-छोटी गोल LED DRLs दी गई हैं। नीचे की तरफ एक मोटा बम्पर है और दोनों तरफ वर्टिकल एयर वेंट दिए गए हैं।

साइड से देखने पर टोयोटा की ईवी मारुति eVX जैसी ही नजर आ रही है, जिसमें चौकोर व्हील आर्च, डोर पर चौड़ी बॉडी क्लैडिंग और सी-पिलर पर लगे रियर डोर हैंडल दिए गए हैं। इसमें ई-विटारा की तरह 19-इंच के एलॉय व्हील्स दिए गए हैं, लेकिन डिजाइन अलग है।

रियर प्रोफाइल पूरी तरह से eVX जैसी दिख रही है। इसमें एक बड़ा बंपर, रूफ इंटीग्रेटेड स्पॉइलर और बीच में रिफ्लेक्टिंग एलिमेंट के साथ एंड-टू-एंड कनेक्टेड टेल लैंप सेटअप है। DRLs की तरह ही, टेललैंप में भी गोल लाइटिंग एलिमेंट दिए गए हैं, जो इसे ई-विटारा से अलग बनाते हैं।

अर्बन क्रूजर ईवी का केबिन बिल्कुल ई-विटारा जैसा ही है। इसकी कलर केबिन थीम को अलग रखा गया है, जो पूरी तरह से ब्लैक है। केबिन का बाकी हिस्सा लेयर्ड डैशबोर्ड, सेमी-लेदरेट अपहोल्स्ट्री, स्क्वैरिश एसी वेंट, ब्रश एल्युमिनियम और ग्लॉस ब्लैक एलिमेंट्स दिए गए हैं।

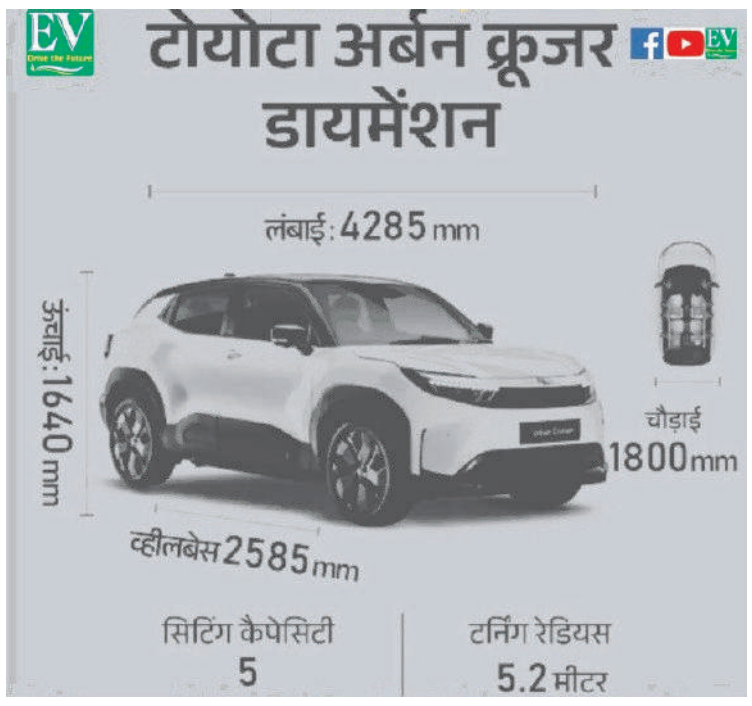

इसमें 2-स्पोक फ्लेट बॉटम स्टीयरिंग व्हील और वर्टिकल ओरिएंटेड AC वेंट्स के चारों ओर ग्लॉस ब्लैक टच दिया गया है। इसके केबिन का प्रमुख हाइलाइट इंटीग्रेटेड फ्लोटिंग स्क्रीन सेटअप दिया गया है, जिसमें एक इंफोटेनमेंट और दूसरी ड्राइवर डिस्प्ले है।

फीचर लिस्ट में 10.25 इंच का टचस्क्रीन इंफोटेनमेंट सिस्टम, 10.1 इंच का डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले, फिक्स्ड ग्लासरूफ, JBL साउंड सिस्टम और पावर्ड ड्राइवर सीटें शामिल हैं। इसमें वायरलेस फोन चार्जर, वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो और एप्पल कारप्ले और ऑटोमैटिक क्लाइमेट कंट्रोल भी होगा।

सेफ्टी के लिए अर्बन क्रूजर ईवी में एडवांस्ड ड्राइवर असिस्टेंस सिस्टम (ADAS) मिलेगा। इसमें लेन कीप असिस्ट, अडेप्टिव क्रूज कंट्रोल और ऑटोनॉमस इमरजेंसी ब्रेकिंग जैसे फीचर शामिल होंगे। अन्य फीचर में 360-डिग्री कैमरा, इलेक्ट्रॉनिक स्टेबिलिटी कंट्रोल (ESC), टायर प्रेशर मॉनिटरिंग सिस्टम (TPMS) और कई एयरबैग मिलेंगे।

भारत के ईवी बैटरी भविष्य के लिए एक बड़ा परिवर्तनकारी कदम

परिवहन विशेष न्यूज

लिको मैटेरियल्स ने बेंगलुरु में अत्याधुनिक लिथियम-आयन बैटरी रीसाइक्लिंग सुविधा का उद्घाटन किया है, जो भारत के ईवी इकोसिस्टम में एक बड़ा कदम है। इस प्लांट की वार्षिक इन-फीड क्षमता 4 GWh है, जिसे अगले तीन से चार वर्षों में 10 GWh तक बढ़ाने की योजना है। यह विस्तार 2030 तक 30% ईवी अपनाने के भारत के लक्ष्य के अनुरूप है।

कंपनी अगले दो से तीन वर्षों में हाइड्रोमेटेलर्जी प्लांट में ₹250 करोड़ का निवेश करने वाली है। यह डाउनस्ट्रीम सुविधा रीसाइक्लिंग के दौरान उत्पादित काले द्रव्यमान से उच्च शुद्धता वाले धातु लवणों को पुनर्प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करेगी। इन पुनर्प्राप्त सामग्रियों को गीगाफैक्ट्री और ऊर्जा भंडारण प्रणालियों को आपूर्ति की जाएगी, जिससे बैटरी आपूर्ति श्रृंखला में लूप बंद हो जाएगा।

लिको का लक्ष्य 2027 तक हर साल 2,00,000 मीट्रिक टन इलेक्ट्रिक वाहन बैटरियों को रीसाइकिल और पुनःउपयोग करना है, ताकि आवश्यक बैटरी सामग्रियों के लिए महत्वपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला अंतराल को संबोधित किया जा सके। कंपनी की शून्य-तरल-निर्वहन रीसाइक्लिंग प्रक्रिया बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन के लिए पर्यावरण की दृष्टि से टिकाऊ समाधान भी सुनिश्चित करती है।

सीईओ गौरव डोलवानी के अनुसार, यह नई सुविधा महत्वपूर्ण बैटरी घटकों के लिए आयात पर निर्भरता को कम करने और भारत के स्वच्छ ऊर्जा में परिवर्तन का समर्थन करने की दिशा में एक कदम है। उन्होंने कहा कि यह पहल टिकाऊ ऊर्जा भंडारण समाधानों की बढ़ती मांग के अनुरूप है, क्योंकि ऊर्जा भंडारण क्षेत्र के 2032 तक 42 गीगावाट तक पहुंचने का अनुमान है।

नया बेंगलुरू संयंत्र न केवल भारत की ईवी क्रांति को समर्थन देगा, बल्कि बैटरी के लिए एक चक्रीय अर्थव्यवस्था बनाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा, जो एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है क्योंकि आने वाले वर्षों में ईवी उद्योग अनुमानित 250% तक बढ़ेगा।

दिसंबर के पहले पखवाड़े में बजाज चेतक नंबर वन रहा, टीवीएस ओला से आगे

S. No.	TOP SALES EV 2 WHEELER OEMs	BRAND	NOVEMBER
1	BAJAJ AUTO LIMITED	BAJAJ	9,513
2	TVS MOTOR COMPANY	TVS	7,567
3	OLA ELECTRIC	OLA	6,387
4	ATHER ENERGY	ATHER	5,053
5	GREAVES ELECTRIC MOBILITY	GREAVES	1,378
6	REVOLT INTELLICORP	REVOLT	572
7	HERO MOTOCORP	VIDA	541
8	BGAUSS AUTO	BGAUSS	501
	SOURCE: VAHAN till 14th December 2024		

परिवहन विशेष न्यूज

बजाज ऑटो के इलेक्ट्रिक स्कूटर ने 1-14 दिसंबर के बीच 9,513 यूनिट की खुदरा बिक्री के साथ भारत के ई-टू-व्हीलर बाजार का नेतृत्व किया, जो टीवीएस आईक्यूब 7,567 यूनिट, ओला इलेक्ट्रिक 6,387 यूनिट और एथर एनर्जी 5,053 यूनिट से काफी आगे है। अगर दिसंबर के आखिरी दो हफ़्तों में भी यही ट्रेंड जारी रहा, तो यह पहली बार होगा कि जनवरी 2025 में बजाज की चेतक दो पहियों पर सबसे ज़्यादा बिकने वाला ईवी होगा।

वार्डविज़ार्ड इनोवेशन को ई-थ्री-व्हीलर्स से 30-35 प्रतिशत बिक्री की उम्मीद

परिवहन विशेष न्यूज

वडोदरा स्थित इलेक्ट्रिक वाहन निर्माता वार्डविज़ार्ड इनोवेशन एंड मोबिलिटी ने शुक्रवार, 13 दिसंबर को कहा कि उसे उम्मीद है कि आगे चलकर बिक्री का लगभग 30-35 प्रतिशत हिस्सा ई-थ्री-व्हीलर्स से आएगा। कंपनी ने यह भी कहा कि उसका लक्ष्य चालू वित्त वर्ष को 42,000 इकाइयों की बिक्री के साथ समाप्त करना है।

इससे पहले दिन में वार्डविज़ार्ड इनोवेशन एंड मोबिलिटी ने जॉय-ई-रिक और जॉय-ई-बाइक व्यवसाय के तहत अपने उत्पाद पोर्टफोलियो का विस्तार किया, जिसमें यात्री खंड में दो और वाणिज्यिक खंड के लिए दो नए लॉन्च किए गए। इसने एक हाई-स्पीड इलेक्ट्रिक टू-व्हीलर का भी अनावरण किया है।

बिक्री और रणनीति के निदेशक अख्तर खत्री ने मीडिया से बातचीत के दौरान कहा, ₹हमें उम्मीद है कि थ्री-व्हीलर की बिक्री हमारे कुल वाहन बिक्री में 30-35 प्रतिशत का योगदान देगी।"

कंपनी इस वित्त वर्ष में 2,000 तिपहिया वाहनों के अलावा लगभग 35,000-40,000 दोपहिया वाहन बेचने की योजना बना रही है, जबकि अगले वित्त वर्ष (वित्त वर्ष 26) के लिए लक्ष्य 50,000 ई-दोपहिया वाहन और 10,000 इलेक्ट्रिक तिपहिया वाहन बेचना है।

वार्डविज़ार्ड ने यह भी कहा कि वर्तमान उत्पादन क्षमता ई-दोपहिया वाहनों के लिए प्रति वर्ष 1.20 लाख इकाई और ई-तिपहिया वाहनों के लिए 60,000 इकाई है।

कंपनी ने कहा कि हाई-स्पीड इलेक्ट्रिक स्कूटर निमो की कीमत 99,000 रुपये (एक्स-शोरूम) है, जिसे शहरी सड़कों के लिए डिज़ाइन किया गया है, इसमें तीन ड्राइव मोड हैं - इको, स्पोर्ट और हाइपर, और यह विस्तारित जीवन और प्रदर्शन के लिए स्मार्ट बीएमएस के साथ 72V, 40Ah लिथियम-आयन (NMC) बैटरी से लैस है।

कंपनी ने दावा किया कि निमो की रनिंग कॉस्ट 17 पैसे प्रति किमी जितनी कम है।

देहरादून में दो ईवी चार्जिंग स्टेशन तैयार, सीएम धामी करेंगे उद्घाटन

परिवहन विशेष न्यूज

देहरादून में जिस तरह वायु प्रदूषण का ग्राफ बढ़ रहा है, उसे देखते हुए इलेक्ट्रिक व्हीकल को बढ़ावा देने से बेहतर कोई विकल्प नहीं। इस दिशा में हमार शहर आगे भी बढ़ रहा है। निजी वाहनों में भी ईवी का चलन बढ़ा है।

यह सिक्के का एक पहलू और दूसरे पहलू के रूप में ईवी चार्जिंग स्टेशनों की संख्या बढ़ाकर ईको फ्रेंडली ट्रांसपोर्ट के सपने को साकार किया जा सकता है। जिलाधिकारी सविन बंसल ने सितंबर माह में इस दिशा में कदम बढ़ाए थे और विभिन्न विभागों की संयुक्त टीम बनाकर प्रथम चरण में शहर में 10 स्थान चार्जिंग स्टेशन की स्थापना के लिए तलाश किए थे। अब दो ईवी चार्जिंग स्टेशन बनकर तैयार हो चुके हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी जल्द इनका उद्घाटन करेंगे।

जिलाधिकारी सविन बंसल ने बताया कि गांधी पार्क और परेड ग्राउंड के सामने ईवी चार्जिंग स्टेशन बनकर तैयार हैं। उन्होंने कहा कि सार्वजनिक रूप से चार्जिंग स्टेशन की सुविधा सुलभ होने से नागरिक ईवी वाहनों की दिशा में प्रेरित होंगे। साथ ही यह कदम पर्यावरण संरक्षण के लिए भी कारगर साबित होगा। साथ ही इससे ध्वनि प्रदूषण प्रदूषण पर भी अंकुश लगेगा। उन्होंने कहा कि बाकी स्थलों पर भी ईवी चार्जिंग स्टेशन का काम गतिमान है। शीघ्र इनका काम पूरा कर संचालन शुरू कराया जाएगा।

वर्तमान में शहर में कई स्थलों पर चार्जिंग प्वाइंट हैं, लेकिन वह प्रमुख स्थलों पर नहीं हैं। नए चार्जिंग स्टेशन के निर्माण के बाद यह कमी दूर हो जाएगी। नगर निगम, प्रशासन, यातायात पुलिस, सिंचाई विभाग और एमडीडीए के 08 अधिकारियों की टीम ने सर्वे के बाद इन स्थानों का चयन किया था। चिह्नितकरण नगर निगम/लोनिवि की अनुपयुक्त भूमि के रूप में किया गया है। चार्जिंग स्टेशनों का संचालन पीपीपी माडल पर किया जाएगा।

चार्जिंग स्टेशन के लिए निम्न स्थान चिह्नित किए गए हैं:-

पटेल पार्क के सामने (घंटाघर के पास)
गांधी पार्क के पास
परेड ग्राउंड के पास
पैसिफिक हिल्स (राजपुर रोड क्षेत्र)
आइएसबीटी के पास
बल्लूपुर के पास
रिस्पना पुल-आइएसबीटी रोड/विधानसभा के निकट/अजबपुर आरओबी
माल आफ देहरादून के पास

जो चार्जिंग प्वाइंट स्थापित किए जाएंगे, वह 45 से 50 मिनट के भीतर वाहन को चार्ज कर देंगे। एक प्वाइंट पर दो वाहन को एक साथ चार्ज किया जा सकता है।

देहरादून में वाहनों की संख्या 10 लाख से अधिक है। इसमें इलेक्ट्रिक वाहनों की बात की जाए तो यह अभी महज 11 हजार ही है। चार्जिंग स्टेशन की संख्या बढ़ाकर और वायु प्रदूषण के प्रति नागरिकों को जागरूक कर इलेक्ट्रिक वाहनों की संख्या बढ़ाई जा सकती है।

बैक्सी मोबिलिटी ने इलेक्ट्रिक 3-व्हीलर्स की नई रेंज लॉन्च की, छोटे कारोबारियों के लिए बेहद फायदेमंद

परिवहन विशेष न्यूज

बैक्सी ग्रुप की कंपनी बैक्सी मोबिलिटी ने इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर्स की नई रेंज लॉन्च की है। कंपनी ने पैसेंजर और कार्गो दोनों तरह के वाहन पेश किए हैं। ये वाहन लेड-एसिड और लिथियम-आयन बैटरी दोनों विकल्पों के साथ आते हैं। बैक्सी मोबिलिटी के इन उत्पादों में बैक्सी छोटू, बैक्सी शक्ति, बैक्सी टैक्सी और बैक्सी बॉस जैसे ई-रिक्शा व ई-ऑटो के साथ-साथ बैक्सी कब इलेक्ट्रिक ऑटो, ई-मैग्नेट और ई-मैग्नेट डिलीवरी वैन समेत कुछ 8 उत्पाद शामिल हैं।

बैक्सी मोबिलिटी का लक्ष्य किफायती और पर्यावरण के अनुकूल परिवहन विकल्प उपलब्ध कराना है। यह लॉन्च भारत के सतत गतिशीलता लक्ष्यों की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। बैक्सी मोबिलिटी पहले से ही आईसी इंजन में थ्री-व्हीलर्स बनाने के लिए जानी जाती है और अब इलेक्ट्रिक वाहन बाजार में अपनी स्थिति मजबूत कर रही है। इसके लिए कंपनी ने किफायती से लेकर प्रीमियम मॉडल तक कई तरह के विकल्प पेश किए हैं। ये वाहन अलग-अलग बैटरी विकल्पों के साथ आते हैं, जिससे ग्राहकों को अपनी जरूरत के हिसाब से चुनने का मौका मिलता है।

बैक्सी मोबिलिटी ने 'चार्ज करो, चल पढ़ो' अभियान के तहत इन इलेक्ट्रिक वाहनों को लॉन्च किया है। इन वाहनों को शहरों और गांवों दोनों में लोगों की परिवहन जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। कंपनी को उम्मीद है कि ये नए इलेक्ट्रिक थ्री-व्हीलर भारत में परिवहन क्षेत्र में क्रांति लाएंगे।

अपने नए उत्पादों के लॉन्च पर खुशी जताते हुए बैक्सी मोबिलिटी के प्रबंध निदेशक शिव बक्शी ने कहा कि नई रेंज बैक्सी समूह के लिए बहुत खास है, क्योंकि इसने भारत के लोगों को संधारणीय गतिशीलता प्रदान करने के हमारे सपने को साकार किया है। यह शहरों में किफायती गतिशीलता में क्रांति लाने में एक लंबा रास्ता तय करेगा और निश्चित रूप से भारत के संधारणीय गतिशीलता लक्ष्यों में एक बड़ा परिवर्तनकारी कदम होगा।

बैक्सी मोबिलिटी के सीईओ कुमार राममूर्ति ने भी इस लॉन्च पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कहा कि यह रेंज उन ग्राहकों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को दर्शाती है जो स्थिरता और विश्वसनीयता को प्राथमिकता देते हैं। यह पेशकश आवागमन की अर्थव्यवस्था को बढ़ाते हुए लागत प्रभावी समाधान प्रदान करने के हमारे समर्पण को दर्शाती है। उल्लेखनीय है कि बैक्सी मोबिलिटी देश के 18 राज्यों में अपने वाहन बेचती है और इस कंपनी के उत्पाद उत्तरी भारत में काफी लोकप्रिय हैं। बैक्सी ग्रुप में बैक्सी इंजीनियरिंग और बैक्सी मोबिलिटी के साथ-साथ बैक्सी एनवायरो बैक्सी इन्फोटेक जैसी विभिन्न कंपनियां हैं।

भारत के खिलाफ बड़ी साजिश

विजय गर्ग

यह औपनिवेशिक संस्कारों से अभी तक भी मुक्त न होने के कारण ही है। जार्ज इस मानसिकता को तो पहचानने ही लगे हैं। इसलिए वह गाहे बगाहे भारत के व्यक्तियों और संस्थाओं पर प्राय: आरोप लगाते रहते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से वह विपक्ष को समय कुसमय आरोप रूपी हथियार मुहैया करवाने का काम करते हैं, जिसकी विपक्ष प्रतीक्षा ही नहीं करता, बल्कि शायद आरोप मैनुफैक्चरिंग का आर्डर भी देता है। भाजपा का सोनिया गांधी व राज परिवार के अन्य सदस्यों पर यही आरोप है कि वे इन हथियारों के केवल खरीददार ही नहीं, बल्कि आदेश देकर भी इन हथियारों को तैयार करवाने वाले हैं। मैं यह मानने को तैयार नहीं कि कांग्रेस या कांग्रेस पर गेंडुली मार कर बैठे राज परिवार को जार्ज सोरोस के क्रियाकलापों एवं अन्य धंधों के बारे में पता न हो। सब जानते हैं कि पिछले कुछ सालों से वे उस हर बिल का विरोध करते हैं जो भारत की संसद पास करती है

पिछले दो दिनों से संसद में जार्ज सोरोस और सोनिया गांधी व राहुल गांधी की निकटता को लेकर हंगामा होता रहा। मूल रूप से जार्ज सोरोस हंगरी के हैं। लेकिन लंबा अरसा पहले वह अमरीका में आकर बस गए थे। लेकिन यह कोई ऐसी घटना नहीं है जिसके कारण सोरोस को कठघरे में खड़ा कर दिया जाए। इस लिहाज से तो अमरीका के 99 फीसदी लोग यूरोप से ही गए हुए हैं और वहां के नेटिव इंडियन को गुलाम बना कर वहां अपनी सत्ता बना कर बैठे हैं। इसलिए जार्ज सोरोस अमरीका में कोई अनोखे यूरोपीय नहीं हैं। लेकिन उनका अनोखापन इसके बाद शुरू होता है। उन्होंने अमरीका में अच्छा खासा पैसा कमा लिया है। यूरोप के लोग जब अमरीका में धन कुबेर बन जाते हैं तो वे कोई न कोई फाऊंडेशन चलाना शुरू कर देते हैं। यह उनका फालतू के समय का शौक है। फाऊंडेशन के नाम पर वे एशिया और अफ्रीका के मेधावी छात्रों को अमरीका में बुला कर कायदे से पढ़ाते-लिखाते हैं और फिर वापस एशिया और अफ्रीका के देशों में भेज देते हैं। 'कायदे से' का अर्थ तो सब समझते हैं। इसके अतिरिक्त ये फाऊंडेशन दूसरे देशों में बौद्धिक व राजनीतिक तोडफ़ोड़ अकादमिक तरीकों से करते रहते हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं मानना चाहिए कि जार्ज सोरोस जैसे धन कुबेरों का यह शौक है। वे ये सभी धंधे अमरीका के आर्थिक, सांस्कृतिक हितों की सुरक्षा के लिए करते हैं। इसको सभ्यताओं के संघर्ष की पृष्ठभूमि में भी देखा जा सकता है। भारत या एशिया के दूसरे देश यदि आर्थिक लिहाज से ताकतवर बनते हैं तो अमरीका व उसकी 'फाईव आईज' की आर्थिकता खतरे में पड़ जाती है। इस पूरी पृष्ठभूमि में अमरीका के जार्ज सोरोस को पकडऩा होगा। इस अमरीकी जार्ज का भी 'जार्ज सोरोस फाऊंडेशन' है। लेकिन मामला यहीं खत्म नहीं होता है। अमरीका के ऐसे फाऊंडेशन अनेक छोटी-बड़ी संस्थाओं को जन्म देते हैं जिनका वित्त पोषण फाऊंडेशन ही करते हैं। लेकिन साधारणतया किसी को यह पता नहीं चलता कि इन संस्थाओं का वित्त पोषण कौन करता है।

ऊपरी तौर पर ये संस्थाएं निर्दोष, बौद्धिक व अकादमिक संस्थाएं ही नजर आती हैं। जार्ज सोरोस फाऊंडेशन ने भी इस प्रकार की कुछ संस्थाओं को अंधेरे में जन्म दिया हुआ है। ऐसी ही एक संस्था फोरम ऑफ डेमोक्रेटिक लीडर्स इन एशिया पैसिफिक है। इस संस्था को पैसा जार्ज सोरोस ही देता है, चाहे सीधे हाथ से, चाहे उलटे हाथ से। यह संस्था जम्मू कश्मीर को भारत का हिस्सा नहीं मानती और दूसरे देश भी ऐसा ही करें, इसके लिए अकादमिक पर्दे में कोशिश करती रहती है। इतना ही नहीं, वह भारत का समाधान उसके टुकड़ों में बंट जाने को ही मानती है। भाजपा का आरोप है कि श्रीमती सोनिया गांधी के राजीव गांधी फाऊंडेशन का जार्ज सोरोस की इस संस्था से गहरा संबंध है। जार्ज सोरोस इस बात को छुपाते नहीं कि वह वचनों से ही भारत विरोधी नहीं हैं, बल्कि वह सक्रियता में भी भारत विरोधी हैं। ऐसे व्यक्ति और ऐसी संस्था से राजीव गांधी फाऊंडेशन का किस प्रकार का संबंध है, इसका खुलासा होना बहुत जरूरी है क्योंकि यह मामला भारत की सुरक्षा से जुड़ा हुआ है। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता शशि थरूर भी इस बात को नहीं छुपाते कि जार्ज सोरोस उनके मित्र हैं। ध्यान रहे कि कांग्रेस के ही एक बड़े नेता नटवर सिंह पहले ही कांग्रेस को आगाह कर चुके हैं कि पार्टी को अपने भीतर की तलाशी लेकर अपने घर में रह रही विदेशी शक्तियों के समर्थकों को बाहर करना चाहिए। लेकिन जब आरोप सोनिया गांधी पर हों तो तलाशी कौन लेगा और कौन किसको बाहर करेगा? जार्ज अमरीका के मीडिया पर भी कुछ सीमा तक नियंत्रण करते हैं, क्योंकि अखबार चला रही कम्पनियों में उनकी भारी हिस्सेदारी है। जार्ज सोरोस ने आर्गेनाइज्ड क्राइम एंड क्रप्शन रिपोर्टिंग प्रोजैक्ट नाम से एक संस्था खोल रखी है जो दूसरे देशों के नेताओं और व्यवसायियों को ब्लैकमेल करने का काम करती है। वह दूसरे देशों के उन नेताओं व व्यवसायियों पर कुछ आरोप लगाती है जिनको वह अपने हिसाब से चलाना चाहती है। जार्ज सोरोस जानते हैं कि लंबे अरसे तक यूरोपीय देशों के गुलाम रहने के कारण एशिया व अफ्रीका का जनसाधारण किसी भी यूरोपीय देश या अमरीका के किसी भी अदने से व्यक्ति के आरोप को भी सिर आंखों पर लेता है। यह औपनिवेशिक संस्कारों से अभी तक भी मुक्त न होने के कारण ही है। जार्ज इस मानसिकता को तो पहचानने ही लगे हैं। इसलिए वह गाहे बगाहे भारत के व्यक्तियों और संस्थाओं पर प्राय: आरोप लगाते रहते हैं। अप्रत्यक्ष रूप से वह विपक्ष को समय कुसमय आरोप रूपी हथियार मुहैया करवाने का काम करते हैं, जिसकी विपक्ष प्रतीक्षा ही नहीं करता, बल्कि शायद आरोप मैनुफैक्चरिंग का आर्डर भी देता है। भाजपा का सोनिया गांधी व राज परिवार के अन्य सदस्यों पर यही आरोप है कि वे इन हथियारों के केवल खरीददार ही नहीं, बल्कि आदेश देकर भी इन हथियारों को तैयार करवाने वाले हैं। मैं यह मानने को तैयार नहीं कि कांग्रेस या कांग्रेस पर गेंडुली मार कर बैठे राज परिवार को जार्ज सोरोस के क्रियाकलापों एवं अन्य धंधों के बारे में पता न हो। सब जानते हैं कि पिछले कुछ सालों से वे उस हर बिल का विरोध करते हैं जो भारत की संसद पास करती है। अनुच्छेद 370 को निरस्त किए जाने का उसने विरोध किया था। नागरिकता संशोधन अधिनियम का भी जार्ज विरोध करता था।

इसके बावजूद अपने-अपने फाऊंडेशनों के माध्यम से दोनों चोर-सिपाही का खेल, खेल रहे हैं, जो कभी भविष्य में काफी खतरनाक हो सकता है। लेकिन सत्ता पाने की हड़बड़ी में राज परिवार ऐसा घिनौना खेल भी खेलेगा, यह किसी को आशा नहीं थी। सबसे बड़ी बात यह थी कि कांग्रेस पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडग़े ने संसद में ही जार्ज सोरोस का पक्ष लेना शुरू कर दिया। इस सबसे इतना तो संकेत मिलता ही है कि कांग्रेस जार्ज को लेकर जरूर कुछ न कुछ छुपा रही है। देश को चिंता भी इसी बात को लेकर है। जब भारत के सैनिक सीमा पर लड़ रहे थे तो राजीव गांधी दिल्ली स्थित चीन के दूतावास में वहां के अधिकारियों के साथ गंभीर मंत्रणा करते पकड़े गए थे। यह संदिग्ध परंपरा की ओर भी संकेत करता है। सरकार को कांग्रेस की इस प्रकार की संदिग्ध गतिविधियों की गंभीरतापूर्वक जांच करवा लेनी चाहिए।

दोनों पक्षों से अपील

देखो भाई! अपील तीन-चार जगह ही होती है। मैच चल रहा हो तो गेंदबाज अंपायर के सामने बल्लेबाज के आउट होने की अपील करता है। यह पहली किस्म की अपील होती है। उसके बाद कोर्ट में भी अपील होती है। अपील के साथ दलील भी होती है। यहां मामला लंबा चलता है और बराबर सुनवाई चलती रहती है। एक अपील धार्मिक नेता करते हैं जब दंगे करवाने के बाद शांति बनाए रखनी होती है। राजनेता भी अपने-अपने दलों के कार्यकर्ताओं से समय-समय पर अपील करते रहते हैं। पहले प्रदर्शन करने की अपील करते हैं और उसके बाद जब प्रदर्शन में हिंसा हो जाती है तो शांति व्यवस्था बनाए रखने की अपील करते हैं। प्रशासन भी यदा-कदा ऐसी अपील करता रहता है। खुद को तीसमार खां समझने वाले भी कई बार अखबार में अपना नाम छपवाने के लिए घर बैठे-बैठे अपील जारी कर देते हैं। लेकिन आज की यह अपील सबसे हटकर है। यह कोई फालतू किस्म की अपील नहीं है। यह अपील कोई जनता जनार्दन से भी नहीं है। यह अपील दंगाइयों से भी नहीं है। प्रदर्शनकारियों से भी नहीं है। यह अपील सत्ता पक्ष और विपक्ष एक साथ दोनों से है। आमतौर पर व्यंग्यकार का काम व्यवस्था की चीरफाड़ करना होता है, अपील करना नहीं। लेकिन इधर व्यंग्यकार को मुगालता हो गया है कि दुनिया चाहे किसी की अपील माने या न माने, लेकिन व्यंग्यकार की अपील जरूर मानेगी।

सो अपना व्यंग्य धर्म निभाते हुए सबसे पहले तो सत्ता पक्ष से अपील है। और अपील यह है कि विपक्ष की चुनौती से घबराना नहीं है। विपक्ष के आरोपों से विचलित नहीं होना है। विपक्ष के धरना प्रदर्शन पर आंखें मूंदी रखनी है जैसे जनता की समस्याओं से आप आंख मूंद कर रखते हैं। ठेकेदारों और माफिया सरगनाओं पर कृपा बरसाते रहना है। उन्हें अपनी गाडियों में आप बिठा सकते हैं। आपको इसकी लोकतांत्रिक छूट मिली हुई है। आप बाहुबलियों को साथ लेकर घूमते हैं तो ठेकेदारों और सरगनाओं को लेकर घूमने से कोई आसमान नहीं फट जाएगा। दो-चार ठेकेदार और खनन माफिया के लोग अगर जांच एजेंसियों के हाथ भी चढ़ जाए तो घबराना नहीं है। विपक्ष का काम आपके खिलाफ बोलना है और आपका काम अपनी आर्थिक स्थिति मजबूत करना है। पार्टी आलाकमान तक थैलियां पहुंचाना है ताकि कुर्सी सलामत रहे और आलाकमान में बैठे बुद्धिजीवियों का वरदहस्त बना रहे। इस काम के लिए पब्लिक की जरूरत नहीं होती। भ्रष्ट ब्यूरोक्रेट और आपके संरक्षण में फलने-फूलने वाले माफिया के लोग आपके सबसे ज्यादा मददगार साबित होते हैं। इसलिए विपक्ष की परवाह नहीं करनी है। दूसरी तरफ इस व्यंग्यकार की विपक्ष से भी अपील है कि पब्लिक के सामने अपना अस्तित्व दिखाना है। अपनी नेतागिरी चमकानी है। जनता के हितों के प्रहरी बनना है। अगली बार सत्ता में आने के लिए वोट भी लेने हैं। इसलिए सत्ता पक्ष को डंडा देकर रखना है। हर रोज नए-नए भ्रष्टाचार के मामले उजागर करने हैं। धरना-प्रदर्शन करने हैं और इसमें आम आदमी को भी भागीदार बनाना है। लाठीचार्ज और आंसू गैस की परवाह नहीं करनी है। जितनी ज्यादा आंसू गैस और लाठियां चलेंगी, उतना ज्यादा जनमत आपके पक्ष में झुकेगा। जनमत का यही सूचकांक होता है। 'तो, सत्ता पक्ष और विपक्ष दोनों से यही विनम्र निवेदन है कि आप अपनी-अपनी भूमिकाओं को ईमानदारी से निभाते रहें। सत्ता पक्ष अपने भ्रष्टाचार के नए रिकॉर्ड बनाता रहे, और विपक्ष उन रिकॉड्र्स को तोडऩे के लिए हर रोज नया हंगामा खड़ा करता रहे। जनता? वह तो पहले भी आपकी तमाशबीन थी, और आगे भी रहेगी। बस एक ही गुजारिश है- अपनी लड़ाई में जनता को इतना मत उलझाइए कि उसे रोटी कमाने का समय भी न मिले। आखिर भूखी जनता से वोट की उम्मीद तो आप भी नहीं कर सकते, है न?'

टेंशन, नो टेंशन!

स्पिरिचुअल हीलर

जीवन है तो जीवन में हमारा वास्ता चार चीजों से पड़ता है और वे तीन चीजें हैं .. लोग, घटनाएं, स्थितियां और चीजें। हमारे परिवार के लोगों के अलावा, हमारे अन्य रिश्तेदार, आसपास के लोग, हमारे सहकर्मी, हमारे पड़ोसी, हमारे सहपाठी, हमारे मित्र, हमारे ग्राहक, हमारे सप्लायर आदि कई तरह के लोगों से हमारा वास्ता पड़ता है। इसी तरह जीवन में हर रोज नई घटनाएं घटती हैं, ङ्मद्दछ सुखद होती हैं, कुछ दुखद होती हैं। कुछ स्थितियों पर हम जल्दी नियंत्रण पा लेते हैं, कुछ स्थितियां हमें असहाय कर देती हैं, कुछ स्थितियां हमारी कमजोरियां जाहिर करती हैं, जबकि कुछ स्थितियां हमारी मजबूती का कारण बन जाती हैं। कुछ चीजें हमें प्रिय होती हैं, कुछ अप्रिय होती हैं, कुछ के प्रति हम बेपरवाह होते हैं। लोगों, घटनाओं, स्थितियों और चीजों में से किन्हीं दो या दो से अधिक के घालमेल से हमारे अनुभव बनते हैं। अनुभव सुखद हो या दुखद, ये अनुभव ही हमारा जीवन बनते हैं। हमारे अनुभव कैसे हों, यह हमारी मानसिकता पर, हमारी सोच पर, हमारे माइंडसेट पर निर्भर करता है। हमारे संपर्क में आने वाले लोगों से, रोज घटने वाली उन घटनाओं से, विभिन्न स्थितियों आदि से हमें जो महसूस होता है, हम उन पर जैसे प्रतिक्रिया करते हैं, उनसे हमारे अनुभव बनते हैं। इन खट्टे, मीठे, कड़ुवे अनुभवों से ही हमारा जीवन बनता है। हम बहुत सी स्थितियों को, चीजों को और शायद कुछ लोगों की कुछ बातों को भी बदल सकते हैं, पर सब कुछ नहीं बदल सकते।

सिर्फ एक चीज ऐसी है जिस पर हमारा पूरा नियंत्रण संभव है और अगर हम जागरूक रहें तो हम उसे पूरा का पूरा बदल सकते हैं और वह एक चीज है, किसी भी हालात में हमारी प्रतिक्रिया क्या हो, इस पर हमारा पूरा नियंत्रण संभव है। अगर हम जागरूक रहें तो हम किसी भी हालात में, किसी भी घटना पर अपनी प्रतिक्रिया को नियंत्रित करके उसे बदल सकते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रतिक्रिया बदल देने मात्र से हमारे अनुभव बदल जाते हैं, और हमारे अनुभव बदलते हैं तो हमारा जीवन बदल जाता है। इसलिए आवश्यक यह है कि अपनी प्रतिक्रियाओं पर नियंत्रण करना सीखा जाए। हमारी प्रतिक्रिया बदलती है तो हमारी ऐक्शन बदल जाती है, उससे जीवन की चिंताओं, अवसाद अथवा अकेलेपन से पार पाना आसान हो जाता है। दुख के बावजूद, उदासी के बावजूद, चिंताओं के बावजूद हम कितनी जल्दी उससे उबर पाते हैं। विचारों से प्रतिक्रिया तक की पूरी प्रक्रिया को अगर हम समझ लें तो प्रतिक्रिया को बदलना और दुख भरी स्थितियों से उबरना आसान हो जाता है। यह समझना आवश्यक है कि सबसे पहले हमारे दिमाग में कोई विचार आता है। अगर हम उस विचार के बारे में गंभीर हैं तो वो विचार, वो खयाल हमारी बातचीत में उतर आता है, हम उसका जिक्र करने लगते हैं, अपने आसपास के लोगों से उसकी चर्चा करने लगते हैं। तब वो खयाल, खयाल न रहकर हमारी चर्चा का विषय बन जाता है और हमारे दृष्टिकोण को प्रभावित करता है, हमारे सोचने का अंदाज बदल देता है, हमारा विश्वास बन जाता है, और जो विचार, जो खयाल हमारा नजरिया बदल दे, हमारा विश्वास बन जाए, वो हमारा व्यवहार बन जाता है, हमारा आचरण बन जाता है और अंततः वो हमारी ऐक्शन बन जाता है। ये खयालों की यात्रा है, विचार से लेकर ऐक्शन बनने तक की यात्रा है। यही हमारी प्रतिक्रिया है। इस प्रक्रिया को समझ लें तो हम अपने विचारों की महत्ता को समझ जाते हैं, और उनसे होने वाले परिणाम को भी समझ जाते हैं। यही तरीका है जिससे हम अपने विचारों को नियंत्रित कर सकते हैं।

अपने नजरिये के बारे में जागरूक होकर हम अपने व्यवहार को नियंत्रित करके अपनी ऐक्शन्स को भी नियंत्रित कर सकते हैं। ऐसा हो गया तो जीवन हमारे नियंत्रण में हो गया, हम जीवन में घटने वाली घटनाओं के नियंत्रण में नहीं रहे, जीवन हमारे नियंत्रण में हो गया। चिंता से और अवसाद से उबरने का एक ही तरीका है कि हम अपने विचारों पर नियंत्रण करें, ताकि प्रतिक्रिया पर नियंत्रण हो सके, हमारा व्यवहार बदल सके और हम खुशहाल जीवन जी सकें। चिंता और अवसाद, यानी डिप्रेशन में भी अंतर है। जब हम स्थितियों के हाथों विवश महसूस करें, हमारा लगातार अपमान होता रहे, हम मनचाही सफलता न पा सकें, हमारा कोई प्रियजन हमसे बिछुड़ जाए या कोई बड़ा नुकसान हो जाए तो हम दुखी हो जाते हैं, तनावग्रस्त हो जाते हैं और यह स्थिति लंबे समय तक चले तो अवसाद बन जाती है। यानी, कोई पहले से घटी हुई घटना या दुर्घटना हमारे अवसाद का कारण बनती है। चिंता इससे बिल्कुल अलग है। चिंता किसी अनहोनी की आशंका को लेकर होती है। हमारे साथ भविष्य में जो बुरा हो सकता है, उसके खयाल के कारण चिंता होती है। अवसाद भूतकाल में घटी किसी घटना या दुर्घटना के कारण होता है, जबकि चिंता भविष्य में हो सकने वाली किसी घटना या दुर्घटना की आशंका से आती है। चिंता जिस कारण से होती है, वह अभी घटा नहीं है, पर हमें आशंका होती है कि हमारे साथ ऐसा हो सकता है और अगर सचमुच वैसा हो गया तो हमारा क्या होगा? अवसाद से उबरने के दो साधन हैं, पहला तो यह कि हम यह समझ लें कि जो घट चुका है, वह घट चुका है, वह बीत चुका है, वह बीते हुए कल की बात है और कल पहले ही जा चुका है। उसके कारण अपने आज को बिगाडऩे के बजाय हम यह सोचें कि हम आज ऐसा क्या कर सकते हैं जिससे बीती हुई घटना के कारण हो चुके नुकसान की भरपाई संभव हो।

दुखी होने के बजाय 'ऐक्शन मोड' में आना जरूरी है। अवसाद से बचने का दूसरा साधन यह है कि हम अपने किसी मनपसंद काम में व्यस्त हो जाएं ताकि अवसाद की ओर से हमारा फोकस हट जाए। इस तरह अवसाद पर काबू पाया जा सकता है। उसके लिए मित्रों और परिवार का सहयोग भी मिले तो काम बहुत आसान हो जाता है। चिंता से बचने का तरीका यह है कि हम देखें कि समस्या क्या है, उसे कितने छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटा जा सकता है, समस्या के उस छोटे टुकड़े के हल के लिए हम क्या कर सकते हैं, उसके लिए हमारे पास क्या साधन होने चाहिएं, समस्या के उस हिस्से के समाधान के लिए हम किसकी सहायता ले सकते हैं, इस चिंतन से, इस विश्लेषण से समस्या का समाधान संभव है। समस्या नहीं रहेगी तो चिंता खुद-ब-खुद गायब हो जाएगी। यानी, चिंता से बचने के लिए चिंतन की, समस्या के विश्लेषण की आवश्यकता है। चिंता हमारा दिमाग बंद कर देती है और हमें असहाय बना देती है, जबकि चिंतन से हम नए हल खोज सकते हैं और समस्या का निदान पा सकते हैं।

प्रशिक्षकों को नकद ईनाम क्यों नहीं दिया

भूपिंद्र सिंह

क्या हिमाचल सरकार पंजाब, गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढिय़ा प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाडिय़ों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिलाकर खेल प्रतिभा का पलायन रोक नहीं सकती है'

हिमाचल प्रदेश सरकार ने अंतरराष्ट्रीय खिलाडिय़ों को उनके द्वारा जीते गए पदकों के अनुसार नकद ईनाम दिया, मगर उनके प्रशिक्षकों को इस बार भी नकद ईनाम नहीं दिया गया, जबकि नई खेल नीति में खिलाड़ी के प्रशिक्षक को भी नकद ईनाम का प्रावधान है। खेल विभाग क्यों प्रशिक्षकों के साथ सौतेला व्यवहार कर रहा है? कबड्डी में भारतीय टीम की कप्तान रितु नेगी सहित कई खिलाडिय़ों को कोच रतन ठाकुर ने तराशा है। क्या वह नकद ईनाम के हकदार नहीं हैं? इसी तरह अन्य खेलों के प्रशिक्षक भी हैं। आज का अभिभावक खेलों में भी अपने बच्चों का कैरियर देख रहा है, क्योंकि खेल आज अपने आप में एक प्रोफैशन है। मानव ने विज्ञान में बहुत प्रगति कर प्रौद्योगिकी व चिकित्सा के क्षेत्र में नए-नए सफल शोध कर जीवनशैली को काफी आसान व सुविधाजनक बना लिया है, मगर शिक्षण व प्रशिक्षण में शिक्षक व प्रशिक्षक की भूमिका का महत्व आज भी वही है, जैसा हजारों साल पहले था। यह चिंताजनक है। महाभारत में कृष्ण सारथी नहीं होते तो क्या अर्जुन भीष्म, कर्ण व अन्य अजेय महारथियों को हरा पाता? विश्व स्तर पर किसी खेल विशेष में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए क्षमतावान प्रशिक्षक का होना बेहद जरूरी होता है। हमारे यहां खेल प्रशिक्षण के लिए वह वातावरण ही नहीं बन पाया है जिसमें प्रशिक्षक खिलाड़ी से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट परिणाम दिला सके। खेल प्रशिक्षण दस साल से भी अधिक समय तक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इतनी समय अवधि खेल प्रशिक्षण को देकर ही खिलाड़ी अपने प्रदेश व देश को गौरव दिला पाता है। हिमाचल प्रदेश में लगातार प्रशिक्षण कार्यक्रम का कोई भी प्रावधान अभी तक नहीं बन पाया है।

हिमाचल प्रदेश राज्य युवा सेवाएं एवं खेल विभाग के प्रशिक्षकों को कभी विभिन्न विभागों की भर्तियों में ड्यूटी, तो कभी मेलों व उत्सवों में हाजिरी भरनी पड़ती है। खेल प्रशिक्षक की नियुक्ति ही उच्च खेल परिणामों के लिए की गई होती है, मगर यहां पर प्रशिक्षकों को केवल मल्टीपर्पज कर्मचारी बना दिया गया है। हिमाचल प्रदेश के अधिकतर प्रशिक्षकों का कार्य उच्च खेल प्रशिक्षण से हट कर अपनी फिटनेस तथा सेना में भर्ती कराने तक सीमित हो गया है। हिमाचल प्रदेश के मेलों व उत्सवों में किसी और खेल का प्रशिक्षक किसी और ही खेल की प्ले फील्ड में नजर आता है। इसी तरह पुलिस आदि विभागों की भर्तियों में एथलेटिक्स प्रशिक्षकों की ड्यूटी तो समझ आती है, मगर वहां तो हर खेल के प्रशिक्षक को भेज दिया जाता है। विभिन्न सरकारों ने खेल ढांचे में काफी तरक्की भी की है, मगर क्षमतावान प्रशिक्षकों की नियुक्ति के बारे में हिमाचल में अभी तक कुछ भी नहीं हो पाया है। स्तरीय प्रशिक्षकों के बिना उत्कृष्ट प्रदर्शन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। जो प्रशिक्षक खेल प्रशिक्षण से दूर रह कर मौज मस्ती कर रहा है, वह तो खुश रहता होगा, मगर जो सच ही में प्रशिक्षण करवा रहा होगा, वह जब कई दिनों तक खेल मैदान से दूर रहेगा तो फिर कौन अभिभावक अपने बच्चे को बिना प्रशिक्षक के मैदान में भेजेगा? हद तो तब हो जाती है जब राज्य में चल रहे खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी भर्तियों में लगा दी जाती है और खेल छात्रावास में रह रहे खिलाडिय़ों को भी खेल प्रशिक्षण से दूर कर दिया जाता रहा है। प्रतिभा खोज से चयनित इन अति प्रतिभाशाली खिलाडिय़ों को प्रशिक्षक से कुछ समय के लिए ही सही, इस तरह प्रशिक्षण कार्यक्रम से दूर करना कहां तक उचित है? खेल छात्रावासों में नियुक्त प्रशिक्षकों की ड्यूटी खेल प्रशिक्षण के सिवा और कहीं भी नहीं होनी चाहिए। आजकल हर शिक्षित मां-बाप के दो और कई जगह तो एक ही बच्चा है, ऐसे में वे उसे उस क्षेत्र में उच्चतम शिखर तक ले जाना चाहते हैं जिसमें बच्चे की रुचि व उस क्षेत्र के लिए पर्याप्त प्रतिभा भी हो। आज का अभिभावक अपने बच्चों के कैरियर की खातिर ही सरकार की मुफ्त शिक्षा सुविधाओं को छोडक़र निजी क्षेत्र की महंगी, मगर अधिक गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए लाखों रुपए खर्च कर रहा है।

आज लाखों प्रतिभाशाली विद्यार्थी निजी कोचिंग संस्थानों में डाक्टर व इंजीनियर बनने इसलिए जमा दो की परीक्षा से कई वर्ष पहले पहुंच रहे हैं। इसी तरह अब खेल क्षेत्र में भी हो रहा है। अभिभावक अपने बच्चों के लिए खेलों में भी कैरियर तलाश रहा है और इस सबके लिए अच्छी खेल सुविधाओं के साथ-साथ उच्च स्तरीय प्रशिक्षक भी लगातार कई वर्षों तक उसके बच्चों को मिलना चाहिए ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पदक विजेता बनने का सफर सफलतापूर्वक पूरा कर सकें। इसलिए देश में निजी खेल अकादमियों का चलन भी बढ़ रहा है। गोपीचंद बैडमिंटन अकादमी के विश्व स्तर के परिणाम सबके सामने हैं। यह सब लगातार अच्छे प्रशिक्षण कार्यक्रम का ही नतीजा है। इस समय विभिन्न खेलों के लिए देश में निजी स्तर पर कई अकादमियां शुरू हो चुकी हैं। इन खेल अकादमियों को अधिकतर पूर्व ओलंपियन चला रहे हैं और यहां से अच्छे खेल परिणाम भी मिल रहे हैं। इन अकादमियों में जो विशेष है, वह यह है कि यहां उच्च क्षमता वाला प्रशिक्षक लगातार उपलब्ध है। हिमाचल प्रदेश के पास आज विभिन्न खेलों के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्ले फील्ड तैयार हैं। वहां पर या तो प्रशिक्षक हैं ही नहीं और जहां हैं भी, वे या तो प्रशिक्षण से बेरुख हैं या उनमें अच्छे स्तर के खेल परिणाम दिलाने की क्षमता ही नहीं है।

क्या हिमाचल सरकार पंजाब, गुजरात आदि राज्यों की तरह उत्कृष्ट खेल परिणाम दिलाने वाले बढिय़ा प्रशिक्षकों को यहां लगातार कई वर्षों के लिए अनुबंधित कर प्रदेश के खिलाडिय़ों को राज्य में ही प्रशिक्षण सुविधा दिलाकर खेल प्रतिभा का पलायन रोक नहीं सकती है? इससे प्रदेश में खेल वातावरण बनेगा, तो हर खेल प्रशिक्षक प्रेरित होकर चाहेगा कि उसके शिष्य भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करें। इस सबके लिए खेल विभाग व जहां प्रशिक्षक प्रशिक्षण करवा रहा है, वहां उसे सही प्रबंधन दें तथा उनके खिलाड़ी जब पदक जीतें तो प्रशिक्षक को भी नई खेल नीति के अनुसार नकद ईनाम देकर प्रेरित करें, ताकि पहाड़ की संतानों को ओलंपिक व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए अच्छा प्रशिक्षण मिले।

साइबर क्राइम से निजी जानकारी-सुरक्षा को खतरा

प्रो. मनोज डोगरा

इनसे बचाव के लिए कदम उठाना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। साइबर अपराधों से जुड़ी कुल लागत और जोखिम लगातार बढ़ रहे हैं। इसलिए रोकथाम प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों को लगातार लागू करने, निगरानी करने और अपग्रेड करने की आवश्यकता भी बढ़ रही है। विदेशी विरोधियों, आतंकवादियों और रोजमर्रा के घोटालेबाजों के बीच, साइबर हमले ज्यादा चालाक और ज्यादा परिष्कृत होते जा रहे हैं

वर्तमान युग तकनीकी व साइबर विकास का है, प्रौद्योगिक क्रांति का है। अनेक कार्य तकनीक की सहायता से सुगम हो चुके हैं। सभी कार्य आसानी से घर बैठे सम्पन्न हो जाया करते हैं। बाजार की पहुंच भी घर तक सुनिश्चित हो चुकी है, लेकिन इसी क्रम में अपराधियों की पहुंच भी सीधे घर तक हो गई है। पलक झपकते ही अपराधी अपने मंसूबों को अंजाम दे डालते हैं। भारत जहां विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ रहा है, मगर दूसरी तरफ अपराधी भी अपना तकनीकी विकास कर धड़ल्ले से लोगों की मेहनत की कमाई उड़ा रहे हैं। तकनीक में तेजी से बढ़ रहे साइबर अपराध ने लोगों की निजी जानकारी और सुरक्षा को खतरे में डाल दिया है। साइबर अपराध के कई प्रकार हैं, चाहे वो जानकारी चोरी करना हो, हैकिंग हो, फिशिंग हो, वायरस फैलाना हो, सॉफ्टवेयर पाइरेसी, फर्जी बैंक कॉल, सोशल नेटवर्किंग साइटों पर अफवाह फैलाना व साइबर बुलिंग इत्यादि हो। इस प्रकार के अपराधों में निरंतर वृद्धि चिंताजनक है। जिस देश का प्रधानमंत्री स्वयं मन की बात जैसे देशव्यापी कार्यक्रम के माध्यम से चिंता व्यक्त कर इससे बचने हेतु आगाह कर रहा हो, सोचिए वो कितनी बड़ी समस्या बनती जा रही है। प्रधानमंत्री मोदी का देशवासियों से आग्रह है कि जब भी कोई कॉल आए तो घबराने की आवश्यकता नहीं है, बल्कि रुको, सोचो, फिर एक्शन लो। इस क्रम को अपनाने की आवश्यकता है।

एनसीआरबी की रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2022 में साइबर क्राइम के 65893 मामले देश भर में दर्ज किए गए हैं। साल 2021 में 52974 मामले दर्ज किए गए थे। इस तरह एक साल के दौरान साइबर अपराध में 24.4 फीसदी की वृद्धि दर्ज की गई है। इनमें भी करीब 65 फीसदी मामले धोखाधड़ी के ही हैं। यानी 65893 मामलों में 42710 धोखाधड़ी के मामले हैं, जबकि 3648 मामले जबरन उगाही के हैं। 2023 व 2024 में भी स्थिति कोई संतोषजनक नहीं, बल्कि ये छलांग मार कर तेज गति से बढ़ रहे हैं। भारत में उभरती साइबर सुरक्षा चुनौतियों के लिए निरंतर नवाचार और तत्परता की आवश्यकता है। साइबर सुरक्षा में विशेषज्ञता रखने वाली संस्थाओं और स्टार्टअप्स के साथ साझेदारी करने से नए विचार और विशेष विशेषज्ञता सामने आ सकती है। यह समग्र दृष्टिकोण न केवल व्यवसायों और व्यक्तियों की सुरक्षा करेगा, बल्कि भारत के डिजिटल पारिस्थितिकी तंत्र के समग्र विकास में भी योगदान देगा। भारत भर में एक परेशान करने वाली घटना सामने आई है, जिसमें साइबर धोखाधड़ी ग्रामीण इलाकों में सीमित डिजिटल जानकारी रखने वाले लोगों से लेकर शहरी इलाकों में तकनीकी रूप से दक्ष लोगों तक को अंधाधुंध तरीके से निशाना बना रही है। भारत आज भले ही डिजिटल विकास के छोर पर आकर बैठा है, लेकिन कंपनियों को सुनिश्चित करना है कि वे डिजिटल विकास से आने वाले अवसरों का लाभ उठाने के लिए तैयार हैं भी या नहीं। ऐसा करने का एकमात्र तरीका यह सुनिश्चित करना है कि कंपनी व बोर्ड के एजेंडे में साइबर सुरक्षा सर्वोपरि हो ताकि डिजिटल संग्रह की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। भले मानने योग्य है कि जागरूकता की कमी है, लेकिन हैकर सब कुछ इस तरीके से करते हैं कि आपकी जागरूकता धरी की धरी रह जाती है। इसमें सुरक्षा उपायों की कमी महसूस होती है। सरकार व प्रशासन अपने स्तर पर हरसंभव प्रयास कर रहे हैं, लेकिन इसका सबसे महत्वपूर्ण व आवश्यक इलाज जागरूकता ही प्रतीत होती है। साइबर अपराध एक सामान्य शब्द है जो कंप्यूटर, नेटवर्क या डिजिटल उपकरणों के किसी अन्य सेट का उपयोग करके की जाने वाली असंख्य आपराधिक गतिविधियों का वर्णन करता है। साइबर अपराध को साइबर अपराधियों द्वारा की जाने वाली अवैध गतिविधियों की विशाल श्रृंखला के अंतर्गत माना जाता है। इनमें हैकिंग, फिशिंग, पहचान की चोरी, रैनसमवेयर और मैलवेयर हमले, कई अन्य शामिल हैं। साइबर अपराध की पहुंच कोई भौतिक सीमा नहीं जानती। अपराधी, पीड़ित और तकनीकी अवसंरचना दुनिया भर में फैली हुई है। व्यक्तिगत और उद्यम स्तर पर सुरक्षा कमजोरियों का फायदा उठाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ, साइबर अपराध कई रूप लेता है और लगातार विकसित होता रहता है। बदले में, साइबर अपराधों की प्रभावी जांच, मुकदमा चलाने और उन्हें रोकने की क्षमता कई गतिशील चुनौतियों के साथ एक सतत लड़ाई है। साइबर अपराध व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारी संस्थाओं के लिए एक गंभीर खतरा हैं और इसके परिणामस्वरूप महत्वपूर्ण वित्तीय नुकसान, प्रतिष्ठा को नुकसान और रिकॉर्ड से समझौता हो सकता है।

जैसे-जैसे तकनीक आगे बढ़ती है और अधिक से अधिक लोग मानक संचालन के लिए डिजिटल उपकरणों और नेटवर्क पर निर्भर होते हैं, साइबर अपराध का खतरा बढ़ता जा रहा है। इनसे बचाव के लिए कदम उठाना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। साइबर अपराधों से जुड़ी कुल लागत और जोखिम लगातार बढ़ रहे हैं। इसलिए रोकथाम प्रणालियों और प्रौद्योगिकियों को लगातार लागू करने, निगरानी करने और अपग्रेड करने की आवश्यकता भी बढ़ रही है। विदेशी विरोधियों, आतंकवादियों और रोजमर्रा के घोटालेबाजों के बीच, साइबर हमले ज्यादा चालाक और ज्यादा परिष्कृत होते जा रहे हैं। व्यक्तियों, व्यवसायों और सरकारी संस्थाओं को साइबर अपराध को सुरक्षा प्रणालियों में घुसपैठ करने और संवेदनशील डेटा में घुसपैठ करने से रोकने के लिए सक्रिय उपाय करने चाहिएं। जबकि कुछ साइबर अपराध रोकथाम रणनीतियां हमलावरों को रोकने में दृढ़ हैं, इन पहलों का समर्थन करने में मदद करने के लिए आधुनिक तकनीकों की एक नई लहर भी आई। इसके बावजूद सचेत होकर कार्य करने की जरूरत है।

कितनी भी हो सैलरी, ऐसे बनाएं बजट- कभी कम नहीं पड़ेंगे पैसे

परिवहन विशेष न्यूज

50-30-20 Formula जॉब के साथ सेविंग करना बहुत जरूरी है। ऐसे में सेविंग और खर्चों को मैनेज करना कभी-कभी मुश्किल हो जाता है। ऐसे में एक सही बजट बनाना काफी जरूरी है। इसके लिए फाइनेंशियल 50-30-20 फॉर्मूला काफी कारगार साबित होता है। हम आपको इस आर्टिकल में बताएंगे कि 50-30-20 फॉर्मूला क्या है और यह कैसे काम करता हैं। पढ़ें पूरी खबर...

नई दिल्ली। हम जॉब करते हैं तो साथ में जिम्मेदारी भी आती है। हम कोशिश करते हैं कि अपने माता-पिता को कोई आर्थिक मदद करें। इसके अलावा हम ज्यादा से ज्यादा सेविंग करने की भी कोशिश करते हैं। लेकिन, इसके लिए सही प्लानिंग होना जरूरी है। प्लानिंग के साथ बजट और अनुशासन का भी अहम रोल है।

हम आपको आप फाइनेंशियल सशक्त होने और सही बजट तैयार करने में मदद करेंगे। वैसे तो वित्तीय तौर पर बजट बनाने के लिए कई फॉर्मूला है, लेकिन इन फॉर्मूला में सबसे पॉपुलर 50-30-20 फॉर्मूला (50-30-20 Formula) है।

क्या है 50-30-20 फॉर्मूला? (What is 50-30-20 Formula?)

इस फॉर्मूला में आप अपनी सैलरी को तीन भाग में बांटते हैं। फॉर्मूला में 50 फीसदी हिस्सा खर्च, 30 फीसदी जरूरत और 20 फीसदी सेविंग होता है। यह फॉर्मूला सेविंग के साथ एक्सपेंस को मैनेज करने में भी मदद करता है। इसके अलावा यह कई फाइनेंशियल गोल को पूरा करने में भी हेल्प करता है।

कैसे काम करता है ये फॉर्मूला? (How does the 50-30-20 Formula work?)

28 वर्षीय पूजा दिल्ली के पीजी में रहती है। वह मासिक 50,000 रुपये कमाती है। इसमें से वह हर महीने 10,000 रुपये अपने माता-पिता को भेजती है। अब सवाल आता है कि वह इस फॉर्मला के मदद से अपने खर्चों और आवश्यकताओं के साथ सेविंग कैसे करेगी?

पूजा हर महीने अपनी सैलरी से 10,000 रुपये माता-पिता को देती है। इसके बाद उसकी कुल सैलरी 40,000 रुपये होती है। 50-30-20 फॉर्मूला के हिसाब से पूजा को मासिक सैलरी का 50 फीसदी हिस्सा यानी 20,000 रुपये खर्च में होंगे। इस खर्च में पीजी का किराया, खाना,बिजली बिल आदि शामिल हैं।

अब बाकी बचे 50 फीसदी सैलरी को दो भाग में बांटे। बची हुई सैलरी का 30 फीसदी हिस्सा यानी 12,000 रुपये का इस्तेमाल जरूरत के लिए करें। जरूरत से हमारा मतलब लाइफस्टाइल से है जैसे जिम या कोई वर्कशॉप आदि पर खर्च करें। आपको कोशिश करना चाहिए कि आप इन आवश्यकता में से भी कुछ राशि अवश्य बचाएं जो आपके छोटे गोल जैसे ट्रैवल ट्रिप या किसी महंगे ब्रांड के क्लोथ और स्मार्टफोन आदि को पूरा करने में मदद करें।

अब बाकी बचे 20 फीसदी यानी 8,000 रुपये को सेव करें। अपनी सेविंग और निवेश के साथ आपको हर महीने कुछ राशि इमरजेंसी फंड (Emergency Fund) में डालना चाहिए जो आपात स्थिति में आपको वित्तीय मदद करें। इसके अलावा आपको कुछ राशि को इन्वेस्ट करना चाहिए ताकि आपको रिटर्न मिले जो आपकी सेविंग को बढ़ाने में मदद करें। हालांकि, आपको इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि आपके सेविंग अकाउंट में हमेशा बैलेंस रहे जो मेडिकल इमरजेंसी में मदद करें।

75 करोड़ से ज्यादा लोगों को मिल रहा आर्थिक सुरक्षा योजनाओं को लाभ, लोगों को पसंद आ रही हैं ये तीन स्कीम

परिवहन विशेष न्यूज

सरकार ने लोगों को लाभ देने और आर्थिक तौर पर सुरक्षित करने के लिए कई योजनाओं चला रही है। इन योजनाओं का लाभ करोड़ों लोगों को मिल रहा है। हाल ही में आए एक रिपोर्ट के अनुसार इन योजना का लाभ 75 करोड़ से ज्यादा लोगों को मिल रहा है। सरकारी योजनाओं में से तीन स्कीम काफी पॉपुलर है। पढ़ें पूरी खबर....

नई दिल्ली। समाज के निचले तबके तक आर्थिक और सामाजिक सुरक्षा पहुंचाने के लिए केंद्र सरकार कई योजनाएं चला रही है। इसमें वित्तीय सुरक्षा से जुड़ी तीन योजनाएं प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना (पीएमजेजेबीवाई), प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना (पीएमएसबीवाई) और अटल पेंशन योजना (एपीएस) प्रमुख हैं। इन तीनों योजनाओं के दायरे में लगातार विस्तार हो रहा है।

वित्त मंत्रालय के अनुसार, इस समय इन तीनों योजनाओं का लाभ 75 करोड़ से ज्यादा देशवासियों को मिल रहा है। आइए इन तीनों योजनाओं के बारे में विस्तार से जानते हैं।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना

यह एक वार्षिक जीवन बीमा योजना है। इसमें हर वर्ष 436 रुपये का प्रीमियम देना होता है। योजना में लाभार्थी की मौत पर परिवार को दो लाख रुपये की मदद मिलती है। 18-50 वर्ष की उम्र का कोई भी व्यक्ति इस योजना में नामांकन करा सकता है। अब तक इस योजना में 21.67 करोड़ लोग पंजीकरण करा चुके हैं। अब तक 8,60,575 दावों के सापेक्ष 17,211.50 करोड़ रुपये का भुगतान हो गया है।

प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना

यह एक दुर्घटना बीमा योजना है, जिसमें हर वर्ष 20 रुपये का प्रीमियम देना होता है। लाभार्थी की हादसे में मौत पर योजना के तहत परिवार को दो लाख रुपये मिलते हैं। हादसे में आंशिक रूप से दिव्यांग होने पर एक लाख रुपये की मदद दी जाती है। 18-70 वर्ष का व्यक्ति बैंक या पोस्ट ऑफिस के जरिये योजना में नामांकन करा सकता है। अब तक इस योजना में 47.59 करोड़ लोग अपना पंजीकरण करा चुके हैं। अब तक 1,93,964 दावों के सापेक्ष में 1,47,641 दावों का निपटान किया जा चुका है।

अटल पेंशन योजना

यह एक मासिक पेंशन योजना है जिसमें 60 वर्ष की आयु के बाद एक से पांच हजार रुपये तक पेंशन मिलती है। मासिक पेंशन की यह राशि सब्सक्राइबर के योगदान पर आधारित होती है। दो दिसंबर 2024 तक इस योजना से 7.15 करोड़ से ज्यादा सब्सक्राइबर जुड़े हैं। योजना में मासिक, तिमाही या छमाही आधार पर योगदान दिया जा सकता है। सब्सक्राइबर की मौत होने पर उनके पति या पत्नी को पूरी पेंशन मिलती है। 18 वर्ष या इससे ज्यादा उम्र का कोई भी व्यक्ति योजना में नामांकन करा सकता है।

महंगाई दर के अलावा बाजार के लिए अहम रहेंगे कई फैक्टर्स, बाजार में तेजी आने की है उम्मीद

बाज़ार दृष्टिकोण दिसंबर का तीसरा सप्ताह कल से शुरू हो जाएगा। यह सप्ताह भी बाजार के लिए अहम रहने वाले हैं। बाजार की चाल पर कई फैक्टर्स का असर रहेगा। इस हफ्ते शेयर बाजार मं तेजी आने की उम्मीद है। सोमवार को थोक महंगाई के आंकड़े जारी होंगे इसका असर बाजार पर देखने को मिल सकता है। पढ़ें पूरी खबर...

नई दिल्ली। 16 दिसंबर 2024 से नया कारोबारी हफ्ता शुरू हो जाएगा। इस हफ्ते शेयर बाजार के लिए कई फैक्टर्स अहम रहने वाले हैं। मार्केट एनलिस्ट ने बताया इस सप्ताह यूएस फेड ब्याज दर निर्णय, मुद्रास्फीति डेटा और एफआईआई बाजार के लिए अहम फैक्टर्स रहने वाले हैं। इन सभी फैक्टर्स के कारण इस सप्ताह शेयर बाजारों में तेजी आने की उम्मीद है। हालांकि, विदेशी निवेशकों द्वारा अपनाए जाने वाले रुख पर नजर रहेगी।

भारतीय शेयर बाजार पर वैश्विक और घरेलू कारकों का प्रभाव पड़ सकता है। वैश्विक रुझान, विशेष रूप से अमेरिकी बाजारों का प्रदर्शन और फेड की मौद्रिक नीति निर्णय मार्केट के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। इसके अलावा थोक महंगाई दर भी बाजार के लिए अहम रहेगा।

प्रवेश गौड़, वरिष्ठ तकनीकी विश्लेषक, स्वस्तिका इन्वेस्टमार्ट लिमिटेड

इसके आगे उन्होंने कहा कि विदेशी और घरेलू संस्थागत निवेश का प्रवाह भी एक बाजार का प्रमुख चालक होगा। वहीं, रुपये की विनिमय दर और कच्चे तेल की कीमतें बाजार की दिशा के महत्वपूर्ण निर्धारक होंगे।

रेलिगेयर ब्रोकिंग लिमिटेड के एसवीपी, रिसर्च, अजीत मिश्रा के अनुसार स्टॉक मार्केट का मुख्य फोकस अमेरिकी फेडरल रिजर्व की बैठक पर होगा। इस पहले दर में 25 बीपीएस की कटौती हो गई है। ऐसे में इंटरेस्ट रेट पर फेड की टिप्पणी महत्वपूर्ण महत्व रखेगी।

एलआईसी ने महिलाओं के लिए लॉन्च किया धांसू स्कीम, अब हर महीने मिलेगा पैसा

परिवहन विशेष न्यूज

LIC Scheme एलआईसी ने महिलाओं के लिए स्पेशल स्कीम शुरू किया है। इस स्कीम का नाम बीमा सखी (Bima Sakhi Yojana) है। इस स्कीम में महिलाओ को हर महीने पैसे मिलते हैं। हम आपको इस आर्टिकल में योजना के बारे में बताएंगे और उसके योग्यता के बारे में बताएंगे। यह योजना महिलाओं को स्किल डेवल्पमेंट करने और पैसे कमाने का मौका देगी।

नई दिल्ली। भारत जीवन बीमा निगम (LIC) ने हर वर्ग के लिए इंश्योरेंस पॉलिस लाई है। अब एईआईसी ने महिलाओं के लिए स्पेशल स्कीम निकाला है। इस स्कीम की खास बात है कि इसमें हर महीने महिलाओं को पैसे मिलते हैं। वैसे तो इस योजना की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है। हम आपको इस योजना के बारे में नीचे बताएंगे।

इस योजना का नाम बीमा सखी (Bima Sakhi Yojana) है। यह योजना महिलाओं को सशक्त बनाने के उद्देश्य से शुरू किया गया है।

क्या है बीमा सखी योजना (What is Bima Sakhi Yojana)

बीमा सखी योजना का लक्ष्य है कि एक साल के भीतर 100,000 बीमा सखि शामिल हो। इस योजना के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं बीमा एजेंट (Insurance Agent) बनेंगी। एलआईसी की बीमा सखी योजना जहां एक तरफ महिलाओं को कमाई का मौका दे रही है। वहीं, दूसरी तरफ यह इंश्योरेंस को लेकर जागरूकता बढ़ाने में मदद करेगी। इस योजना से भारत के वंचित क्षेत्रों में भी इंश्योरेंस की पहुंच बन जाएगी।

एलआईसी के इस योजना का लक्ष्य महिलाओं को सशक्त करने के साथ महिलाओ को रोजगार देना भी है। इसमें वह महिलएं शामिल हैं जिनकी आयु 18 से 70 साल की है और वह कम से कम 10वीं क्लास पास हैं। एलआईसी ने 1 साल में 100,000 बीमा सखियों और तीन सालों में 200,000 बीमा सखियों को सूचीबद्ध करने का लक्ष्य तय किया है।

क्या है स्कीम की खासियत

इस योजना में शामिल सखी को पॉलिसी बेचने पर कमीशन मिलेगा। इसके अलावा शुरुआत के तीन सालों में इसमें ए फिक्स्ड स्टाइपिंड मिलेगा।

एलआईसी महिलाओं को शुरुआत में 7,000 रुपये की सैलरी मिलेगी। पहले साल में हर महीने 7,000 रुपये मिलेगा फिर दूसरे साल में यह राशि 6,000 रुपये हो जाएगी। इसी तरह तीसरे साल में यह राशि 5,000 रुपये हो जाएगी। अगर कोई महिला टारगेट पूरा करती है तो उस एक्सट्रा कमीशन भी मिलेगा। योजना के शुरुआत में महिलाओं को तीन साल तक स्पेशल ट्रेनिंग और फाइनेंशियल एजुकेशन भी मिलेगा।

कैसे करें अप्लाई?

18 से 50 वर्ष की आयु वाली महिलाएं आवेदन कर सकती हैं।

इसमें आवेदन के लिए न्यूनतम 10वीं पास होना जरूरी है।

इस योजना में ग्रामीण महिलाओं को प्राथमिकता दी जाती है।

आपको बता दें कि एलआईसी एजेंटो और कर्मचारियो के रिश्तेदार अयोग्य नहीं है। एलआईसी के पोर्टल पर जाकर आसानी से आवेदन किया जा सकता है।

आज के लिए पेट्रोल-डीजल के नए रेट्स हुए जारी, टंकी फुल कराने से पहले चेक करें दाम

परिवहन विशेष न्यूज

तेल कंपनियों ने हर दिन की तरह आज के लिए भी पेट्रोल-डीजल के दाम जारी कर दिये हैं। रोजाना इनके दाम अपडेट होते हैं। ऐसे में गाड़ीचालक को लेटेस्ट रेट चेक करने के बाद ही तेल भरवाना चाहिए। बता दें कि सभी शहरों में इनके दाम अलग होते हैं। आइए जानते हैं कि 15 दिसंबर 2024 को आप सभी के शहरों में पेट्रोल-डीजल के दाम क्या हैं।

नई दिल्ली। देश की मुख्य सरकारी तेल कंपनियां हर दिन सुबह 6 बजे पेट्रोल-डीजल के दाम जारी करते हैं। वैसे तो तेल के दाम क्रूड ऑयल की कीमतों के आधार पर तय होते हैं। वर्तमान में ग्लोबल मार्केट में कच्चे तेल की कीमतों में उतार-चढ़ाव देखने को मिला है।

तेल के दाम तय करने में टैक्स की भी अहम भूमिका है। दरअसल, पेट्रोल-डीजल जीएसटी (GST) के दायरे में नहीं आता है। इस पर राज्य सरकार द्वारा वैट (Value Added Tax) लगाया जाता है। वैट की दर हर राज्य में अलग होती है। यही कारण है कि सभी शहरों में इनके दाम भी अलग होते हैं।

आइए इंडियन ऑयल की ऑफिशियल वेबसाइट के जरिए जानते हैं कि महानगर और बाकी शहरों में पेट्रोल-डीजल के दाम (Petrol-Diesel Price 15 December 2024) क्या है?

महानगरों में पेट्रोल-डीजल के दाम

दिल्ली में एक लीटर पेट्रोल की कीमत 94.72 रुपये और डीजल की कीमत 87.62 रुपये प्रति लीटर है।

मुंबई में पेट्रोल की कीमत 103.44 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 89.97 रुपये प्रति लीटर है।

कोलकाता में पेट्रोल की कीमत 104.95 रुपये प्रति लीटर और डीजल 91.76 रुपये प्रति लीटर है।

चेन्नई में पेट्रोल की कीमत 100.75 रुपये प्रति लीटर और डीजल की कीमत 92.34 रुपये प्रति लीटर है।

अन्य बड़े शहरों में पेट्रोल-डीजल के दाम

नोएडाः पेट्रोल 94.83 रुपये प्रति लीटर और डीजल 87.96 रुपये प्रति लीटर

गुरुग्रामः पेट्रोल 95.19 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.05 रुपये प्रति लीटर

बेंगलुरुः पेट्रोल 102.86 रुपये प्रति लीटर और डीजल 88.94 रुपये प्रति लीटर

चंडीगढ़ः पेट्रोल 94.24 रुपये प्रति लीटर और डीजल 82.40 रुपये प्रति लीटर

हैदराबादः पेट्रोल 107.41 रुपये प्रति लीटर और डीजल 95.65 रुपये प्रति लीटर

जयपुरः पेट्रोल 104.88 रुपये प्रति लीटर और डीजल 90.36 रुपये प्रति लीटर

पटनाः पेट्रोल 105.18 रुपये प्रति लीटर और डीजल 92.04 रुपये प्रति लीटर

कैसे चेक करें लेटेस्ट रेट

गाड़ीचालक तेल कंपनियों की वेबसाइट और ऐप्स पर जाकर लेटेस्ट रेट चेक कर सकते हैं। इसके अलावा वह मैसेज के माध्यम से भी ताजा कीमत जान सकते हैं। इसके लिए उन्हें RSP स्पेस पेट्रोल पंप का डीलर कोड टाइप कर 92249 92249 पर भेजना होगा। इसके बाद उन्हें रिप्लाई में लेटेस्ट रेट पता चल जाएगा।

डिविडेंड किंग देने वाला है शानदार मौका, साल के चौथे लाभांश पर जल्द लगेगी मुहर

Vedanta Dividend डिविडेंड भी कमाई का शानदार मौका है। वेदांता इस साल का चौथा डिविडेंड देने पर विचार कर रही है। वेदांता को डिविडेंड किंग माना जाता है। पिछले एक साल में डिविडेंड के शेयर ने 100 फीसदी से ज्यादा का रिटर्न दिया है। चौथे डिविडेंड की घोषणा से पहले कंपनी ने रिकॉर्ड डेट का एलान कर दिया है। पढ़ें पूरी खबर...

नई दिल्ली। डिविडेंड कमाई का शानदार मौका आने वाला है। दरअसल, मार्केट के डिविडेंड किंग के नाम से जानने वाली कंपनी वेदांता लिमिटेड (Vedanta Ltd) साल का चौथा डिविडेंड देने वाली है। अगर कंपनी की परफॉर्मेंस की बात करें तो पिछले एक साल में कंपनी ने निवेशकों को काफी शानदार रिटर्न दिया है। कंपनी ने लाभांश के लिए रिकॉर्ड डेट की जानकारी दे दी है।

कब होगा लाभांश का एलान

कंपनी के बोर्ड मीटिंग 16 दिसंबर 2024 (सोमवार) को होगी। इस बैठक में लाभांश के साथ कई और चीजों पर फैसला ले सकती हैं। अगर बोर्ड मीटिंग में डिविडेंड को मंजूरी मिलती है, तो ज्लद ही निवेशक को डिविडेंड मिल जाएगा।

क्या है रिकॉर्ड डेट 2024

सोमवार को वेदांता के शेयर में फोकस में रहेंगे। एक्सपर्ट के अनुसार सोमवार को कंपनी के शेयर में तेजी आ सकती है। अगर डिविडेंड को मंजूरी मिलती है तो रिकॉर्ड डेट 24 दिसंबर 2024 होगा। जी हां, कंपनी ने 24 दिसंबर रिकॉर्ड डेट तय किया है। रिकॉर्ड डेट के अनुसार जिन शेयरधारकों के डीमैट अकाउंट (Demat Account) में 24 दिसंबर 2024 तक कंपनी के शेयर होंगे, उन्हें ही डिविडेंड मिलेगा।

शेयर ने दिया मल्टीबैगर रिटर्न

वेदांता के शेयर ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। कंपनी के शेयर ने पिछले एक साल में 100 फीसदी से ज्यादा का रिटर्न दिया है। वेदांता का मार्केट कैपिटलाइजेशन (Vedanta M-Cap) लगभग 1.93 लाख करोड़ रुपये है। मार्केट एक्सपर्ट ने वेदांता शेयर प्राइस का टारगेट (Vedanta Price Target) '600 रुपये प्रति शेयर' और 'रेटिंग' खरीद किया है।

टॉप-10 में से 5 कंपनियों के एम-कैप में हुई बढ़त, भारतीय एयरटेल रहा टॉप गेनर

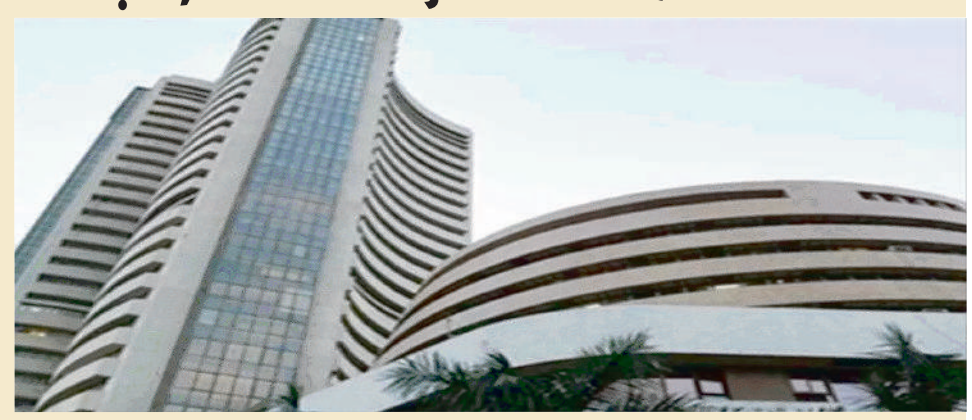

शेयर बाजार के टॉप फर्म का खिताब रिलायंस इंडस्ट्रीज के पास है। पिछले सप्ताह भले ही रिलायंस इंडस्ट्रीज के एम-कैप में गिरावट आई है। इसके बावजूद वैल्यूएशन के हिसाब से टॉप फर्म है। पिछले हफ्ते शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव भरा कारोबार रहा। इस उतार-चढ़ाव भरे कारोबार के बीच टॉप-5 कंपनियों के एम-कैप में गिरावट आई है। इस आर्टिकल में जानते हैं कि बाजार के टॉप-10 फर्म की रैंकिंग क्या है।

नई दिल्ली। पिछले सप्ताह शेयर बाजार में जारी उतार-चढ़ाव भरे कारोबार के बीच स्टॉक मार्केट की टॉप-10 कंपनियों में से 5 फर्म के एम-कैप में शानदार तेजी आई। न्यूज एजेंसी पीटीआई के अनुसार इन पांच फर्म के एम-कैप 1,13,117.17 करोड़ (1.13 लाख करोड़) रुपये बढ़े हैं। सबसे ज्यादा बढ़त भारती एयरटेल के एम-कैप में हुआ है।

बढ़ गया इनका एम-कैप

- पिछले सप्ताह भारती एयरटेल का बाजार मूल्यांकन 47,836.6 करोड़ रुपये बढ़कर 9,57,842.40 करोड़ रुपये हो गया।
- इन्फोसिस का बाजार मूल्यांकन 31,826.97 करोड़ रुपये चढ़कर 8,30,387.10 करोड़ रुपये हो गया।
- एचडीएफसी बैंक का एम-कैप 11,887.78 करोड़ रुपये बढ़कर 14,31,158.06 करोड़ रुपये और आईसीआईसीआई बैंक का मार्केट कैपिटलाइजेशन 11,760.8 करोड़ रुपये की बढ़त के साथ 9,49,306.37 करोड़ रुपये हो गया।
- टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 9,805.02 करोड़ रुपये बढ़कर 16,18,587.63 करोड़ रुपये हो गया।

घट गए इन कंपनियों के एम-कैप

- रिलायंस इंडस्ट्रीज का एमकैप 52,031.98 करोड़ रुपये घटकर 17,23,144.70 करोड़ रुपये रह गया।
- एलआईसी का बाजार मूल्यांकन 32,067.73 करोड़ रुपये घटकर 5,89,869.29 करोड़ रुपये हो गया है। हिंदुस्तान यूनिलीवर का बाजार पूंजीकरण 22,250.63 करोड़ रुपये कम होकर 5,61,423.08 करोड़ रुपये रह गया।
- भारतीय स्टेट बैंक का एमकैप 2,052.66 करोड़ रुपये की गिरावट के साथ 7,69,034.51 करोड़ रुपये हो गया।
- आईटीसी का मार्केट कैपिटलाइजेशन 1,376.19 करोड़ रुपये कम होकर 5,88,195.82 करोड़ रुपये रह गया।

टॉप-10 फर्म की रैंकिंग

इंडियन स्टॉक मार्केट में रिलायंस इंडस्ट्रीज सबसे मूल्यवान कंपनी रही। इसके बाद टीसीएस, एचडीएफसी बैंक, भारती एयरटेल, आईसीआईसीआई बैंक, इन्फोसिस, भारतीय स्टेट बैंक, एलआईसी, आईटीसी और हिंदुस्तान यूनिलीवर आती हैं।

भारत की तिजोरी खाली कर रहा चीन

संजय बाटला

नई दिल्ली। भारत सरकार द्वारा चीन से व्यापार नहीं करने की बात के साथ 2024 के वित्त वर्ष में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 118.4 अरब डॉलर का रहा है.

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद को लेकर देश में अक्सर आपने बड़ी चर्चा होती सुनते रहते हैं हम सभी। सोशल मीडिया पर आए दिन चीन के सामानों का विरोध भी दर्ज कराया जाता है लेकिन, जब आप असली आंकड़ों पर नजर डाले यह अवश्य आपको हैरान कर देंगे। खासतौर से चीन से भारत द्वारा मंगाए गए सामानों का आंकड़ा साल 2023 में अमेरिका भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक सहयोगी था लेकिन, साल 2024 में यह दर्जा चीन ने हासिल कर लिया है। व्यापार को लेकर मई 2024 में ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने जो आंकड़े जारी किए थे उनके अनुसार, 2024 के वित्त वर्ष में भारत और चीन के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 118.4 अरब डॉलर का रहा है।

वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, मौजूदा वित्तीय वर्ष (2024-25) में अप्रैल से लेकर अगस्त तक अमेरिका मामूली अंतर से व्यापार के मामले में चीन से आगे निकल गया और शीर्ष पर है। अमेरिका और भारत के बीच इस समय में कुल 53 अरब डॉलर का व्यापार हुआ, जबकि भारत-चीन के बीच 52.43 अरब डॉलर का व्यापार हुआ।

अब आपको बताते है चीन ने भारत से कितना पैसा कमाया:- मौजूदा वित्तीय वर्ष (2024-25) में अप्रैल से लेकर अगस्त तक चीन ने भारत में 46.6 अरब डॉलर का सामान भेजा है और भारत ने चीन को 5.7 अरब डॉलर का सामान सिर्फ भेजा जो आयात का सिर्फ 8 फीसदी है। वहीं, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार, 2023-24 में चीन से भारत का आयात 101 अरब डॉलर रहा।

पिछले पांच वर्षों का आंकड़ा:- रिपोर्ट के अनुसार,

साल 2019 की बात करें तो इस बीच भारत-चीन के बीच लगभग 82 अरब डॉलर का व्यापार हुआ। इसमें आयात 65 अरब डॉलर का था और निर्यात 16 अरब डॉलर का था।

साल 2020 की बात करें तो इस साल दोनों देशों के बीच लगभग 86.5 अरब डॉलर का व्यापार हुआ इसमें आयात 65 अरब डॉलर से अधिक था और निर्यात 21अरब डॉलर था।

साल 2021 की बात करें तो इस साल भारत-चीन के बीच 115 अरब डॉलर का व्यापार हुआ इस दौरान आयात 94.5 अरब डॉलर तक जा पहुंचा और निर्यात 21 अरब डॉलर रहा।

साल 2022 में यह आंकड़ा 113 अरब डॉलर रहा जिसमें आयात 98.5 अरब डॉलर जा पहुंचा और इस साल निर्यात में 28 फीसदी की भारी गिरावट देखी गई।

साल 2023 की बात करें तो इस साल दोनों देशों के बीच 118 अरब डॉलर का व्यापार हुआ इसमें आयात 101 अरब डॉलर रहा और निर्यात सिर्फ 16.6 अरब डॉलर।

अब आप स्वयं समझे की सोशल मीडिया पर आए दिन चीन के सामानों का विरोध सरकार और राजनीतिक पार्टियों द्वारा दर्ज करवाने के बाद भी चीन से व्यापार खास तौर से आयात कैसे और कितने प्रतिशत बड़े जा रहा है और कैसे भारत में चीन का सामान आ रहा है ?

लोक अदालत में कोई हारता जीतता नहीं :पीडीजे

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड, झारखंड

सरायकेला। सरायकेला खरसावां जिला व्यवहार न्यायालय एवं.चांडिल अनुमंडल न्यायालय में जिला विधिक सेवा प्राधिकार की तरफ से देश भर के साथ लोक अदालत का सफल आयोजन हुआ । जहां सरायकेला में 6179 मामले निष्पादित हुए वहीं 238 मामले चांडिल न्यायालय में सुलह हुए तथा करोड़ों से अधिक राजस्व वसुली गयी । सरायकेला व्यवहार न्यायालय में पी डी जे उमा शंकर सिंह ने कार्यक्रम का दीप जलाकर श्री गणेश किया । उन्होंने अपने संबोधन में महत्वपूर्ण वात कही । उन्होंने बताया कि सुलह हो जाने से कोई जीतता या हारता नहीं वल्कि न्यायालय खर्च मानसिक परेशानी से बचत होती है । इस जिले में आठ बैंचें का गठन किया गया ।जहां 6179 मामले निष्पादित हुए, इनमें 571 न्यायालय में चल रहे थे ।प्री एक्सन प्रटोकल के तहत इस आयोजन में 5608 मामलों का निष्पादन हुए, जो इस आयोजन के उद्देश्य पर चार चांद लगाते है । सरायकेला खरसावां व्यवहार न्यायालय मे 1.13 करोड़ राजस्व रूपए वसूल हुए । उद्घाटन मौके पर न्यायाधीश वीरेश कुमार, एडीजे प्रथम इंसान मोईस , सीजेएम कविताजली टप्पो, जे एस फ सी श्रीमती अनामिका किस्कु , जिला विधिक सेवाप्रधिकार सचिव तौसीफ मेराज ,एस डी जे एम आशिष अग्रवाल आदि थे जबकी चांडिल में अपर जिला सत्र न्यायाधीश सचिंद्रनाथ सिन्हा , एस सी जे एम रवि प्रकाश तिवारी, एस डी जे एम अमीत खन्ना उपस्थित थे ।

कलम बहुत बोलती है...

यह कलम भी बहुत बोलती है,
शब्दों से सभी को टटोलती है।
ये राज दिलों के खोल देती है,
अंतस मन को भी टटोलती है!
सबके हृदय को झकझोरती है।

यह कलम भी बहुत बोलती है,
शब्दों से सभी को टटोलती है।
नहीं होता इसका कोई भी कद,
लिखने में ही रहती हरदम रत!
ना होती कोई हद ये है अनहद।

यह कलम भी बहुत बोलती है,
शब्दों से सभी को टटोलती है।
अब कागज की जरूरत नहीं,
*स्वरदूत हो गया सबका स्वामी!
बस यही है इसकी बड़ी खामी।

यह कलम भी बहुत बोलती है,
शब्दों से सभी को टटोलती है।
कलम की टंकार गूँज लगातार,
यूँ जब कभी पकड़ती रफ्तार !
झनझनाती सबके दिलों के तार।
(स्वरदूत यानि मोबाइल)

संजय एम तराणेकर

संसदीय गरिमा पर अविश्वास: (राज्यसभा के सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव नोटिस।)

राज्यसभा में सभापति के खिलाफ विपक्ष खेमे ने अविश्वास प्रस्ताव लाने का नोटिस दिया है। भारतीय संसद के इतिहास में यह पहला मौका होगा, जहां राज्यसभा में किसी सभापति के खिलाफ अविश्वास का नोटिस आया हो। दरअसल, यह मौका इसलिए सामने आया, क्योंकि सभापति के सदन में रुख से सभी विपक्षी दल नाखुश थे। विपक्ष का आरोप है कि सभापति हमेशा सत्तारूढ़ खेमे का पक्ष लेते हैं और विपक्ष की आवाज दबाते हैं। विपक्ष आसन को निष्पक्ष देखना चाहता है, लेकिन पिछली लोकसभा के बाद जब 18वीं लोकसभा में भी राज्यसभा में चीजें नहीं बदलीं तो पिछले सत्र में प्रस्ताव लाने की चर्चा चलाकर विपक्ष ने कोई कड़ा कदम उठाने का संदेश देने की कोशिश की।

-प्रियंका 'सौरभ'

संसद में पीठासीन अधिकारियों की भूमिका तटस्थता बनाए रखने और यह सुनिश्चित करने के लिए महत्त्वपूर्ण है कि संसदीय कार्यवाही निष्पक्ष और निष्पक्ष तरीके से संचालित हो। हाल ही में, विपक्ष ने राज्यसभा के सभापति के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव उठाया, जिसमें उन पर पक्षपात करने का आरोप लगाया गया। यह स्थिति लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की अखंडता के लिए प्रमुख नेतृत्व भूमिकाओं में निष्पक्षता बनाए रखने के महत्त्व को उजागर करती है। संसदीय कार्यवाही की तटस्थता बनाए रखने में संसद के पीठासीन अधिकारियों की भूमिका बहस में निष्पक्षता सुनिश्चित करना है। पीठासीन अधिकारियों से यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की जाती है कि सभी सांसदों को, चाहे वे किसी भी पार्टी से सम्बद्ध हों, बहस में भाग लेने के समान अवसर दिए जाएँ। निर्णयों में निष्पक्षता: अध्यक्ष द्वारा किए गए निर्णय पक्षपातपूर्ण झुकाव के बजाय संसदीय प्रक्रियाओं पर आधारित होने चाहिए। अध्यक्ष को सरकार और विपक्ष के बीच संघर्षों में मध्यस्थता करनी चाहिए, शिष्टाचार बनाए रखते हुए रचनात्मक संवाद के लिए जगह बनानी चाहिए। एक तटस्थ पीठासीन अधिकारी संसद की अखंडता और विश्वसनीयता सुनिश्चित करता है, लोकतांत्रिक बहस के लिए अनुकूल वातावरण को बढ़ावा देता है। यदि अध्यक्ष को तटस्थ माना जाता है, तो संसदीय प्रणाली में विश्वास मजबूत होता है, जिससे स्वस्थ लोकतांत्रिक चर्चाओं को बढ़ावा मिलता है, जैसा कि यू.के. जैसे परिपक्व लोकतंत्रों में देखा जाता है।

संसदीय संस्था की वैधता की रक्षा के लिए पीठासीन अधिकारी को हमेशा निष्पक्षता का प्रदर्शन करना चाहिए। यदि अध्यक्ष को पक्षपाती माना जाता है, तो इससे संसदीय कार्यवाही में विश्वास कम हो सकता है और विधायी प्रक्रिया में जनता का विश्वास कम हो सकता है। अध्यक्ष के कार्यों में पक्षपात की धारणा के परिणामस्वरूप जनता में यह धारणा बन सकती है कि संसद को एक पार्टी के हितों की सेवा के लिए हेरफेर किया जा रहा है। पक्षपातपूर्ण अध्यक्ष संसद के भीतर राजनीतिक विभाजन को बढ़ा सकता है, जिससे सरकार और विपक्ष के बीच संघर्ष बढ़ सकता है। ऐसे परिदृश्य में, सरकार और विपक्ष अध्यक्ष के निर्णयों को चुनौती देने के लिए चरम रणनीति का सहारा ले सकते हैं, जिससे संसद में अधिक शत्रुतापूर्ण और कम उत्पादक वातावरण बन सकता है। अध्यक्ष में कथित पक्षपात संसद की संस्था को ही कमजोर करता है, जो लोकतांत्रिक मूल्यों को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाता है। यदि अध्यक्ष पक्षपातपूर्ण है, तो संसद के भीतर जवाबदेही के तंत्र विफल हो सकते हैं, जिससे अनियंत्रित कार्यकारी शक्ति की अनुमति मिलती है। यदि अध्यक्ष को किसी एक राजनीतिक दल के साथ गठबंधन करते हुए देखा जाता है, तो इससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया और राजनीतिक संस्थाओं के प्रति जनता का मोहभंग हो सकता है। पीठासीन अधिकारी की भूमिका के लिए स्पष्ट दिशा-निर्देश स्थापित करने से निर्णय लेने में निरंतरता और निष्पक्षता बनाए रखने में मदद मिलेगी। यू.के. संसद में, अध्यक्ष एक औपचारिक आचार संहिता का पालन करता है जो तटस्थता सुनिश्चित करता है, पक्षपात पर चिंताओं को दूर करने और संसदीय कार्यवाही में पारदर्शिता को बढ़ावा देने में मदद करता है।

पीठासीन अधिकारियों के लिए लंबे कार्यकाल सुनिश्चित करने से उन्हें अपनी नेतृत्व भूमिकाओं में विश्वास, स्थिरता और तटस्थता बनाने की अनुमति मिल सकती है। जर्मन बुंडेस्टैग अध्यक्ष का निश्चित कार्यकाल दीर्घकालिक नेतृत्व स्थिरता सुनिश्चित करता है, राजनीतिक उथल-पुथल के दौरान भी पक्षपातपूर्ण निर्णय लेने की धारणा को कम करता है। अध्यक्ष के निर्णयों की समीक्षा करने के लिए स्वतंत्र निरीक्षण तंत्र शुरू करने से अधिक जवाबदेही सुनिश्चित हो सकती है और पक्षपातपूर्ण कार्रवाइयों को रोका जा सकता है। पीठासीन अधिकारियों के लिए नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम उन्हें संसदीय कार्यवाही की जटिलताओं को निष्पक्ष रूप से संभालने के लिए आवश्यक कौशल से लैस कर सकते हैं। निष्पक्ष निर्णय लेने और संघर्ष समाधान पर केंद्रित नेतृत्व प्रशिक्षण अध्यक्ष को तटस्थता बनाए रखते हुए राजनीतिक दबावों को बेहतर ढंग से नेविगेट करने में मदद कर सकता है। संसदीय समितियों और चर्चाओं में द्विदलीय सहयोग को बढ़ावा देने से निर्णय लेने के लिए अधिक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा मिल सकता है। संसदीय समितियों के भीतर अंतर-दलीय संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करने से मतभेदों को दूर करने में मदद मिल सकती है और यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि सरकार और विपक्ष के बीच मध्यस्थता में अध्यक्ष तटस्थ रहें।

संसदीय कार्यवाही की तटस्थता सुनिश्चित करने में संसद के पीठासीन अधिकारियों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। लोकतांत्रिक संस्थाओं की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए, अध्यक्ष के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना, द्विदलीय सहयोग को बढ़ावा देना और स्पष्ट दिशा-निर्देशों और लंबे कार्यकाल के माध्यम से निष्पक्ष नेतृत्व सुनिश्चित करना आवश्यक है। दरअसल, इसके जरिए विपक्ष कहीं न कहीं संसद के दोनों सदनों में आसन को एक संदेश देना चाह रहा है कि अगर आसन निष्पक्ष नहीं दिखता है तो विपक्ष अपने संवैधानिक अधिकारों को इस्तेमाल करने में नहीं हिचकिचाएगा। पिछले सत्र में लोकसभा स्पीकर को लेकर भी राजनीतिक गलियारे में ऐसी चर्चा थी।

गौ माता को राष्ट्र माता का दर्जा दिलाने हेतु जन जागरण अभियान को आगे बढ़ाते हुए रविवार, 15 दिसंबर को सुबह 6 बजे से 5के रन फॉर गौ माता मैराथन का कार्यक्रम सम्पन्न

हैदराबाद। सिकंदराबाद स्थित आज यहाँ श्री दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर ट्रस्ट और सर्वदलीय गौरक्षा मंच, देवभूमि उत्तराखंड सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित गौ मैराथन को मुख्य अतिथि के रूप में गौभक्त श्री राम भाटी, श्री मोहन चौधरी श्री मंगलाराम पंवार, श्री हुकमाराम सानपुरा, श्री सोनाराम तिलायचा, श्री विकास शर्मा, श्री राम गोपाल चौधरी आदि अतिथियों के साथ 10 महीने की बालिका ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

आयोजकों की ओर से चेयरमैन जयपाल सिंह नयाल सनातनी ने बताया कि प्रातः काल 5 बजे ही सामूहिक रूप से सभी गौभक्तों ने मिलकर गौमाता और नंदी भगवान की पूजा अर्चना, गौ आरती की, गणेश बंदना के बाद 5.30 बजे सूक्ष्म व्यायाम और मुख्य अतिथि द्वारा संबोधन हुआ । 6 बजे सभी ने सामूहिक रूप से राष्ट्र गान वंदन किया और 6.05 बजे 5 के रन प्रारंभ हुई । दौड़ je लिए लिए 4 ग्रुप बनाए गए हैं। छोटे बच्चों को गौसेवा के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से 10 महीने की बालिका वामिका और 3 साल अथर्व अग्रवाल, 4 साल की रश्मिका को भी विजेता पुरुस्कार स्वरुप गौमाता के मूर्ति भेट किए गए ।

लड़कों में ..

प्रथम पुरस्कार= अरहान शर्मा
द्वितीय पुरस्कार=कुशाल गहलोत
तृतीयपुरस्कार=कमलेश चौधरी
महिलाओं में
प्रथम=स्वाति मदाल
द्वितीय=विमला परिहार
तृतीय=मीना बिष्ट
पुरुषों में
प्रथम=कमलेश पुरोहित
द्वितीय=सुरेश जाट
तृतीय=भरत राम
बच्चे
1.वामिका
2.अथर्व अग्रवाल
3.रश्मिका उनियाल

वरिष्ठ नागरिक महिला

1.श्रीमती. बरदे देवी जी 60y
2.श्रीमती मिथलेश पैनोली जी 62y
3 श्रीमती बीरा नेगी जी 56y

वरिष्ठ नागरिक पुरुष

1.सुब्बारायुडु जी 78 y
2.रोशन सिंह नेगी जी 75 y
3. दौलत सिंह रावत जी 73 y

को अतिथियों द्वारा सम्मानित किया गया ।इसके अलावा सबसे अधिक उम्र के स्त्री-पुरुष और सबसे कम उम्र के बच्चे को भी सम्मानित किया । प्रतिभागियों को मेडल, भागीदारी प्रमाण- पत्र दिया। अतिथि सी डी चावन, राम गोपाल चौधरी, राम भाटी, शांति लाल सुथार, मंगलाराम पंवार, हुकमाराम सानपुरा, कालुराम काग, प्रभुराम परिहारिया, तेजाराम परिहार, भोलाराम पंवार, केसाराम काग, सोनाराम तिलायचा, विकास शर्मा, तुलसाराम सिन्दडॉ, राजेश परिहार, राकेश चोयल, ओमाराम चौधरी, परमेश्वर वैष्ण, कैलाश प्रजापत आदि अनेक गौशालाओं से जुड़े पदाधिकारियों ने भी भाग लिया । इस अवसर पर 8 बजे से सभी के लिए जलपान की सुंदर व्यवस्था की गई थी ।

मंच संचालन मनोज पैनोली, दीपा पैनोली ने किया ।

कार्यक्रम का पूरा कवरेज पत्रकार जगदीश सीरवी ने किया। कार्यक्रम संयोजक (मंडल कोर कमेटी) के पदाधिकारियों में दीप्ति रावत, प्रेमा नयाल, कविता नेगी, पुष्पा भद्री, दीपा शर्मा, कमल पंत, उषा अग्रवाल, वीरा रेड्डी, बलवीर सिंह रावत, योगेश अग्रवाल, मनोज प्रभाकर पैंलली, ठाकुर जितेंद्र सिंह राणा, सुभाषचंद्र पेटवाल, पवन कुमार, राजेंद्र सिंह रावत, महेश्वरी बिष्ट और आरोही रावत, कांता देवी, सांता देवी, बीरा नेगी, हेमा जोशी, आर डी जोशी, हेमलता, सारदा , रामा पेटवाल, गीता, किरन आदि ने अपनी प्रमुख सेवा दी ।

दक्षिणेश्वर केदारनाथ मंदिर ट्रस्ट चेयरमैन जयपाल सिंह नयाल द्वारा सभी गौभक्त का गौशालाओं के पदाधिकारियों का सामाजिक संगठनों का और पुलिस प्रशासन तथा मीडिया बंधुओं का धन्यवाद ज्ञापित किया है।

मधुपटना गली में 'मो बस' जल गई

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर: कटक के मधुपटना स्ट्रीट पर 'मो बस' में आग लग गई। स्थानीय लोगों के मुताबिक हादसे के वक्त बस में कोई यात्री नहीं था। केवल 6 महीने में कटक में मो बस में आग लगने की यह दूसरी घटना है। बस में कितने यात्री सवार थे इसका पता नहीं चल पाया है।बस शनिवार रात करीब 8 बजे भुवनेश्वर से कटक लौट रही थी।मधुपटना गली में पहुंचते ही आग लग गयी। यह बस डीजल से चलने वाली बस है। बस में आग लगी देख लोग डर गए। स्थानीय पुलिस ने तुरंत फायर ब्रिगेड को सूचना दी। फायर ब्रिगेड ने मौके पर पहुंचकर आग बुझाई। लेकिन उससे पहले ही बस पूरी तरह जल गई। बस में आग कैसे लगी इसका कारण पता नहीं चल पाया है।

जाकिर हुसैन की हालत बेहद गंभीर, ICU में चल रहा इलाज

जाकिर हुसैन की मैनेजर निर्मला बच्चानी ने बताया कि उन्हें ब्लड प्रेशर की समस्या के चलते उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हुसैन की मौत का दावा करने वाली खबरों के बीच उनकी मैनेजर ने प्रेट्र से पुष्टि की कि हुसैन का सैन फ्रांसिस्को अस्पताल में इलाज चल रहा है और उनकी मौत नहीं हुई है।

नईदिल्ली। पद्म विभूषण से सम्मानित प्रख्यात तबला वादक जाकिर हुसैन सैन फ्रांसिस्को के अस्पताल में भर्ती हैं। उनकी हालत गंभीर बनी हुई है। 73 वर्षीय जाकिर को दिल से जुड़ी दिक्कतों के चलते दो सप्ताह पहले अस्पताल में भर्ती कराया गया था। उनके मित्र और बांसुरी वादक राकेश चौरसिया ने रविवार को कहा कि सेहत बिगड़ने के बाद से उनका इलाज आईसीयू में चल रहा है।

सैन फ्रांसिस्को के अस्पताल में चल रहा इलाज

हुसैन की मैनेजर निर्मला बच्चानी ने बताया कि उन्हें ब्लड प्रेशर की समस्या के चलते उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। हुसैन की मौत का दावा करने वाली खबरों के बीच उनकी मैनेजर ने प्रेट्र से पुष्टि की कि हुसैन का सैन फ्रांसिस्को अस्पताल में इलाज चल रहा है और उनकी मौत नहीं हुई है।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023